इस्लाही ख़ुतबात

13

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी उस्मानी

इस्लाही ख़ुतबात

जिल्द - 13

तक्रीरें

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तकी साहिब उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान कासमी

प्रकाशक

फरीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई देहली-110002

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द- 13
तक़रीरें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	जून 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज नई देहली-110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

पेश लफ़्ज़

हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمد للّٰہ و کفیٰ وسلام علی عبادہ الذین اصطفیٰ، امابعد:

अपने बाज़ बुज़ुर्गों के इरशाद की तामील में नाचीज़ कई साल से जुमे के दिन अ़स्र के बाद जामा मस्जिद बैतुल मुकर्रम गुलशन इक़बाल कराची में अपने और सुनने वालों के फ़ायदे के लिए कुछ दीन की बातें किया करता है। इस मज्लिस में हर तब्क़ा-ए-ख़्याल के हज़रात और औ़रतें शरीक होते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अह्क़र को ज़ाती तौर पर भी इसका फ़ायदा होता है और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सुनने वाले भी फ़ायदा महसूस करते हैं। अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को हम सब की इस्लाह का ज़रिया बनाएँ। आमीन।

अह्क़र के ख़ुसूसी मददगार मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने कुछ मुद्दत से अह्क़र के उन बयानात को टेप रिकार्डर के ज़रिये महफ़ूज़ करके उनके कैसेट तैयार करने और उनको शाया करने का एहतिमाम किया, जिसके बारे में दोस्तों से मालूम हुआ कि अल्लाह के फ़ज़्ल से उनसे भी मुसलमानों को फ़ायदा पहुँच रहा है।

उन कैसेटों की तायदाद अब साढ़े चार सौ से ज़ायद हो गयी है। उन्हीं में से कुछ कैसेटों की तक़रीरें मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने लिख भी लीं और उनको छोटे छोटे रिसालों की शक्ल में शाया किया। अब वह उन तक़रीरों का मजमूआ़ "इस्लाही खुतबात" के नाम से शाया कर रहे हैं।

उनमें से बाज़ तक़रीरों पर नाचीज़ ने नज़रे-सानी भी की है, और

मौसूफ़ ने उन पर एक मुफ़ीद काम भी किया है, कि तक़रीरों में जो हदीसें आती हैं उनको असल किताबों से निकाल करके उनके हवाले भी दर्ज कर दिए हैं, और इस तरह उनका फ़ायदा और ज़्यादा बढ़ गया है।

इस किताब के मुताले (अध्ययन) के वक़्त यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि यह कोई बाक़ायदा तसनीफ़ नहीं है, बल्कि तक़रीरों का ख़ुलासा है जो कैसेटों की मदद से तैयार किया गया है। इसलिये इसका अन्दाज़ तहरीरी नहीं बल्कि ख़िताबी है। अगर किसी मुसलमान को इन बातों से फ़ायदा पहुँचे तो यह महज़ अल्लाह तआला का करम है, जिस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए। और अगर कोई बात ग़ैर मोहतात या ग़ैर-मुफ़ीद है तो वह यक़ीनन अहक़र की किसी ग़लती या कोताही की वजह से है। लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! इन बयानात का मक़सद तक़रीर बराय तक़रीर नहीं, बल्कि सब से पहले अपने आपको और फिर सुनने वालों को अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह करना है।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से इन ख़ुतबात को ख़ुद अहक़र की और तमाम पढ़ने वालों की इस्लाह (सुधार) का ज़रिया बनायें, और ये हम सब के लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत साबित हों। अल्लाह तआला से यह दुआ भी है कि वह इन ख़ुतबात के मुरत्तिब और नाशिर (प्रकाशक) को भी इस ख़िदमत का बेहतरीन सिला अता फ़रमाएँ। आमीन।

मुहम्मद तक़ी उस्मानी
दारुल उलूम कराची 14

प्रकाशक की ओर से

بسم الله الرحمٰن الرحيم

अल्हम्दु लिल्लाह "इस्लाही ख़ुतबात" की तेरहवीं जिल्द आप तक पहुँचाने की हम सआदत (सौभाग्य) हासिल कर रहे हैं। अलबत्ता यह जिल्द दूसरी जिल्दों से कुछ अलग है। इसलिए कि यह जिल्द उन ख़ुतबात (तक़रीरों) पर मुश्तमिल है जो शेख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब ने जुमा की नमाज़ से पहले जामा मस्जिद बैतुल-मुकर्रम, गुलशन इक़बाल कराची में दिये। तक़रीबन दो साल से हज़रत मौलाना मद्द ज़िल्लहुम् अपने ख़ुतबात में मस्नून दुआओं की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) फ़रमा रहे थे। हज़रत मौलाना की दिली ख़्वाहिश थी कि मस्नून दुआओं की यह तशरीह अलग एक जिल्द में एकत्र होकर आ जाये। अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाह तआला ने हज़रत मौलाना की दिली ख़्वाहिश (इच्छा) पूरी फ़रमा दी। अब यह मस्नून दुआओं की तशरीह का बेहतरीन गुलदस्ता आपके सामने है। अल्लाह तआला हम सबको इस गुलदस्ते से फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

......प्रकाशक

ख़ुतबात की मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(7) वुज़ू के दौरान हर अंग को धोने की अलग दुआ

(10) मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
	(13) सुबह के वक़्त पढ़ने की दुआएँ	

(21) मुसीबत के वक़्त की दुआ

(22) सोते वक़्त की दुआएँ और वज़ीफ़े

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मस्नून दुआओं की अहमियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ.

(سورۃ البقرۃ آیت ۱۸۶)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँगने का तरीक़ा सिखाया

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस उम्मत पर यह बड़ा एहसान है कि आपने क़दम-क़दम पर हमें अल्लाह तआला से दुआ माँगने का तरीक़ा सिखाया वरना हम लोग हैं कि मोहताज तो बेइन्तिहा हैं लेकिन इसके बावजूद माँगने का ढंग भी नहीं आता कि किस तरह माँगा जाए। हमें तो यह भी मालूम नहीं कि क्या माँगा जाए?

हर अमल के वक़्त अलग दुआ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें अल्लाह तआला से माँगने का तरीक़ा भी सिखा दिया कि अल्लाह तआला से इस तरह माँगो, और

सुबह से लेकर शाम तक इनसान जो बेशुमार आमाल अन्जाम देता है तक़रीबन हर अ़मल के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ़ तालीम फ़रमा दी।

सुबह को जब जागो तो यह दुआ़ पढ़ो, जब इस्तिन्जा के लिए बैतुलख़ला (शौचालय) में जाने लगो तो यह दुआ़ पढ़ो, जब बैतुलख़ला से बाहर निकलो तो यह दुआ़ पढ़ो, जब वुज़ू करना शुरू करो तो यह दुआ़ पढ़ो, वुज़ू के दौरान यह दुआ पढ़ते रहो, जब वुज़ू से फ़ारिग़ हो जाओ तो यह दुआ़ पढ़ो, जब वुज़ू करके नमाज़ के लिए मस्जिद जाओ तो मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ़ पढ़ो, जब बाज़ार में पहुँचो तो यह दुआ़ पढ़ो। यानी कि हर-हर मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ़एँ तालीम फ़रमाईं।

ज़िक्र की अधिकता का हुक्म

यह दर असल हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमारा ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला से जोड़ने के लिए एक अक्सीर नुस्ख़ा बता दिया। अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करने का बहुत ही आसान और बहुत मुख़्तसर रास्ता यह है कि इनसान हर वक़्त अल्लाह तआ़ला से कुछ न कुछ माँगता रहे। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने हमें यह हुक्म दिया कि:

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! अल्लाह को कसरत से (यानी ख़ूब ज़्यादा) याद करो। यानी अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करो।

(सूरः अल-अहज़ाब आयत 41)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किसी सहाबी ने पूछा कि या रसूलल्लाह! सबसे बेहतर अ़मल कौनसा है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमायाः

तर्जुमाः यह कि तुम्हारी ज़बान हर वक़्त अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से तर रहे।

यानी हर वक़्त तुम्हारी ज़बान पर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र किसी न किसी तरह जारी रहे। इसलिए कसरत से ज़िक्र करने का हुक्म अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन करीम में दिया और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम ने भी इसकी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई।

अल्लाह तआ़ला हमारे ज़िक्र से बेनियाज़ हैं

सोचने की बात यह है कि अल्लाह तआ़ला हमें कसरत से ज़िक्र करने का जो हुक्म दे रहे हैं, क्या इसलिए हुक्म दे रहे हैं कि "अल्लाह की पनाह" हमारे ज़िक्र करने से अल्लाह तआ़ला को फ़ायदा पहुँचता है? क्या अल्लांह तआ़ला को इससे मज़ा अता है कि मेरे बन्दे मेरा ज़िक्र कर रहे हैं? ज़ाहिर है कि जो शख़्स भी अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त (पहचान) रखता हो और अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखता हो वह इन बातों का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। अगर सारी कायनात मिलकर हर वक़्त और हर लम्हे अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करे तो उसकी बड़ाई वाली शान में, उसके जमाल व जलाल में और उसकी बड़ाई व महानता में ज़र्रा बराबर भी इज़ाफ़ा नहीं होता। और अगर सारी कायनात "अल्लाह की पनाह" यह फ़ैसला कर ले कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करना और अल्लाह तआ़ला को भुला दे और ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाए और बुराईयाँ करने लगे तो उसकी बड़ाई और शान में ज़र्रा बराबर भी कमी पैदा नहीं होगी। वह ज़ात बेनियाज़ (बेपरवाह और ग़ैर-मोहताज) है। वह तो "समद" है। वह हमारे और आपके ज़िक्र से भी बेनियाज़ है, हमारे सज्दों से भी बेनियाज़ है, हमारी तस्बीह से भी बेनियाज़ है, उसको हमारे ज़िक्र से कोई फ़ायदा नहीं।

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में हमारा फ़ायदा है

लेकिन हमें यह जो हुक्म दिया जा रहा है कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करो, इसमें हमारा ही फ़ायदा है। वह फ़ायदा यह है कि दुनिया में जितने जुर्म और जितनी बुराईयाँ होती हैं। उन सब बुराईयों की जड़ अल्लाह तआ़ला से ग़फ़लत है। जब अल्लाह तआ़ला की याद से इनसान ग़ाफ़िल हो जाता है और अल्लाह तआ़ला को भुला बैठता है, तब वह गुनाह पर गुनाह करता है। अगर अल्लाह तआ़ला की याद और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र दिल में हो और दिल में यह एहसास हो कि अल्लाह

तआ़ला के सामने पेश होना है तो फिर उससे गुनाह नहीं हो सकता।

ग़फ़लत से गुनाह का काम होता है

चोर जिस वक़्त चोरी करता है उस वक़्त वह अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल होता है। अगर वह ग़ाफ़िल न होता तो चोरी का काम न करता। बदकार जिस वक़्त बदकारी करता है उस वक़्त वह अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल होता है। अगर वह अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल न होता तो बदकारी का जुर्म न करता। इसी बात को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में बयान फ़रमायाः

यानी जिस वक़्त ज़िना करने वाला ज़िना करता है उस वक़्त वह मोमिन नहीं होता। मोमिन न होने का मतलब यह है कि उस वक़्त उसका ईमान हाज़िर नहीं होता। अल्लाह तआ़ला की याद मौजूद नहीं होती और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र मौजूद नहीं होता। इसी तरह जब चोर चोरी का काम करता है तो उस वक़्त वह मोमिन नहीं होता। (बुख़ारी शरीफ़)

यानी अल्लाह तआ़ला की याद और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र हाज़िर नहीं होता। अगर हाज़िर होता तो वह उस गुनाह को न करता। इसलिए सारी बुराईयाँ, सारी बद-अख़्लाक़ियाँ, सारे ज़ुल्म जो दुनिया में हो रहे हैं, उनका बुनियादी सबब अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होना है। इसलिए यह हुक्म दिया गया कि अल्लाह तआ़ला को कसरत से याद करो।

दुनिया की ज़रूरतों के साथ कैसे हर वक़्त ज़िक्र करे?

अब सवाल यह है कि इनसान अल्लाह तआ़ला को कसरत से कैसे याद करे? इसलिए कि वह तो हर वक़्त दुनियावी ताल्लुक़ात में और दुनिया के काम धन्धों में फंसा हुआ है। इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी सुन्नत से इसका आसान तरीक़ा बता दिया। वह यह कि जब कोई नई हालत पेश आए तो उस नई हालत में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करो और अल्लाह तआ़ला से दुआ करो। जब हर नई हालत में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करोगे तो आहिस्ता-आहिस्ता अल्लाह

तआ़ला की याद दिल में जड़ पकड़ जाएगी इन्शा-अल्लाह। यह हर वक़्त कोई न कोई दुआ़ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो सिखाई है, वह इसी लिए सिखाई है ताकि बन्दा हर वक़्त अल्लाह तआ़ला से माँगने का आ़दी बने और इसके नतीजे में अल्लाह की तरफ़ रुजू होने का आ़दी बने, और उसका ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला से मज़बूत हो जाए।

ये दुआ़एँ नबी पाक का मोजिज़ा हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की माँगी हुई दुआ़एँ उलूम की एक दुनिया है। अगर इनसान सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की माँगी हुई दुआ़ओं को ग़ौर से पढ़ ले तो नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सच्चा रसूल होने में कोई अदना-सा शुब्हा भी न रहे। ये दुआ़एँ अपने आप में नबी करीम की रिसालत की दलील हैं और आपका मोजिज़ा (चमत्कार और अल्लाह की तरफ़ से दी हुई निशानी) हैं, क्योंकि कोई भी इनसान अपनी ज़ाती अ़क्ल और ज़ाती सोच से ऐसी दुआ़एँ माँग ही नहीं सकता जैसी दुआ़एँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने माँगीं और अपनी उम्मत को वे दुआ़एँ तालीम फ़रमाईं। एक-एक दुआ़ ऐसी है कि इनसान उस दुआ़ पर क़ुरबान हो जाए।

ये दुआ़एँ अल्लाह की तरफ़ से दिल में डाली हुई हैं

इसमें कोई शुब्हा नहीं कि ये दुआ़एँ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इल्हाम हुई हैं। अल्लाह तआ़ला ने ही आपके दिल में इनको डाला कि मुझसे यूँ माँगो। अल्लाह तआ़ला की शान भी अ़जीब व ग़रीब है कि देने वाले और अ़ता करने वाले भी ख़ुद हैं और बन्दे को दुआ़ करने का तरीक़ा भी ख़ुद सिखाते हैं। यह दुआ़ सिखाने का तरीक़ा हमारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से चला आ रहा है।

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को दुआ़ की तालीम

जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से ग़लती हो गयी और गेहूँ के पेड़ से खा लिया तो बाद में अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि मुझे ऐसा

नहीं करना चाहिये था, लेकिन इस ग़लती की तलाफ़ी कैसे हो और इसकी माफ़ी कैसे माँगूँ? इसका तरीक़ा मालूम नहीं था। इसलिए अल्लाह तआला ने ही आपको इसका तरीक़ा सिखाया। फ़रमायाः

यानी आदम अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब से कुछ कलिमात सीखे और अल्लाह तआला ने आपको वे कलिमात सिखाए कि मुझसे यूँ कहो और इस तरह तौबा करो। (सूरः ब-क़रह् आयत 37)

वे कलिमात ये थेः

रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन। (सूरः आराफ़ आयत 23)

तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमने अपना बड़ा नुक़सान किया, और अगर आप हमारी मग़फ़िरत न करेंगे और हम पर रहम न करेंगे तो वाक़ई हमारा बड़ा नुक़सान हो जायेगा।

ख़ुद ही माफ़ करने वाले हैं, खुद ही तौबा क़बूल करने वाले हैं और खुद ही अलफ़ाज़ सिखा रहे हैं कि हमसे इन अलफ़ाज़ से तौबा करो तो हम तुम्हारी तौबा क़बूल कर लेंगे।

मस्नून दुआएँ दरख़्वास्त देने के फ़ार्म हैं

देखिए! जब किसी दफ़्तर में कोई दरख़्वास्त दी जाती है तो उस दरख़्वास्त के फ़ार्म छपे हुए होते हैं और यह ऐलान होता है कि इन फ़ार्मों पर दरख़्वास्त दी जाए। उन फ़ार्मों पर दरख़्वास्त मन्ज़ूर करने वाला खुद अलफ़ाज़ लिख देता है ताकि दरख़्वास्त देने वाले के लिए आसानी हो जाए और उसको मज़मून बनाने की तकलीफ़ न हो। बस उस फ़ार्म को पढ़कर दस्तख़त करके हमें दे दो। इसी तरह ये मस्नून दुआएँ दर असल अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करने के फ़ार्म हैं जो अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये हमें अ़ता फ़रमाए हैं कि जब हमसे माँगना हो तो इस तरह माँगो जिस तरह हमारे नबी और हमारे महबूब जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने माँगा है।

माँगने से अल्लाह तआला खुश होते हैं

अल्लाह तआला की बारगाह ही ऐसी बारगाह है कि उससे जितनी चीज़ें माँगी जाएँ और जितनी दुआएँ की जाएँ उस पर अल्लाह तआला नहीं उकताते और न ही नाराज़ होते हैं, बल्कि उस शख़्स से नाराज़ होते हैं जो अल्लाह तआला से नहीं माँगता। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स अल्लाह तआला से नहीं माँगता अल्लाह तआला उससे नाराज़ होते हैं।

दुनिया में कोई शख़्स कितना बड़ा सख़ी (दान करने वाला) क्यों न हो, अगर कोई शख़्स उससे सुबह के वक़्त माँगने चला जाए, फिर एक घन्टे के बाद माँगने चला जाए, फिर एक घन्टे के बाद दोबारा उसके घर पहुँच जाए तो वह सख़ी भी तंग आकर उससे यह कह देगा कि तूने मेरा पीछा ही पकड़ लिया, किसी तरह मेरी जान छोड़। लेकिन अल्लाह तआला का मामला अपने बन्दों के साथ यह है कि बन्दे उससे जितना माँगते हैं अल्लाह तआला उतने ही उनसे राज़ी और खुश होते हैं। छोटी से छोटी चीज़ भी अल्लाह तआला से माँगो और बड़ी से बड़ी चीज़ भी अल्लाह तआला से माँगो।

इसलिए ख़्याल हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मर्हलों और मौक़ों पर जो दुआएँ माँगी हैं, उन दुआओं की थोड़ी-सी तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) आप हज़रात के सामने अर्ज़ कर दिया करूँ ताकि वे तथ्य और हक़ीक़तें जो इन दुआओं में पोशीदा हैं, उनका कुछ हिस्सा हमारे सामने आ जाए। अल्लाह तआला हम सबको हर मौक़े की दुआएँ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

बैतुल्ख़ला में दाख़िल होने और निकलने की दुआ और उसकी हिक्मतें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ۔

(سورةالبقرة آیت ۱۸٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर जो दुआएँ तलक़ीन (सिखाई और तालीम) फ़रमाई हैं उन दुआ़ओं की थोड़ी-थोड़ी तशरीह (ख़ुलासा और व्याख्या) आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करना चाहता हूँ। उनमें से पहली दुआ़ जो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नींद से जागते वक़्त पढ़ना नक़ल की गयी है उसकी थोड़ी-सी तशरीह पिछले जुमे में अ़र्ज़ की थी। (अफ़सोस कि यह दुआ़ रिकार्ड होने से रह गयी, इस वजह से उसको लिखा न जा सका)।

बैतुलख़ला में जाने की दुआ

नींद से जागने के बाद आम तौर पर इनसान को अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए बैतुलख़ला (शौचालय) जाने की ज़रूरत होती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तालीम फ़रमाई है कि जब आदमी पाख़ाने के लिए बैतुलख़ला में जाने लगे तो दाख़िल होने से पहले यह दुआ पढ़े:

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल् ख़ुबुसि वल्-ख़बाइसि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं ख़बीस नर मख़्लूक़ात से और ख़बीस मादा मख़्लूक़ात से आपकी पनाह माँगता हूँ।

दीन इस्लाम का यह इम्तियाज़ (ख़ुसूसियत) है कि उन मौक़ों पर जहाँ पर इनसान ज़िक्र करते हुए शर्माता है, वहाँ के लिए भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कोई न कोई दुआ और कोई न कोई ज़िक्र करने की तालीम फ़रमाई है ताकि उस मौक़े पर भी इनसान का ताल्लुक़ अल्लाह तआला के साथ क़ायम रहे।

ख़बीस मख़्लूक़ात से पनाह माँगने की हिक्मत

इस दुआ में ख़बीस नर और ख़बीस मादा मख़्लूक़ात से पनाह माँगने की जो तलक़ीन फ़रमाई गई है इसकी हिक्मत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और हदीस में इरशाद फ़रमाई किः

तर्जुमाः वे स्थान जहाँ इनसान अपनी ज़रूरत पूरी करने (यानी पाख़ाना करने) के लिए जाता है, वे शयातीन की जगह होते हैं, क्योंकि शयातीन आम तौर पर गन्दे और नापाक स्थानों पर पाए जाते हैं, और चूँकि ये ख़ुद ख़बीस मख़्लूक़ है इसलिए गन्दी जगह को पसन्द करते हैं। इसलिए जब तुम इन गन्दे मुक़ामात पर जाओ तो अल्लाह की पनाह में आ जाओ क्योंकि वे शयातीन बहुत-सी बार तुम्हें नुक़सान पहुँचा सकते हैं। (अबू दाऊद शरीफ़)

शयातीन का जिस्मानी नुक़सान पहुँचाना

अब सवाल यह है कि ये शयातीन इनसान को क्या नुक़सान पहुँचा

सकते हैं? इसकी तफ़सील तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान नहीं फ़रमाई लेकिन दूसरी रिवायतों से मालूम यह होता है कि ये शयातीन जिस्मानी तौर पर भी इनसान को नुक़सान पहुँचा सकते हैं और रूहानी तौर भी नुकसान पहुँचा सकते हैं। जिस्मानी नुक़सान यह पहुँचा सकते हैं कि तुम्हें ज़ाहिरी गन्दगी में मुलव्वस कर दें और उसके नतीजे में तुम्हारे कपड़े और जिस्म नापाक हो जाएँ। और कभी-कभी जिस्मानी बीमारी में मुब्तला कर देते हैं। चुनाँचे तारीख़ में बाज़ ऐसे वाक़िआत पेश आए हैं कि शयातीन ने इन गन्दे स्थानों पर बाक़ायदा किसी इनसान पर हमला किया और आख़िरकार उसको मौत के मुँह में पहुँचा दिया।

बहरहाल! इन जगहों पर इस बात का अन्देशा है कि शयातीन की तरफ़ से इनसान की सेहत को नुक़सान पहुँचाने वाले काम हो जायें। बाज़ उलमा ने यह भी फ़रमाया है कि बीमारी के कीटाणु शयातीन ही का एक हिस्सा होते हैं इसलिए इन जगहों पर इनसान की सेहत को भी नुक़सान पहुँच सकता है और जिस्मानी नुक़सान भी पहुँच सकता है।

रूहानी नुकसान पहुँचाना

इसके अ़लावा शयातीन रूहानी नुक़सान भी पहुँचा सकते हैं। वह इस तरह कि इन स्थानों पर शयातीन मौजूद होते हैं और इनसान वहाँ पर सतर (ख़ास हिस्सा) खुला होने की हालत में होता है। उस वक़्त शैतान इनसान के दिल में बुरे ख़्यालात पैदा करता है। ग़लत क़िस्म के ख़्यालात, ग़लत क़िस्म की ख़्वाहिशें, ग़लत क़िस्म की आरज़ुएँ इनसान के दिल में पैदा करता है। इसलिए इन स्थानों पर इनसान के बुरे और गन्दे जज़्बात, बुरी ख़्वाहिशें ज़्यादा ज़ोर दिखाते हैं। अगर अल्लाह तआ़ला की पनाह शामिले हाल न हो तो इनसान इन जगहों पर गुनाह भी कर डालता है। इस वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह तालीम फ़रमाई कि बैतुलख़ला (लैट्रीन) में दाख़िल होने से पहले तुम अल्लाह तआ़ला की पनाह में आ जाओ और यह कहो कि ऐ अल्लाह! मैं ऐसी जगह पर जा रहा हूँ जहाँ शयातीन का जमावड़ा होगा और जहाँ शयातीन इनसान को बहकाने की कोशिश करते हैं, ऐ अल्लाह! मैं आपकी पनाह

माँगता हूँ ताकि उन शयातीन के शर (बुराई और नुक़सान) से महफ़ूज़ रहूँ।

इस दुआ का दूसरा फ़ायदा

इस दुआ के पढ़ने का एक फ़ायदा तो यह हुआ कि तुम अल्लाह तआ़ला की पनाह में आ गए। दूसरा फ़ायदा यह हुआ कि तुम्हारा ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला के साथ जुड़ गया। इस गन्दी हालत में भी इनसान अल्लाह तआ़ला के साथ जुड़ा हुआ है, उसके नतीजे में वह इन्शा-अल्लाह वहाँ पर गुनाहों और ग़लत कामों से महफ़ूज़ रहेगा।

बायाँ पाँव पहले दाख़िल करना

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी सुन्नत क़रार दिया कि जब आदमी बैतुल्ख़ला में दाख़िल हो तो पहले बायाँ पाँव अन्दर दाख़िल करे, और अन्दर दाख़िल होने से पहले वह दुआ़ पढ़ ले जो ऊपर गुज़री।

बैतुल्ख़ला से निकलते वक़्त की दुआ़

फिर इनसान जब फ़ारिग़ होकर बैतुलख़ला (शौचालय) से बाहर निकले तो उस वक़्त के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दूसरी दुआ़ इरशाद फ़रमाई और दूसरा अदब बयान फ़रमाया, वह यह कि जब बाहर निकलने लगो तो पहले दाहिना पाँव बाहर निकालो और फिर यह दुआ़ पढ़ो:

ग़ुफ़रान-क अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्निल्-अज़ा व आफ़ानी।

"ग़ुफ़रान-क" के मायने यह हैं कि ऐ अल्लाह! मैं आप से मग़फ़िरत और बख़्शिश माँगता हूँ। अब सवाल यह है कि किस चीज़ से मग़फ़िरत माँगता हूँ? इसलिए कि इस मौक़े पर बज़ाहिर कोई गुनाह तो किया नहीं। इसका जवाब यह है कि इस मौक़े पर दो बातों से मग़फ़िरत माँगता हूँ- एक इस बात से कि मैं उस वक़्त जिस हालत में था, हो सकता है कि मुझसे कोई ग़लत अ़मल हो गया हो, उससे मग़फ़िरत माँगता हूँ। दूसरी

बात यह है कि ऐ अल्लाह! आपने अपने फ़ज़्ल व करम से मुझ पर जितने इनामात फ़रमाए हैं मैं उन इनामों पर शुक्र का हक़ अदा नहीं कर पाया। अब एक नेमत और मुझे हासिल हो गई है।

जिस्म से गन्दगी का निकल जाना नेमत है

क्योंकि जिस्म से नजासत (गन्दगी) का निकल जाना यह अल्लाह तआला का इतना बड़ा इनाम है कि इनसान की ज़िन्दगी का दारोमदार इसी पर है। अब इस वक़्त ऐ अल्लाह! आपने जो यह नेमत अता फ़रमाई है, मैं इस नेमत के शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकता। इस पर मैं आप से पहले ही मग़फ़िरत माँगता हूँ। मग़फ़िरत माँगने के बाद यह दुआ फ़रमाईः

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्निल्-अज़ा व आ़फ़ानी।

यानी उस अल्लाह तआ़ला का शुक्र है जिसने मुझसे गन्दगी को दूर कर दिया और मुझे सुकून अ़ता फ़रमाया। अगर इस दुआ़ में ग़ौर करें तो यह नज़र आएगा कि इस मुख़्तसर दुआ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मायनों का बहुत बड़ी कायनात बयान फ़रमा दी है। इसके अ़लावा एक और रिवायत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दूसरी दुआ भी नक़ल की गयी है जिसमें इससे ज़्यादा तफ़सील है।

दूसरी दुआ़

वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब बैतुल्ख़ला (पाख़ाना करने की जगह) से वापस तशरीफ़ लाते तो यह दुआ़ पढ़तेः

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़ाक़नी लज़्ज़-तहू व अब्क़ा फ़िय्-य कुव्व-तहू। (कन्ज़ुल उम्माल)

इस दुआ़ में अ़जीब व ग़रीब अलफ़ाज़ हैं। ऐसे अलफ़ाज़ कहना पैग़म्बर के अ़लावा किसी और के बस की बात नहीं। इस दुआ़ का तर्जुमा यह है कि उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे इस खाने की लज़्ज़त अ़ता फ़रमाई और इस खाने में जो ताक़त देने वाले हिस्से थे और जो मेरे जिस्म को ताक़त दे सकते थे, वे हिस्से मेरे जिस्म में बाक़ी रखे और जो

हिस्से तकलीफ़ देने वाले और गन्दे थे वे मेरे जिस्म से दूर कर दिए। आप ग़ौर करें कि इनसान दिन-रात यह काम करता रहता है लेकिन इसके नेमत होने की तरफ़ ध्यान नहीं जाता।

ज़बान के ज़ायक़े के लिए खाते हैं

हम जब खाना खाते हैं तो हमारा मक़सद सिर्फ़ ज़बान का ज़ायक़ा और लज़्ज़त होती है। खाते वक़्त इस तरफ़ ध्यान नहीं होता कि यह खाना हमारे अन्दर जाकर क्या ख़राबी पैदा करेगा। इसलिए जिस चीज़ को खाने को दिल चाहा लस्टम-पस्टम खा लिया। रोटी भी खा ली। गोश्त भी खा लिया। चावल भी खा लिए। फल भी खा लिए। मीठी चीज़ भी खा ली। कभी चटख़ारेदार चीज़ भी खा ली। सब कुछ मुँह के अन्दर जा रहा है लेकिन कुछ पता नहीं कि यह सब कुछ अन्दर जाकर क्या गड़बड़ी पैदा करेगा। अब अगर आप इन चीज़ों का तजज़िया (विशलेषण / हिस्से-बख़रे) करें जिनको आप बग़ैर सोचे-समझे खाते रहे हैं तो यह नज़र आएगा कि किसी चीज़ का जिस्म पर कोई असर है और किसी चीज़ का जिस्म पर कोई असर है।

जिस्म के अन्दर आटोमैटिक मशीन लगी हुई है

वजह इसकी यह है कि अल्लाह तआला ने हर इनसान के जिस्म में आटोमैटिक मशीन लगाई हुई है। वह मशीन तुम्हारे खाने के तमाम हिस्सा को अलग-अलग करती है। जो तत्व जिस्म के लिए नुक़सानदेह हैं उनको अलग करती है और जो तत्व फ़ायदेमन्द हैं उनको अलग करती है। अगर यह मशीन ख़राब हो जाए तो तुम्हारे लिए आज हज़ारों रुपया ख़र्च करने के बावजूद और लिबार्ट्रियों में टेस्ट कराने के बावजूद यह फ़ैसला कराना आसान न होता कि कौनसे तत्व तुम्हारे लिए लाभदायक हैं और कौनसे तत्व तुम्हारे लिए नुक़सानदेह (हानिकारक) हैं। लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हारे जिस्म के अन्दर जो मशीन रखी है वह मशीन ख़ुद टेस्ट करती है और इस बात का फ़ैसला करती है कि जो कुछ इस बेवक़ूफ़ इनसान ने खाया है, इसने तो सिर्फ़ अपनी ज़बान के ज़ायक़े की ख़ातिर खाया है।

इस गिज़ा के कितने हिस्से से ख़ून बनाना है और कितने हिस्से से हड्डियों को ताकत पहुँचानी है, कितने हिस्से से गोश्त बनाना है, कितने हिस्से से निगाह को ताकत देनी है, कितने हिस्से से बालों को ताकत देनी है और बालों को लम्बा और काला करना है। यह आटोमैटिक मशीन उस गिज़ा (खाने और भोजन) के हर हिस्से को छाँट-छाँटकर अलग करती है।

जिस्म के अंग और उनके काम

और अल्लाह तआला की बनाई हुई मशीन यह फ़ैसला करती है कि इस गिज़ा (भोजन) में कौनसे तत्व नुक़सानदेह (हानिकारक) हैं कि अगर वे तत्व जिस्म के अन्दर रह गए तो वे तत्व उस आदमी को बीमार कर देंगे और यह बीमारियों का शिकार हो जाएगा। फिर उन तत्वों को यह मशीन अलग करती है। इस पूरी मशीन के हर हिस्से ने अपना अपना काम अलग-अलग बाँट रखा है। जैसे मेदा खाने को पचाता है, जिगर ख़ून बनाता है, गुर्दा यह काम करता है कि जिस्म को जितने पानी की ज़रूरत है उसको बाक़ी रखता है और बाक़ी ज़ायद पानी को पेशाब बनाकर ख़ारिज करता है, आँतें सारे फ़ुज़ले (गन्दगी और पाख़ाने) को जमा करके ख़ारिज करती हैं और हर इनसान के जिस्म के अन्दर अल्लाह तआला ने आटोमैटिक सिस्टम क़ायम फ़रमा दिया है कि आजकी बड़ी से बड़ी साइन्स की ताक़त में नहीं है कि वह ऐसा आटोमैटिक सिस्टम क़ायम कर दे। यह निज़ाम अल्लाह तआला ने हर इनसान को उसकी तलब के बग़ैर, मेहनत के बग़ैर और उसके लिए पैसे ख़र्च किए बग़ैर दे रखा है।

अगर गुर्दा फ़ेल हो जाए तो!

अगर इस मशीन के किसी पुर्ज़े में ज़रा-सी ख़राबी पैदा हो जाए जैसे गुर्दा फ़ेल हो गया और बाक़ी सब पुर्ज़े सही काम कर रहे हैं, जिगर भी सही काम कर रहा है, दिल भी सही है, मेदा भी सही है, आँतें भी सही काम कर रही हैं, सिर्फ़ गुर्दा फ़ेल हो गया। जिसका मतलब यह है कि वह मशीन जो बहने वाली चीज़ों में से लाभदायक तत्वों को बाक़ी रखने के लिए और हानिकारक तत्वों को ख़ारिज करने के लिए अल्लाह तआला ने

बनाई थी, वह मशीन काम नहीं कर रही है। अब जब डाक्टर साहिब के पास गए तो डाक्टर साहिब ने कहा कि इसके अ़मल को जारी रखने के लिए हर सप्ताह तीन बार गुर्दों की सफ़ाई करानी होगी। इसके नतीजे में थोड़ा-बहुत उसकी तलाफ़ी (भरपाई) हो जाएगी और एक बार गुर्दों की सफ़ाई पर हज़ारों रुपया ख़र्च होगा। जिसका मतलब यह है कि गुर्दे के अ़मल को सिर्फ़ इस हद तक बरक़रार रखने के लिए कि इनसान ज़िन्दा रह सके, इस पर एक सप्ताह में हज़ारों रुपया ख़र्च करना पड़ता है।

यह मशीन हर एक को हासिल है

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने हर इनसान को चाहे वह अमीर हो या ग़रीब हो, शहरी हो या देहाती हो, आ़लिम हो या जाहिल हो, पढ़ा लिखा हो या अनपढ़ हो, हर एक को यह मशीन दे रखी है। यह आटोमैटिक मशीन है जो बग़ैर माँगे हुए और बग़ैर पैसा ख़र्च किए हुए दे रखी है। इस मशीन का हर हिस्सा (पुर्ज़ा) अपना-अपना काम कर रहा है और इस काम करने के नतीजे में जो तत्व ताक़त देने वाले और जिस्म के लिए फ़ायदेमन्द हैं उनको महफ़ूज़ रख रहा है, और जो बेफ़ायदा हैं उनको पेशाब-पाख़ाने के ज़रिये बाहर निकाल रहा है।

पाख़ाना करने के बाद शुक्र अदा करो

इसलिए जब तुम पाख़ाने (शौच) से फ़ारिग़ हो तो उस पर शुक्र अदा कर लो और कहो:

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्निल्-अज़ा व आ़फ़ानी।

देखिए! यह काम एक मुसलमान भी करता है और एक काफ़िर भी करता है। लेकिन मुसलमान को अल्लाह तआ़ला ने यह हुक्म दिया कि जब तुम बैतुल्ख़ला (लैट्रिन / पाख़ाना करने की जगह) से बाहर निकलो तो ज़रा इसका तसव्वुर कर लिया करो कि यह नजासत, यह गन्दगी, यह तकलीफ़देह तत्व अगर मेरे जिस्म से ख़ारिज न होते बल्कि अन्दर ही रह जाते तो न जाने ये मेरे जिस्म के अन्दर क्या ख़राबियाँ और क्या बीमारियाँ पैदा करते। ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है और आपका फ़ज़्ल व

करम है कि आपने मुझसे यह गन्दगी दूर फ़रमा दी और मुझे आराम व सुकून अ़ता फ़रमा दिया।

ज़रा ध्यान से ये दुआएँ पढ़ लो

अगर हर मुसलमान रोज़ाना बैतुलख़ला जाते वक़्त दाख़िल होने की दुआ पढ़े और निकलते वक़्त बाहर निकलने की दुआ पढ़े और इस ध्यान के साथ पढ़े कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे कैसी बड़ी नेमत अ़ता फ़रमाई है, तो क्या इसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और मुहब्बत पैदा नहीं होगी? क्या इसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और डर पैदा नहीं होगा? जो मालिक बेनियाज़ मेरे जिस्म में इतनी क़ीमती मशीनें लगाकर मेरे लिए यह काम करा रहा है क्या मैं उसके हुक्म की नाफ़रमानी करूँ? क्या मैं उसकी नाफ़रमानी पर कमर कसे रहूँ। क्या मैं उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ? क्या मैं उसकी दी हुई नेमतों का ग़लत इस्तेमाल करूँ? अगर इनसान यह तसव्वुर करने लगे तो फिर कभी गुनाह के पास भी न फटके।

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बैतुलख़ला से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़ लो। यह कोई मन्तर नहीं है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखा दिया है बल्कि इसके पीछे एक पूरा फ़लसफ़ा (हिक्मत) है और मायनों की पूरी कायनात है जो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये हम को अ़ता फ़रमाई है। इसलिए इन दुआ़ओं को पढ़ने की आ़दत डालिये और इस तसव्वुर (ख़्याल और ध्यान) के साथ पढ़िये कि अल्लाह तआ़ला ने क्या नेमत हमको अ़ता फ़रमाई है। अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको भी इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

वुज़ू

ज़ाहिरी और अन्दरूनी पाकी का ज़रिया है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ۔

(سورۃالبقرۃ آیت ۱۸٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मौकों पर जो दुआएँ इरशाद फ़रमाई हैं वे अल्लाह तआ़ला की कुदरते कामिला और उसकी अज़ीम हिक्मत का एहसास और उसके साथ ताल्लुक़ को मज़बूत करने का बेहतरीन ज़रिया हैं। इसलिए उनकी तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) पिछले कुछ जुमों से शुरू की है। जब इनसान सुबह के वक़्त जागे उस वक़्त क्या दुआ पढ़े? और जब आदमी अपनी तबई ज़रूरत के लिए बैतुल्ख़ला (शौचालय / पाख़ाना करने की

जगह) में जाए तो उस वक़्त क्या दुआ पढ़े? और वहाँ से जब बाहर निकले तो उस वक़्त क्या दुआ पढ़े? इन दुआओं की तशरीह पिछले जुमों में अर्ज़ कर दी।

सबसे पहले नमाज़ की तैयारी

जब आदमी अपनी ज़रूरतों से निबट जाए तो सुन्नत यह है कि उसके बाद सबसे पहले वुज़ू करे। अगर सुबह सादिक़ से पहले (यानी फ़ज्र की अज़ान से पहले) उठने की तौफ़ीक़ हुई है तो वुज़ू करके तहज्जुद की नीयत से चन्द रकअतें अदा कर ले। और अगर फ़ज्र के वक़्त बेदार हुआ है तो मुसलमान का पहला काम यह है कि वह फ़ज्र की नमाज़ अदा करे और नमाज़ की अदायगी के लिए पहले वुज़ू करे।

वुज़ू का ज़ाहिरी और अन्दरूनी पहलू

इस वुज़ू का एक ज़ाहिरी पहलू है और एक बातिनी (अन्दरूनी) पहलू है। इसका ज़ाहिरी पहलू यह है कि इनसान के हाथ-मुँह साफ़ हो जाएँ और उसका मैल-कुचैल दूर हो जाए। इस मक़सद के तेहत तो सब इनसान हाथ-मुँह धोते हैं चाहे वह मुसलमान हो, चाहे वह काफ़िर हो। वुज़ू का बातिनी पहलू यह है कि जिस तरह वुज़ू से ज़ाहिरी अंग धुल रहे हैं और इन अंगों का मैल-कुचैल दूर हो रहा है और सफ़ाई हासिल हो रही है। इसी तरह जब यह काम अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में हो रहा हो और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ हो रहा हो और आपकी पैरवी में हो रहा हो तो इस अमल के ज़रिये अल्लाह तआला इनसान के बातिन के अन्दर एक रूहानियत और नूरानियत पैदा फ़रमा देते हैं और दिल में ईमान का नूर पैदा फ़रमा देते हैं, और सुन्नत पर अमल की बरकतें अता फ़रमा देते हैं। वुज़ू के ये दो फ़ायदे हैं।

तयम्मुम में अन्दरूनी पहलू मौजूद है

चुनाँचे अगर किसी वक़्त इनसान को वुज़ू के लिए पानी न मिले या पानी तो है लेकिन बीमारी की वजह से वह पानी इस्तेमाल नहीं कर

सकता तो उस वक़्त शरीअत का हुक्म है कि वुज़ू के बजाए तयम्मुम कर लो, यानी मिट्टी पर हाथ मारकर अपने चेहरे पर और अपने हाथ पर फेर लो। इस तयम्मुम में हाथ और चेहरे की ज़ाहिरी सफ़ाई का तो कोई पहलू नहीं है बल्कि उल्टा हाथ और चेहरे पर मिट्टी लगा रहे हैं, लेकिन बातिनी (अन्दरूनी) पहलू फिर भी मौजूद है। यह कि इस तयम्मुम के ज़रिये बातिन के अन्दर रूहानियत और नूरानियत पैदा हो रही है और दिल में ईमान का नूर हासिल हो रहा है।

सिर्फ़ ज़ाहिरी सफ़ाई मक़सूद नहीं

इससे मालूम हुआ कि वुज़ू के ज़रिये सिर्फ़ हाथ-मुँह को ज़ाहिरी मैल-कुचैल से साफ़ कर लेना मक़सूद नहीं है, क्योंकि अगर यह चीज़ मक़सूद होती तो अल्लाह तआला पानी न मिलने की सूरत में तयम्मुम का हुक्म न देते, बल्कि यह हुक्म देते कि ऐसी सूरत में स्पंच कर लिया करो और अपने तौलिये को पानी से भिगोकर मुँह पर फेर लिया करो ताकि उसके ज़रिये तुम्हारे हाथ-मुँह का मैल-कुचैल दूर हो जाए। लेकिन अल्लाह तआला ने इस सूरत में स्पंच का हुक्म देने के बजाए तयम्मुम का हुक्म दिया।

रूह की सफ़ाई भी मक़सूद है

अब देखने में तो यह बात उल्टी मालूम हो रही है, क्योंकि अगर पानी से मुँह धोते तो हाथ-मुँह की मिट्टी दूर होती, और अब तयम्मुम का हुक्म देकर यह कहा जा रहा है कि मिट्टी पर हाथ मारकर चेहरे और हाथ पर फेर लो। इसके ज़रिये यह हक़ीक़त बतलानी मक़सूद है कि न पानी की कोई हक़ीक़त है और न वुज़ू की कोई हक़ीक़त है, बल्कि असल बात हमारे हुक्म के पालन में है। जब हमने यह हुक्म दिया कि पानी इस्तेमाल करो तो वह पानी तुम्हारे लिए पाकी, सफ़ाई, नूरानियत और रूहानियत का सबब बन गया। और जब हमने यह कहा कि मिट्टी इस्तेमाल करो तो वही मिट्टी जो बज़ाहिर देखने में इनसान को मैला बनाती है लेकिन वह तुम्हारी रूह को पाक व साफ़ कर देगी और तुम्हारे

बातिन के अन्दर नूर पैदा कर देगी। इसलिए मालूम हुआ कि असल मक़सद सिर्फ़ हाथ-मुँह की सफ़ाई नहीं है बल्कि रूह की सफ़ाई भी मक़सूद है।

वुज़ू की हक़ीक़त से नावाक़फ़ियत का नतीजा

चुनाँचे आजकल कुछ लोग यह कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के लिए वुज़ू करने का जो हुक्म दिया था उसका मक़सूद ज़ाहिरी सफ़ाई हासिल करना था और वुज़ू में पाँव धोने का हुक्म इसलिए दिया था कि उस ज़माने में अरब के लोग काश्तकारी का काम करते थे जिसके नतीजे में उनके पाँव मैले हो जाते थे। अब तो आदमी साफ़-सुथरा रहता है। हर वक़्त मोज़े और बूट पहने हुए होता है, जिसकी वजह से उसके पाँव को मिट्टी लगती ही नहीं।

इसलिए अगर हम पाँव न धोएँ या जो कपड़े के मोज़े हमने पहने हुए हैं उनके ऊपर मसह कर लें तो मक़सद हासिल हो जाएगा, फिर पाँव धोने की क्या ज़रूरत है? ये बातें वुज़ू की हक़ीक़त से नाजानकारी होने की बिना पर कही जाती हैं, इसलिए कि लोग वुज़ू की हक़ीक़त सिर्फ़ यह समझते हैं कि हाथ-पाँव साफ़ हो जाएँ।

वरना नीयत करने की ज़रूरत न होती

याद रखिए! सिर्फ़ हाथ-पाँव का साफ़ हो जाना तन्हा यह मक़सद नहीं है। क्योंकि अगर तन्हा यह मक़सद होता तो फिर शरीअत की तरफ़ से यह हुक्म न होता कि जब आपने एक बार अच्छी तरह मुँह-हाथ धो लिए लेकिन वुज़ू की नीयत नहीं की तो वुज़ू की नीयत न होने की वजह से हाथ-पाँव तो साफ़ हो गए और वुज़ू भी हो गया लेकिन वुज़ू के अनवार व बरकतें हासिल न हुए। इससे मालूम हुआ कि सिर्फ़ हाथ-पाँव का साफ़ होना तन्हा यह मक़सूद नहीं।

दोबारा वुज़ू करने का हुक्म क्यों?

इसी तरह अगर किसी शख़्स ने नीयत करके वुज़ू किया और हाथ-पाँव अच्छी तरह धो लिए लेकिन वुज़ू करने के बाद ही वुज़ू टूट

गया। अब शरीअत का हुक्म यह है कि दोबारा वुज़ू कर लो। अगर सिर्फ़ हाथ-पाँव की सफ़ाई मक़सूद होती तो दोबारा वुज़ू करने का हुक्म न दिया जाता, क्योंकि अभी-अभी तो उसने वुज़ू किया है और मुकम्मल सफ़ाई की है। लेकिन हुक्म यह है कि अगर वुज़ू टूट जाए तो दोबारा वुज़ू करो। इसलिए कि सिर्फ़ ज़ाहिर की सफ़ाई मक़सूद नहीं बल्कि बातिन की (अन्दरूनी) सफ़ाई भी मक़सूद है, और बातिन की सफ़ाई यह है कि इनसान ज़िन्दगी के हर-हर लम्हे में अल्लाह तआ़ला के फ़रमान का ताबे बन जाए। उसके हुक्म का फ़रमाँबरदार बन जाए और दिल में अल्लाह तआ़ला की इताअ़त (फरमाँबरदारी और हुक्म के पालन) का जज़्बा इस तरह पैदा हो जाए कि जब उसका हुक्म आ जाएगा तो मैं उसके हुक्म के आगे सर झुका दूँगा चाहे वह हुक्म मेरी समझ में आ रहा हो या समझ में न आ रहा हो, उस हुक्म की अ़क़्ली हिक्मत मालूम हो या मालूम न हो, इसी का नाम बातिन की सफ़ाई है।

हुक्म मानने से रूहानियत मज़बूत होगी

इसलिए अगर किसी ने अभी वुज़ू किया और वुज़ू करते ही वज़ू टूट गया तो अब अल्लाह तआ़ला का हुक्म यह है कि नया वुज़ू करो, हालाँकि यह हुक्म अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है, क्योंकि अभी-अभी तो वुज़ू करके बैठे हैं। अभी-अभी तौलिये से हाथ-मुँह साफ़ किये हैं। अब दोबारा वुज़ू करने से क्या हासिल? लेकिन अ़क़्ल में इस हुक्म की हिक्मत और मस्लेहत न आने के बावजूद जब आदमी अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील में यह काम करेगा तो उसके बातिन में सुन्नत की पैरवी का नूर पैदा होगा और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील के जज़्बे के नतीजे में उसकी रूहानियत मज़बूत होगी और अल्लाह तआ़ला के साथ ताल्लुक़ मज़बूत होगा।

पाकी और सफ़ाई में फ़र्क़

आ़म तौर पर लोग यह समझते हैं कि पाकी और सफ़ाई दोनों एक ही चीज़ हैं। यह बात ठीक नहीं। पाकी और सफ़ाई में फ़र्क़ है। इस्लाम में

पाकी भी मतलूब है और सफ़ाई भी मतलूब है। तन्हा सफ़ाई से काम नहीं चलेगा। इसलिए अगर आपने सफ़ाई तो हासिल कर ली लेकिन पाकी हासिल नहीं की तो मक़सूद हासिल नहीं होगा, क्योंकि "पाकी" का मतलब यह है कि जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कह दें कि यह पाक है तो वह पाक है, और जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह कह दें कि यह नापाक है तो वह नापाक है। इसलिए अगर कोई चीज़ देखने में कितनी ही साफ़ नज़र आ रही हो लेकिन अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ वह चीज़ पाक नहीं तो मक़सूद हासिल नहीं हुआ।

सुअर साफ़ होने के बावजूद नापाक है

देखिए! सुअर के बारे में क़ुरआन करीम ने फ़रमाया कि वह नापाक है। अब आजकल जो क़ौमें सुअर खाती हैं वे ख़िन्ज़ीर (सुअर) की बहुत साफ़-सुथरे फ़ार्म में परवरिश करती हैं, जिसकी वजह से वह देखने में बड़ा साफ़-सुथरा नज़र आता है। लेकिन क़ुरआन करीम कहता है कि वह ख़िन्ज़ीर (सुअर) सर से लेकर पाँव तक नापाक है, चाहे वह देखने में कितना ही साफ़-सुथरा नज़र आ रहा हो, इसलिए वह साफ़ तो है लेकिन पाक नहीं है।

शराब साफ़ होने के बावजूद नापाक है

देखिए! शराब को अल्लाह तआ़ला ने नापाक क़रार दिया है और बिल्कुल इसी तरह नापाक है जिस तरह पेशाब नापाक है। अब वह शराब देखने में बज़ाहिर साफ़-सुथरी है, साफ़ शफ़्फ़ाफ़ ख़ूबसूरत बोतलों में रखी हुई है और बाक़ायदा लिबार्ट्रीज़ में टेस्ट की हुई है कि इसमें कोई सेहत को नुक़सान पहुँचाने वाले कीटाणु और तत्व मौजूद नहीं हैं लेकिन इन सब के बावजूद वह शराब "पाक" नहीं। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि यह नापाक है। अब बन्दे का काम यह है कि उसको नापाक ही समझे।

वह पानी नापाक है

या जैसे एक बाल्टी पानी की भरी हुई है। उस बाल्टी में एक क़तरा पेशाब का गिर गया। देखिए! पेशाब के एक क़तरे के गिरने से बज़ाहिर बाल्टी के पानी के साफ़ होने पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अगर उस बाल्टी के पानी से कोई कपड़ा धोओगे तो वह कपड़ा बिल्कुल साफ़-सुथरा हो जाएगा लेकिन वह कपड़ा अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ पाक नहीं होगा। चुनाँचे अगर उसको पहनकर नमाज़ पढ़ोगे तो नमाज़ नहीं होगी।

पाकी और सफ़ाई दोनों मतलूब हैं

और अगर एक कपड़े में पेशाब का क़तरा लग गया और आपने उस कपड़े को तीन बार पानी से धो लिया तो वह कपड़ा पाक हो जाएगा अगरचे वह मैला ही क्यों न हो। इसलिए वह कपड़ा साफ़ तो नहीं है लेकिन पाक है। इसलिए यह ज़रूरी नहीं कि हर साफ़ चीज़ पाक हो, और न यह ज़रूरी है कि हर पाक चीज़ साफ़ भी हो, दोनों चीज़ें अलग-अलग हैं, और इस्लाम में दोनों चीज़ें मतलूब (वांछित) हैं। पाकी भी मतलूब है और सफ़ाई भी मतलूब है। इसी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलमानों को यह हुक्म दिया कि जुमे के दिन पाकी भी हासिल करो, गुस्ल करो, वुज़ू करो, पाक कपड़े पहनो, लेकिन साथ में यह भी फ़रमाया कि जितना हो सके इनसान जुमे के दिन साफ़ कपड़े पहनकर मस्जिद में आए। मैले-कुचैले कपड़े पहनकर न आए। ताकि साथ बैठने वाले को तकलीफ़ न हो। इसलिए इस्लाम में पाकी भी मतलूब है सफ़ाई भी मतलूब है। और एक को हासिल करने से दूसरा हासिल नहीं होता। वुज़ू के अन्दर अल्लाह तआ़ला ने दोनों बातें रखी हैं, इसमें पाकी भी है और सफ़ाई भी है।

अंग्रेज़ों की ज़ाहिरी सफ़ाई की हक़ीक़त

ये अंग्रेज़ और पश्चिमी मुल्कों के लोग देखने में बड़े साफ़-सुथरे नज़र आते हैं और सारी दुनिया पर उनकी सफ़ाई सुथराई का रौब जमा हुआ है। लेकिन अगर उनकी अन्दरूनी ज़िन्दगी में झाँक कर देखो तो यह

नज़र आएगा कि उनके यहाँ पाकी का कोई तसव्वुर नहीं। चुनाँचे जब वे लोग पाख़ाने की ज़रूरत से फ़ारिग़ होते हैं तो उसके बाद पानी के इस्तेमाल का कोई तसव्वुर नहीं सिर्फ़ टॉयलेट पेपर से अपनी गन्दगी साफ़ कर लेते हैं। अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि इनसान टॉयलेट पेपर से किस हद तक नजासत (गन्दगी) को साफ़ कर सकता है। और अगर किसी ने बहुत ज़्यादा सफ़ाई हासिल करने का इरादा किया तो उसने यह किया कि गुस्ल करने के टब में पानी भरके उसी गन्दगी और नापाकी की हालत में जाकर बैठ गया और उसी में बैठकर साबुन भी लगा लिया। अब उस टब का पानी साबुन और नजासत का मिक्सचर बन गया और उसी मिक्सचर में उसने दो चार ग़ोते लगा लिए। ग़ोते लगाने के नतीजे में ज़ाहिरी तौर पर जिस्म से मैल-कुचैल साफ़ हो गया। और अगर किसी को इससे ज़्यादा सफ़ाई का ख़्याल आया तो उसने शावर ले लिया और उससे अपने बदन को धो लिया, लेकिन अक्सर शावर की नौबत नहीं आती बल्कि उसी हालत में टब से निकल कर जिस्म सुखा लिया और पाउडर और क्रीम लगाकर ज़ाहिरी टीप-टाप करके गुस्लख़ाने में से बाहर आ गए और साफ़-सुथरे हो गए। यह है इन अंग्रेज़ों की सफ़ाई की हक़ीक़त।

मुसलमानों में पाकी और सफ़ाई का एहतिमाम

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को दोनों चीज़ों का एक साथ हुक्म दिया। तहारत (पाकी) का भी हुक्म दिया और नज़ाफ़त (सफ़ाई) का भी हुक्म दिया। फ़रमाया कि पाक भी रहो और साफ़-सुथरे भी रहो। इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने इस्तिन्जा करने का ऐसा तरीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया कि गन्दगी से पाकी हासिल करने का इससे बेहतर और कोई तरीक़ा नहीं हो सकता। चुनाँचे आप मुसलमानों के इलाक़ों के अ़लावा दुनिया के जिस इलाक़े में भी चले जाएँ तो वहाँ आपको लैट्रीन करने के बाद सफ़ाई-सुथराई हासिल करने का ऐसा सिस्टम नहीं मिलेगा जो मुसलमानों के यहाँ आपको नज़र आएगा। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को दोनों बातों का हुक्म दिया है, तहारत का भी और सफ़ाई का भी। अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि उसने यह नेमत मुसलमानों को

अ़ता फ़रमाई।

एक यहूदी का एतिराज़ और उसका जवाब

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस्तिन्जा करने की अ़मली सूरत सहाबा किराम को सिखाई। यहाँ तक कि एक यहूदी हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बतौर एतिराज़ के यह कहने लगा कि:

अ़ल्ल-मकुम् नबिय्युकुम् कुल्-ल शैइन् हत्तल्ख़ला-अ।

यानी तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भी बड़े अ़जीब हैं कि तुम्हें गन्दी-गन्दी बातें भी सिखाते हैं कि बैतुल्ख़ला में किस तरह दाख़िल हों और किस तरह फ़ारिग़ हों। उसने यह बात एतिराज़ के तौर पर कही कि नबी की शान तो बड़ी होती है, वह ऐसी छोटी-छोटी बातों में क्यों उलझते हैं। जवाब में हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया:

अजल

यानी हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हर चीज़ सिखाई है यहाँ तक कि पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने का तरीक़ा भी सिखाया है। क्योंकि हमारे नबी हमारे ऊपर शफ़ीक़ (दयालु और मेहरबान) बाप की तरह हैं। माँ-बाप जिस तरह बच्चे को दूसरी बातें सिखाते हैं उसी तरह बच्चे को यह भी सिखाते हैं कि पाख़ाने की ज़रूरत कैसे पूरी की जाए और पाकी कैसे हासिल की जाए।

पाख़ाना करने की ज़रूरत पूरी करने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम

चुनाँचे हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें बताया कि जब पाख़ाने की ज़रूरत के लिए बैठो तो क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करके न बैठो, और न ही क़िब्ले की तरफ़ पीठ करके बैठो। और हमें हुक्म फ़रमाया कि तीन पत्थर इस्तेमाल करो। उस ज़माने में पत्थर इस्तेमाल होते थे। और हमें वे चीज़ें बताईं कि हम किस चीज़ से इस्तिन्जा कर सकते हैं और किस चीज़ से इस्तिन्जा नहीं कर सकते। इसलिए तुम इन चीज़ों पर

एतिराज़ कर रहे हो लेकिन हमारे लिए यह गर्व की बात है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें ये सब बातें बताई हैं और अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह तआ़ला ने ऐसा मुकम्मल दीन अ़ता फ़रमाया है।

वुज़ू से ज़ाहिरी और बातिनी पाकी हासिल होती है

बहरहाल! जो वुज़ू अल्लाह तआ़ला ने हमें सिखाया है यह महज़ हाथ-मुँह साफ़ करने का ज़रिया नहीं। बेशक इसका एक फ़ायदा यह भी है कि इससे हाथ-मुँह साफ़ होते हैं। और जो शख़्स दिन में पाँच बार वुज़ू करेगा उसके जिस्म पर गन्दगी नहीं रहेगी। लेकिन इसके साथ-साथ यह वुज़ू एक रूहानी अ़मल भी है जिसके ज़रिये बातिन की सफ़ाई की जा रही है। इनसान के अन्दर को साफ़ किया जा रहा है। इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वुज़ू के वक़्त तुम्हारी ज़बान पर ज़िक्र होना चाहिए ताकि बातिन की सफ़ाई पुख़्ता और मज़बूत और देरपा हो जाए। चुनाँचे फ़रमाया कि वुज़ू करते वक़्त बिना ज़रूरत बातें मत करो, और यह कोशिश करो कि जितना वक़्त वुज़ू में लग रहा है वह वक़्त भी अल्लाह के ज़िक्र में ख़र्च हो। चुनाँचे हदीसों में वुज़ू के दौरान जो दुआ़एँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल की गयी हैं उनके बारे में इन्शा-अल्लाह आईन्दा जुमे में अ़र्ज़ करूँगा।

आज की बात का ख़ुलासा यह है कि जब तुम वुज़ू करने बैठो तो उस वक़्त ज़रा ध्यान और तवज्जोह को इस तरफ़ लगाओ कि जो काम में शुरू कर रहा हूँ उससे सिर्फ़ ज़ाहिरी अंगों की सफ़ाई मक़सूद नहीं है बल्कि इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला मेरे बातिन को भी साफ़ करना चाहते हैं। इसलिए मुझे यह काम सुन्नत के मुताबिक़ करना चाहिए ताकि ये दोनों मक़सद एक साथ हासिल हो जाएँ। अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सबको भी इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हर काम से पहले "बिस्मिल्लाह" क्यों?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ۔

(سورةالبقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِىُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले चन्द जुमों से नबी पाक से नक़ल की गयी मक़बूल दुआओं का ज़िक्र चल रहा है। जैसा कि मैंने अर्ज़ किया था कि वुज़ू के अन्दर दो पहलू हैं- एक पहलू अंगों की ज़ाहिरी सफ़ाई का है और दूसरा पहलू बातिनी तहारत (अन्दरूनी पाकी) का है। यानी वुज़ू से सिर्फ़ वुज़ू के अंग ही साफ़ नहीं होते बल्कि वुज़ू से एक बातिनी तहारत भी हासिल होती है और उसकी बरकत से अल्लाह तआला वुज़ू करने वाले के दिल और रूह के अन्दर नूर पैदा कर देते हैं।

वुज़ू से बातिनी नूर भी मक़सूद है

एक शख़्स मुसलमान नहीं है, वह अगर वुज़ू के सारे काम करे, जैसे हाथ धोए, कुल्ली करे, नाक साफ़ करे, मुँह धोए, सर का मसह करे, पाँव

भी धोए तो इसके नतीजे में सफ़ाई तो हासिल हो ही जाएगी लेकिन उस वुज़ू का नूर और उसकी रूहानी बरकतें उसको हासिल नहीं होंगी। इसलिए मुसलमान को यह हुक्म दिया गया है कि वह नमाज़ से पहले वुज़ू करे, इसका मक्सद महज़ ज़ाहिरी बदन की सफ़ाई नहीं है बल्कि इसका मक्सद यह है कि इस वुज़ू के ज़रिये उसके बातिन में और उसकी रूह में एक नूर और बरकत पैदा हो और उसके बातिन की भी सफ़ाई हो जाए।

वुज़ू की नीयत करें

इस बातिन की (अन्दरूनी और रूह की) सफ़ाई के लिए ज़रूरी है कि इनसान वुज़ू करने से पहले नीयत करे, क्योंकि अगर किसी शख़्स ने वुज़ू की नीयत के बिना हाथ-पाँव धो लिये तो अगरचे वुज़ू हो जाएगा लेकिन चूँकि यह नीयत नहीं थी कि मैं इसके ज़रिये अल्लाह के हुक्म की तामील कर रहा हूँ और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी कर रहा हूँ इसलिए बातिनी अनवार व बरकतें उस वुज़ू के ज़रिये हासिल नहीं होंगे। इसलिए सबसे पहले नीयत करना ज़रूरी है।

वुज़ू से पहले "बिस्मिल्लाह" पढ़ें

दूसरा हुक्म यह दिया गया कि वुज़ू करने से पहले "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी ताकीद फ़रमाई है। एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर वुज़ू करे, यानी बिस्मिल्लाह पढ़कर वुज़ू करे तो यह वुज़ू उसके जिस्म के तमाम अंगों की तहारत (पाकी) का सबब बन जाएगा। और अगर कोई शख़्स "बिस्मिल्लाह" पढ़े बग़ैर वुज़ू करेगा तो सिर्फ़ वही हिस्से (जिस्मानी अंग) साफ़ होंगे जिनको उसने वुज़ू में धोया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि वुज़ू करने से पहले "बिस्मिल्लाह" पढ़ने को जो सुन्नत क़रार दिया गया है वह इसलिए है ताकि वुज़ू से पूरा फ़ायदा हासिल हो जाए।

"बिस्मिल्लाह" ज़ाहिरी और बातिनी नूर का ज़रिया है

आप अन्दाज़ा लगाएँ कि अगर एक शख़्स वुज़ू से पहले

"बिस्मिल्लाह" पढ़ ले तो इसमें कौनसी मेहनत ख़र्च होती है, कौनसी इसमें परेशानी होती है, कौनसा इसमें वक़्त ख़र्च होता है, कौनसा इसमें पैसा ख़र्च होता है। लेकिन यह छोटा-सा अमल इनसान के ज़ाहिर और बातिन दोनों की पाकी और नूर का सबब बन जाता है। कभी-कभी ध्यान न करने की वजह से हम लोग इस तरह की बरकतों से मेहरूम रह जाते हैं। इसलिए वुज़ू शुरू करने से पहले "बिस्मिल्लाह" पढ़ने का एहतिमाम करना चाहिए।

वुज़ू गुनाहों की सफ़ाई का ज़रिया भी है

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब आदमी "बिस्मिल्लाह" पढ़कर वुज़ू करता है तो जिस वक़्त वह अपना चेहरा धोता है तो चेहरे से उसने जो 'गुनाह सग़ीरा' (छोटे-छोटे गुनाह) किये होते हैं वे सब चेहरा धुलने से धुल जाते हैं। अब ज़ाहिर में तो हमें यह नज़र आ रहा है कि वुज़ू के ज़रिये चेहरे का गर्द व गुबार और मैल-कुचैल धुल गया और चेहरा साफ़-सुथरा हो गया लेकिन जो चीज़ हमें नज़र नहीं आ रही है उसको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान फ़रमा रहे हैं कि मैं देख रहा हूँ कि जब तुम चेहरा धोते हो तो तुम्हारे चेहरे से जितने सग़ीरा (छोटे) गुनाह होते हैं वे भी साथ में धुल जाते हैं। और जब तुम हाथ धोते हो तो तुम्हारे हाथ से जितने गुनाह होते हैं वे भी धुल जाते हैं। और जब तुम सर का मसह करते हो उसके साथ तुम्हारे सर के गुनाह धुल जाते हैं। और जब तुम कानों का मसह करते हो तो उसके साथ तुम्हारे कानों के गुनाह धुल जाते हैं। और जब तुम पाँव धोते हो तो जिन गुनाहों की तरफ़ पाँव से चलकर गए हो अल्लाह उनको माफ़ फ़रमा देते हैं। यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब इनसान वुज़ू करके फ़ारिग़ होता है तो वह गुनाहों से पाक व साफ़ हो चुका होता है।

सिर्फ़ छोटे गुनाह माफ़ होते हैं

लेकिन इस हदीस में जिन गुनाहों की माफ़ी का ज़िक्र है वे सग़ीरा (छोटे) गुनाह हैं, लेकिन कबीरा (बड़े) गुनाह तौबा के बग़ैर माफ़ नहीं

होते। इसी तरह जो गुनाह बन्दों के हुकूक़ से मुताल्लिक़ हों जैसे किसी बन्दे का हक़ ज़ाया किया हो तो वह उस बन्दे से अपना हक़ माफ़ कराए बग़ैर माफ़ नहीं होगा। अलबत्ता हर वुज़ू में तुम्हारे सग़ीरा गुनाह माफ़ फ़रमा रहे हैं। इसी की तरफ़ इशारा करते हुए क़ुरआन करीम में फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी अगर तुम कबीरा (बड़े) गुनाहों से बचते रहोगे तो जो तुम्हारे छोटे-छोटे गुनाह हैं उनका कफ़्फ़ारा हम ख़ुद करते रहेंगे और एक इज़्ज़त वाली जगह यानी जन्नत में दाख़िल करेंगे। (सूरः निसा आयत 31)

और दूसरी आयत में छोटे गुनाहों की माफ़ी का एक क़ायदा बयान फ़रमायाः

तर्जुमाः बेशक नेकियाँ छोटे गुनाहों को धोती रहती हैं।

(सूरः हूद आयत 114)

जैसे कोई सग़ीरा (छोटा) गुनाह हो गया, उसके बाद वुज़ू कर लिया तो वह गुनाह माफ़ हो गया और नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ़ चले तो अब हर एक क़दम पर एक सग़ीरा गुनाह माफ़ हो रहा है। नमाज़ पढ़ने से सग़ीरा गुनाह माफ़ हो रहे हैं। बहरहाल! अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं कि हम तुम्हारे सग़ीरा (छोटे) गुनाह माफ़ करते रहेंगे बशर्तेकि तुम कबीरा (बड़े) गुनाहों से परहेज़ करते रहो।

अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील में और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी में आदमी जब वुज़ू कर रहा है तो उस वुज़ू से सिर्फ़ जिस्म की ज़ाहिरी सफ़ाई ही हासिल नहीं हो रही बल्कि उस वुज़ू से उसके बातिन की भी सफ़ाई हो रही है। उस वुज़ू से उसके गुनाह भी माफ़ हो रहे हैं और उसके दिल में नूर भी पैदा हो रहा है। इसलिए फ़रमाया कि "बिस्मिल्लाह" पढ़कर वुज़ू शुरू करो।

"बिस्मिल्लाह" का फ़ायदा

हदीस शरीफ़ में "बिस्मिल्लाह" के सिलसिले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः (दुनिया या आख़िरत का) हर अहम काम अगर

"बिस्मिल्लाह" से शुरू न किया जाए तो वह अधूरा और नाक़िस है।

अल्लाह तआ़ला के यहाँ उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं। और अगर उसी काम को "बिस्मिल्लाह" पढ़कर करोगे तो अल्लाह तआ़ला उस काम में बरकत अ़ता फ़रमाएँगे और उसमें दीन का भी फ़ायदा होगा और दुनिया का भी फ़ायदा होगा।

"बिस्मिल्लाह" पढ़ने में क्या हिक्मत है?

अब सवाल यह पैदा होता है कि ऐसा क्यों है कि "बिस्मिल्लाह" पढ़कर काम करो तो मुकम्मल और "बिस्मिल्लाह" के बग़ैर काम करो तो वह काम अधूरा और नाक़िस है। हालाँकि दुनिया का एक काम हमने "बिस्मिल्लाह" के बग़ैर कर लिया तो बज़ाहिर देखने में यह आ रहा है कि वह काम पूरा हो गया, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि वह काम नाक़िस और अधूरा है। और बाज़ जगहों पर "बिस्मिल्लाह" को इतनी अहमियत दी कि अगर वह काम "बिस्मिल्लाह" पढ़े बग़ैर कर लिया तो वह काम शरअ़न मोतबर ही नहीं। जैसे आपने एक हलाल जानवर ज़िबह किया, लेकिन ज़िबह के वक़्त जान-बूझकर "बिस्मिल्लाह" नहीं पढ़ी, अब सिर्फ़ अ़क़्ल से सोचने वाले लोग तो यह कहेंगे कि "बिस्मिल्लाह" न पढ़ने से जानवर पर क्या फ़र्क़ पड़ा? अगर "बिस्मिल्लाह" पढ़कर ज़िबह करते तब भी रगें कटतीं और अगर "बिस्मिल्लाह" पढ़े बग़ैर ज़िबह किया तब भी रगें कट गईं और ख़ून उतना ही निकला और शरीअ़त ने जानवर को जो ज़िबह करने का हुक्म दिया है उसका मक़सद भी यह है कि ख़ून उसके जिस्म में रहकर गोश्त में ख़राबी पैदा न कर दे, और फिर वह गोश्त इनसान की सेहत के लिए नुक़सानदेह न हो। यह मक़सद तो "बिस्मिल्लाह" पढ़े बग़ैर ज़िबह करने से भी हासिल हो गया, फिर "बिस्मिल्लाह" न पढ़ने से क्या नुक़सान हुआ?

वह जानवर हलाल नहीं

लेकिन ऐसे जानवर के बारे में क़ुरआन करीम का खुला इरशाद है:

तर्जुमाः यानी जिस जानवर पर अल्लाह तआला का नाम न लिया गया हो उसको हरगिज़ मत खाओ, और ऐसे जानवर को खाना फ़िस्क़ (नाफ़रमानी और गुनाह) है। (सूरः अन्आम आयत 121)

यानी ऐसे जानवर को खाना भी ऐसा ही गुनाह है जैसे शराब पीना, ख़िन्ज़ीर (सुअर) खाना, ज़िना करना गुनाह हैं। अब बज़ाहिर तो ऐसा जानवर बिल्कुल साफ़-सुथरा है, उसकी सारी रगें कटी हुई हैं, ख़ून निकला हुआ है, सिर्फ़ यह कि ज़िबह के वक़्त ज़बान से बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी।

कोई शख़्स यह एतिराज़ करे कि "बिस्मिल्लाह" न पढ़ने का उस जानवर पर क्या असर पड़ गया? अगर "बिस्मिल्लाह" पढ़ लेते तो क्या उस "बिस्मिल्लाह" की आवाज़ उसके कान के अन्दर पहुँच जाती? या यह "बिस्मिल्लाह" कोई मन्तर है कि उसके पढ़ने से वह हलाल हो जाता?

ज़िबह के वक़्त "बिस्मिल्लाह" पढ़ने में अज़ीम हक़ीक़त

बात दर असल यह है कि अल्लाह तआला ज़िबह के वक़्त "बिस्मिल्लाह" पढ़ने का हुक्म देकर एक अज़ीम हक़ीक़त की तरफ़ इनसान को तवज्जोह दिलाना चाहते हैं। वह हक़ीक़त यह है कि ज़रा यह तो सोचो कि जिस जानवर को तुम ज़िबह कर रहे हो, यह भी तो तुम्हारी तरह जानदार है। हमने इसको भी पैदा किया और तुम्हें भी पैदा किया। तुम भी जानदार हो और यह भी जानदार है। और जानदार होने की हैसियत से जिस तरह तुम यह चाहते हो कि तुम्हें कोई तकलीफ़ न पहुँचे और तुम्हें कोई ज़ख़्मी न करे उसी तरह यह जानवर भी यही चाहता है कि उसको कोई तकलीफ़ न पहुँचे और ज़ख़्म न लगाए। और जिस तरह तुम यह चाहते हो कि तुम ज़िन्दा रहो तुम्हें मौत न आए और तुम्हें हर वक़्त मौत से डर लगता है उसी तरह जानवर भी चाहते हैं कि वे ज़िन्दा रहें उनको मौत न आए और उनको भी मौत से डर लगता है। ये जानवर भी तो अल्लाह तआला की मख़्लूक़ हैं और अल्लाह तआला ने उनके अन्दर भी जान डाली है। अगर कोई शख़्स तुम्हारे गले पर छुरी फेरकर ज़िबह करके तुम्हें खाना चाहे तो तुम्हें किस क़द्र बुरा लगेगा और इसको तुम अपने ऊपर कितना ज़ुल्म समझोगे।

तुम जानवर को मौत के घाट क्यों उतार रहे हो?

इसलिए तुम अपने ज़िबह होने को तो बुरा समझते हो और अपनी मौत को तो तुम इतना मक्रूह और ना-पसन्दीदा समझते हो, और हमारी ही पैदा की हुई मख़्लूक़ के गले पर रोज़ाना छुरी फेरकर उसको ज़िबह करके उसका गोश्त खाते हो। कभी तुम्हें यह ख़्याल नहीं आता कि मैं इस मख़्लूक़ पर जुल्म कर रहा हूँ। यह मख़्लूक़ भी तो जानदार है, लेकिन मैंने अपने ज़ायक़े की ख़ातिर उसके गले पर छुरी फेरकर उसको मौत के घाट उतार दिया। ज़रा सोचो कि तुम यह क्या काम करने जा रहे हो? अपने ज़ायक़े की ख़ातिर एक मख़्लूक़ को मौत के घाट उतार रहे हो?

ये जानवर तुम्हारे लिए पैदा किये गये हैं

अगर इस अ़मल का जवाज़ (जायज़ होना) हो सकता है तो वह सिर्फ़ एक है, वह यह कि जिस पैदा करने वाले ने उस जानवर को भी पैदा किया और तुम्हें भी पैदा किया उसी पैदा करने वाले ने यह तक़सीम कर दी कि अगरचे जानवर भी हमारी जानदार मख़्लूक़ है लेकिन हमने उसको एक दूसरी जानदार मख़्लूक़ की ख़ातिर पैदा किया है। यानी यह जानवर बकरा, दुंबा, गाय, ऊँट ये सब अल्लाह तआ़ला ने इनसान के लिए पैदा फ़रमाए हैं। और चूँकि उनकी पैदाईश का मक़सद यह है कि ये इनसान को फ़ायदा पहुँचाएँ। इस वजह से तुम रोज़ाना उसके गले पर छुरी फेरकर उसको खाते हो और दुनिया में इसको कोई जुल्म नहीं समझता। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी ज़मीन में जो कुछ है ऐ इनसान! हमने तेरे लिए पैदा किया है। (सूरः ब-क़रह् आयत 29)

इसलिए जानवर को ज़िबह करके खाना तुम्हारे लिये हलाल और जायज़ है। लेकिन जिस वक़्त तुम ज़िबह का अ़मल करो उस वक़्त इस हक़ीक़त का एतिराफ़ करो (मान लो) कि जानवर को ज़िबह करना उसूलन मेरे लिए जुल्म था लेकिन मेरे लिए मेरे ख़ालिक़ (पैदा करने वाले यानी अल्लाह तआ़ला) ने इस जुल्म को जायज़ कर दिया और मेरे नफ़े की

ख़ातिर मेरे मालिक ने इसको मेरे लिए हलाल कर दिया। इसलिए जब तक तुम यह एतिराफ़ (तस्लीम) नहीं करोगे कि इस जानवर को मेरे ख़ालिक़ ने मेरे ,िलए हलाल किया है वरना यह मेरे लिए हलाल नहीं था, उस वक़्त तक वह जानवर तुम्हारे लिए हलाल नहीं।

"बिस्मिल्लाह" एक इक़रार है

इस लिए जिस वक़्त "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर या "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कहकर जानवर को ज़िबह कर रहे हो तो यह कोई मन्तर नहीं है जिसे ज़बान से पढ़ रहे हो, बल्कि इसके ज़रिये तुम इस हक़ीक़त का एतिराफ़ (इक़रार) कर रहे हो कि मैं यह जानवर उस अल्लाह तआ़ला के नाम पर ज़िबह कर रहा हूँ जिसने इस मख़्लूक़ को मेरे लिए पैदा किया और मेरे लिए हलाल कर दिया। और साथ में जब तुमने "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" पढ़ा तो तुमने इसके ज़रिये इस बात का इक़रार कर लिया कि अल्लाह ही सब से बड़ा है। और चूँकि वह सब से बड़ा है इसलिए वही इस बात का हक़ रखता है कि वह यह फ़ैसला करे कि कौनसी मख़्लूक़ किस काम के लिए पैदा की गई है।

अब इस एतिराफ़ (मान लेने) के बाद जब तुम जानवर के गले पर छुरी फेरोगे तो वह जानवर तुम्हारे लिए हलाल हो जाएगा। लेकिन अगर तुमने ग़फ़लत की हालत में अल्लाह तआ़ला की इस नेमत का एतिराफ़ किये बग़ैर उसके गले पर छुरी फेर दी तो इसका मतलब यह है कि तुमने उस जानवर के हलाल होने की शर्त पूरी नहीं की। इसलिए वह जानवर तुम्हारे लिए हराम है। ऐसा जानवर उस जानवर की तरह है जो अपनी मौत मर गया हो, दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं। हालाँकि उस जानवर का ख़ून बह गया है और डाक्टर भी उसके बारे में रिपोर्ट दे देंगे कि मैडिकल के एतिबार से उस जानवर का खाना सेहत के लिए नुक़सानदेह नहीं है। लेकिन क़ुरआन करीम यह फ़तवा दे रहा है कि उसका खाना हलाल नहीं, क्योंकि तुमने उस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया है। "बिस्मिल्लाह" पढ़ने से एक तो यह एतिराफ़ (इक़रार) हो रहा है।

"बिस्मिल्लाह" की एक और हकीकत

दूसरे "बिस्मिल्लाह" से एक और हकीक़त की तरफ़ इशारा किया जा रहा है। वह यह कि अल्लाह तआला ने इस जानवर को तुम्हारे लिए पैदा किया, इसलिए तुम्हारे लिए इसका खाना हलाल है। लेकिन यह बताओ कि तुम्हारे अन्दर वह कौनसे सुर्ख़ाब के पर हैं जिनकी वजह से अल्लाह तआला ने यह सारी मख़्लूक़ तुम्हारी तस्कीन (आराम देने) के लिए पैदा फ़रमा दी है, हालाँकि तुम दरख़्तों के पत्तों पर भी गुज़ारा कर सकते थे और उन पत्तों के ज़रिये भी तुम्हारी भूख मिट जाती, सब्ज़ियों से भी तुम्हारी भूख मिट जाती, लेकिन सिर्फ़ तुम्हारा ज़ायक़ा बेहतर करने के लिए और तुम्हें अच्छी ग़िज़ा (खुराक और भोजन) उपलब्ध कराने के लिए अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इतनी बड़ी मख़्लूक़ पैदा कर दी और तुम्हें इसकी इजाज़त दे दी कि तुम उसको मौत के घाट उतारते रहो और उसके ज़रिये अपने लिए लज़्ज़त का सामान मुहैया करते रहो।

जान भी ले लो और सवाब भी लूटो

किसी ने बकरे की ज़बान में एक ख़ूबसूरत कविता कही थी कि यह जानवर जिसको इनसान काटता भी है और उसकी कुरबानी भी करता है गोया कि जानवर को काटता भी है और उल्टा सवाब भी लेता है।

वही ज़िबह भी करे है
वही ले सवाब भी उल्टा

इसलिए जानवरों को काट भी रहा है, सवाब भी हासिल कर रहा है और अपनी लज़्ज़तों का सामान भी कर रहा है इसपर किसी ने बकरे की ज़बान में नज़्म कही थी कि बकरा अपनी ज़बाने हाल से यूँ कहता है:

नस्लों को निगल लिया है तूने
फिर भी नहीं तेरी इश्तिहा[1] कम

अगर हिसाब लगाकर देखो कि एक इनसान पैदाईश से लेकर मरते दम तक कितने बकरे और कितनी गाय-भैंस खा लेता है, कितनी नस्लें

(1) इच्छा/ख़्वाहिश।

उसने अपने हलक़ से उतारी होंगी लेकिन फिर भी उसकी भूख कम नहीं होती।

इनसान एक बड़े मक़सद के लिए पैदा किया गया है

बहरहाल! अल्लाह ने तुम्हें इन सारे जानवरों पर यह फ़ौक़ियत (बरतरी) अ़ता कर दी कि तुम अपनी लज़्ज़त की ख़ातिर उनको मौत के घाट उतारते रहो तो आख़िर तुम्हारे अन्दर ऐसा कौनसा सुर्ख़ाब का पर लगा हुआ है जिसकी वजह से जानवर तुम्हारे लिए हलाल कर दिए गए? इसके विपरीत हुक्म क्यों नहीं हुआ कि गाय-भैंसों से कहा जाता कि वे इनसान को चीर-फाड़कर खा जाएँ क्योंकि वे तुम्हारे मुक़ाबले में ज़्यादा ताक़तवर हैं। अगर गाय का मुक़ाबला किसी बड़े से बड़े सेहतमन्द (स्वस्थ) ताक़तवर इनसान से किया जाए तो भी गाय इनसान से कई गुना ज़्यादा ताक़तवर साबित होगी, लेकिन इसके बावजूद ताक़तवर से कहा जा रहा है कि तू इस कमज़ोर इनसान की ख़ातिर क़ुरबान हो जा। इसकी क्या वजह है कि इनसान को जानवरों पर फ़ज़ीलत और बरतरी अ़ता की गई?

इस बरतरी और बड़ाई की वजह इसके अ़लावा कुछ नहीं है कि दर हक़ीक़त इनसान को किसी और बड़े मक़सद के लिए पैदा किया गया है, और वह बड़ा मक़सद क़ुरआन करीम ने इन अलफ़ाज़ से बयान फ़रमा दिया:

तर्जुमाः और मैंने इनसान और जिन्नात को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। (सूरः ज़ारियात आयत 56)

इसलिए अगर यह इनसान इबादत करता है फिर तो यह बेशक इस बात का हक़दार है कि वह दूसरी मख़्लूक़ात से काम ले और उनसे फ़ायदा उठाए और उनसे लज़्ज़त हासिल करे। लेकिन अगर इनसान को जिस मक़सद के लिए पैदा किया गया है उस मक़सद को पूरा नहीं कर रहा है तो फिर उसको यह हक़ नहीं पहुँचता कि वह अल्लाह की दूसरी मख़्लूक़ के गले पर छुरी फेरे और उसको अपनी लज़्ज़त के लिए इस्तेमाल करे।

"बिस्मिल्लाह" के ज़रिये दो हकीकतों का इकरार

इसलिए जब इनसान जानवर को ज़िबह करते वक़्त "बिस्मिल्लाह" पढ़ रहा है तो उसके ज़रिये वह दो हकीक़तों का इक़रार कर रहा है। एक तो वह इस हक़ीक़त का इक़रार कर रहा है कि यह अल्लाह तआला ही है जिसने मेरे लिए इस जानवर को हलाल कर दिया वरना मुझे यह हक़ नहीं पहुँचता था कि अपने जैसे जानदार को ज़िबह करके खाऊँ। इसलिए मैं पहले उसकी बड़ाई का एतिराफ़ (इकरार) करता हूँ और उसकी हिक्मत और उसकी कुदरते कामिला का एतिराफ़ करता हूँ।

दूसरे वह इस हक़ीक़त का एतिराफ़ (इक़रार) कर रहा है कि अल्लाह तआला ने मेरे लिए यह जानवर जो हलाल किया है यह वैसे ही हलाल नहीं कर दिया बल्कि इसलिए हलाल किया है कि मेरी ज़िन्दगी का भी कोई मक़सद है और मुझे उस मक़सद को पूरा करना चाहिए। इसलिए "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कहकर ज़िबह करने वाला इन दो हक़ीक़तों का एतिराफ़ करते हुए ज़िबह कर रहा है। अगर इनसान इन दो हक़ीक़तों को समझ ले और इनको याद रख ले तो उसकी ज़िन्दगी संवर जाए।

बहरहाल! जानवर पर "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" पढ़ने का यह फ़ल्सफ़ा (हिक्मत) है जो मैंने तफ़सील से अ़र्ज़ किया। यह मैंने आपके सामने "जानवर" की एक मिसाल अ़र्ज़ की वरना दुनिया के हर काम के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का नाम लेकर शुरू करो और जो काम अल्लाह का नाम लिए बग़ैर शुरू किया जाएगा वह अधूरा और नाक़िस होगा। इसी तरह वुज़ू को भी "बिस्मिल्लाह" पढ़कर शुरू करो। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हमें इन हक़ीक़तों को समझने और इन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

"बिस्मिल्लाह"

का अज़ीमुश्शान फ़ल्सफ़ा व हकीकत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فقد قال النبى صلى الله عليه وسلم: كل امر ذى بال لا يبدأ فيه بسم الله الرحمن الرحيم اقطع. (كنز العمال، حديث نمبر ۲۴۹۱)

तम्हीद

मोहतरम बुजुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले जुमे को "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" के बारे में कुछ बातें बयान की थीं। हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि हर कोई अहम काम जो अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरू न किया जाए वह अधूरा और नाकिस है। इस हदीस के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर मुसलमान को यह तलक़ीन (तालीम व हिदायत) फ़रमाई कि अपनी ज़िन्दगी का हर अहम काम अल्लाह के नाम से शुरू करे।

हर काम से पहले "बिस्मिल्लाह"

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" एक ऐसा कलिमा है जो हमें हर काम से पहले पढ़ने का हुक्म दिया गया। सुबह को बिस्तर से उठते वक़्त,

गुस्लख़ाने में जाते वक़्त, गुस्लख़ाने से निकलते वक़्त, खाना खाने से पहले, पानी पीने से पहले, बाज़ार में जाने से पहले, मस्जिद में दाख़िल होने से पहले, मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त, कपड़े पहनते वक़्त, गाड़ी चलाते वक़्त, सवार होते वक़्त, सवारी से उतरते वक़्त, घर में दाख़िल होते वक़्त, तमाम वक़्तों में "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" का कलिमा हम से कहलवाया जा रहा है।

हर काम के पीछे परवर्दिगारी का निज़ाम है

जैसा कि पिछले जुमे में अर्ज़ किया गया था कि यह कोई मन्तर नहीं है जो हमसे पढ़वाया जा रहा हो, बल्कि इसके पीछे एक अज़ीमुश्शान फ़ल्सफ़ा है और एक अज़ीमुश्शान हक़ीक़त की तरफ़ इसके ज़रिये मुतवज्जह किया जा रहा है। वह हक़ीक़त यह है कि ज़िन्दगी का जो भी काम इनसान कर रहा है वह अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ के बग़ैर मुम्किन नहीं। देखने में चाहे यह नज़र आ रहा हो कि जो काम मैं कर रहा हूँ वह मेरी कोशिश और मेहनत का नतीजा है, लेकिन अगर इनसान गहरी नज़र से देखे तो उसको अपनी कोशिश और मेहनत का अमल-दख़ल उसमें बहुत थोड़ा नज़र आएगा और उसके पीछे अल्लाह तआला का बनाया हुआ अज़ीमुश्शान परवर्दिगारी का निज़ाम काम करता नज़र आएगा।

एक गिलास पानी पर परवर्दिगारी का निज़ाम काम कर रहा है

मिसाल के तौर पर देखिए! हमें यह हुक्म दिया गया है कि जब पानी पियो तो पानी पीने से पहले "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ो। देखने में तो यह नज़र आता है कि पानी पीना मामूली बात है। घर में पानी मुहैया करने के लिए हमने पाईप लाईन ले रखी है, और पानी को ठंडा करने के लिए कूलर और फ्रिज मौजूद है। चुनाँचे आपने फ्रिज से ठंडा पानी निकाला और गिलास में भरा और पी लिया। अब बज़ाहिर यह नज़र आ रहा है कि इस ठंडे पानी का हासिल होना हमारी अपनी मेहनत और

कोशिश और पैसा ख़र्च करने का नतीजा है। लेकिन यह ख़्याल बहुत कम लोगों को आता है कि यह एक गिलास ठंडा पानी जो हमने एक लम्हे में हलक़ से नीचे उतार लिया, इस पानी को हमारे हलक़ तक पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला के परवर्दिगारी निज़ाम का अज़ीम कारख़ाना किस तरह काम कर रहा है।

ज़िन्दगी पानी पर निर्भर है

देखिए! पानी ऐसी चीज़ है कि इस पर इनसान की ज़िन्दगी का दारोमदार है। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

तर्जुमाः और हमने हर जानदार को पानी ही से पैदा किया।

(सूरः अम्बिया आयत 30)

इसलिए पानी सिर्फ़ इनसान का ही नहीं बल्कि हर जानदार का असल पैदाईश का माद्दा भी है और उसकी ज़िन्दगी का दारोमदार भी इसी पर है। इसी लिए अल्लाह तआला ने इस कायनात में पानी इतनी बड़ी मात्रा में पैदा फ़रमाया कि अगर इस रूए-ज़मीन पर एक तिहाई ख़ुश्की है तो दो तिहाई समन्दर की शक्ल में पानी है, और उस समन्दर में भी बेशुमार मख़्लूक़ात की दुनिया आबाद है जो हर रोज़ पैदा हो रहे हैं और मर रहे हैं। अगर समन्दर का यह पानी मीठा होता तो जो जानवर उस पानी में मरकर सड़ते हैं उनकी वजह से वह पानी ख़राब हो जाता, इसलिए अल्लाह तआला की शान और हिक्मत ने इस पानी को खारा और नमकीन बल्कि कड़वा बनाया ताकि उसके नमकीन तत्व उस पानी को ख़राब होने और सड़ने से महफ़ूज़ रखें।

पानी सिर्फ़ समन्दर में होता तो क्या होता?

फिर भी यह मुम्किन था कि अल्लाह तआला यह फ़रमा देते कि हमने तुम्हारे लिए समन्दर की शक्ल में पानी पैदा कर दिया है और उसको ख़राब होने और सड़ने से महफ़ूज़ रखने के लिए उसके अन्दर नमकियात भी पैदा कर दी हैं। अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने। तुम्हें अगर पानी की ज़रूरत हो तो जाकर समन्दर से पानी भरो और उसको

मीठा करो और पियो और उसको अपने इस्तेमाल में लाओ। अगर यह हुक्म दे दिया जाता तो क्या किसी इनसान के बस में था कि वह समन्दर से पानी लेकर आए और उससे अपनी ज़रूरतें पूरी करे? चलिए! अगर समन्दर से पानी ले भी आए तो उसको मीठा कैसे करें?

पानी को मीठा करने और सप्लाई करने का ख़ुदाई निज़ाम

सऊदी अ़रब में समन्दर के पानी को मीठा करने के लिए एक ज़बरदस्त प्लान्ट करोड़ों और अरबों रुपयों के ख़र्च से स्थापित किया गया है। उसकी वजह से जगह-जगह यह ऐलान लगाया गया है कि इस पानी के मीठा करने के लिए बहुत बड़ी रक़म ख़र्च हुई है इसलिए इसको एहतियात से इस्तेमाल किया जाए। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इनसान की ख़ातिर समन्दर का पानी मीठा करने के लिए यह निज़ाम (व्यवस्था और सिस्टम) बनाया कि समन्दर से "मानसून" के बादल उठाए और उस बादल में ऐसा ख़ुदकार (स्वचालक) प्लान्ट नसब कर दिया कि वह पानी जो समन्दर के अन्दर कड़वा और खारा था जब वह बादल की शक्ल में ऊपर उठता है तो उसकी कड़वाहट दूर हो जाती है और वह पानी मीठा बन जाता है। और फिर वे लोग जो समन्दर से हज़ारों मील दूर आबाद हैं और उनके लिए समन्दर से पानी हासिल करना मुम्किन नहीं है, उन लोगों के लिए अल्लाह तआ़ला ने बादलों की शक्ल में मुफ़्त "कार्गो सर्विस" मुहैया फ़रमा दी।

बादल मुफ़्त कार्गो सर्विस मुहैया करते हैं

पिछले दिनों मैं नारवे गया। वहाँ के लोगों ने बताया कि चूँकि यहाँ का पानी बहुत अच्छा और सेहत बख़्श समझा जाता है इसलिए बहुत-से मुल्क यह पानी यहाँ से मंगाते हैं। चुनाँचे वह पानी बड़े-बड़े कैनटीनों में पानी के जहाज़ों के ज़रिये दूसरे मुल्कों को भेजा जाता है। इसके नतीजे में एक लीटर पानी पर एक डालर ख़र्च आता है जो हमारे हिसाब से बासठ रुपये बनते हैं। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने सारी इनसानियत के लिए इसमें

मुसलमान और काफ़िर की भी क़ैद नहीं, बादलों की शक्ल में यह कार्गो सर्विस मुफ़्त मुहैया कर दी है। ये बादल समन्दर से पानी उठाकर एक किनारे से दूसरे किनारे तक ले जाते हैं और अल्लाह तआला ने ऐसा निज़ाम (सिस्टम) बना दिया कि रूए-ज़मीन का कोई इलाक़ा ऐसा नहीं है जो इस "कार्गो सर्विस" से फ़ायदा न उठाता हो। बादल आते हैं, गरजते हैं, पानी बरसाते हैं और चले जाते हैं।

पानी की ज़ख़ीरा-अन्दोज़ी हमारे बस में नहीं

जब बादलों के ज़रिये हमारे घर तक पानी पहुँचा दिया तो अब अगर यह कह दिया जाता कि हमने तो तुम्हारे घर तक पानी पहुँचा दिया। अब तुम ख़ुद ज़ख़ीरा करके साल भर का पानी जमा कर लो और हौज़ और टन्कियाँ बनाकर उसके अन्दर सुरक्षित रखो। क्या इनसान के लिए यह मुम्किन था कि वह बारिश के मौक़े पर साल भर के लिए पानी का ज़ख़ीरा कर लेता? क्या इनसान के पास ऐसा स्टोरेज निज़ाम है कि साल भर का पानी उसके अन्दर जमा कर ले और फिर पूरे साल उसमें से पानी ले-लेकर इस्तेमाल करे। अल्लाह तआला जानते थे कि इस कमज़ोर और ज़ईफ़ इनसान के बस में यह भी नहीं है, इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस बारिश को जितना तुम जमा कर सकते हो और इस्तेमाल कर सकते हो, कर लो, बाक़ी सारे साल के लिए ज़ख़ीरा करने की ज़िम्मेदारी भी हम ही लेते हैं।

ये बर्फ़ीले पहाड़ कोल्ड स्टोरेज हैं

इसलिए इन बादलों का पानी पहाड़ों पर बरसाया और उन पहाड़ों को इस पानी के लिए "कोल्ड स्टोरेज" बना दिया और उन पहाड़ों पर वह पानी बर्फ़ की शक्ल में महफ़ूज़ कर दिया और इतनी बुलन्दी पर इस पानी को महफ़ूज़ कर दिया कि कोई ख़राब करने वाला उस पानी को ख़राब करने के लिए वहाँ तक न पहुँच सके। और इतने टमप्रेचर पर रखा कि वहाँ से पिघल भी न सके। ये बुलन्द पहाड़ एक तरफ़ इनसान को ख़ुशनुमा नज़ारा मुहैया कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ इनसान के लिए

ज़िन्दगी भर के लिए पानी के ज़ख़ीरे को महफ़ूज़ कर रहे हैं।

दरियाओं और नदियों के ज़रिये पानी पहुँचाना

अगर इस मर्हले पर इनसान से यह कह दिया जाता कि हमने तुम्हारे लिए पहाड़ों पर पानी का ज़ख़ीरा जमा कर दिया है, अब जिसको ज़रूरत हो वहाँ से जाकर ले आया करे। क्या इनसान के लिए यह मुम्किन था कि इन पहाड़ों की चोटियों से उस बर्फ़ को पिघला कर उस पानी को अपनी ज़रूरत में इस्तेमाल करे? यह भी इनसान के बस में नहीं था। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह ज़िम्मेदारी भी हम ही पूरी कर लेते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने सूरज को हुक्म दिया कि तुम अपनी किरणें उस बर्फ़ पर डालो और उस बर्फ़ को पिघलाओ और फिर उस पानी के लिए दरियाओं और नदियों की शक्ल में रास्ते भी अल्लाह पाक ने बना दिए। चुनाँचे वह बर्फ़ पानी की शक्ल में पहाड़ों से नीचे उतरता है और दरियाओं और नदियों की शक्ल में बहता हुआ पूरी दुनिया के अन्दर सप्लाई होता है। इसके अलावा अल्लाह तआला ने ज़मीन की तह में पानी के स्रोत और रगें इस तरह बिछा दीं जिस तरह पाईप लाईनें बिछाई जाती हैं। अब तुम दुनिया के जिस ख़ित्ते (इलाक़े और क्षेत्र) में चाहो ज़मीन खोदो और पानी बरामद कर लो।

यह पानी हमने पहुँचाया है

बस इनसान का सिर्फ़ इतना काम है कि जो पानी अल्लाह तआला ने समन्दर से उठाकर पहाड़ों पर बरसाया और फिर पहाड़ों से पिघला कर ज़मीन के एक-एक गोशे में पहुँचाया है, उस पानी को ज़रा-सी मेहनत करके अपने घर तक ले आए। इसलिए जो पानी तुम अपने हलक़ से उतार रहे हो अगर ग़ौर करो तो यह नज़र आएगा कि इस थोड़े-से पानी पर कायनात की सारी ताक़तें ख़र्च हुई हैं तब जाकर यह पानी तुम्हारे मुँह तक पहुँचा है। इसलिए यह जो कहा जा रहा है कि पानी पीते वक़्त अल्लाह तआला का नाम लो और "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ो। इसके ज़रिये इनसान को इस हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जह किया जा रहा है कि

तुम्हारे हलक़ तक इस पानी का पहुँचना तुम्हारे बाज़ू की ताक़त का करिश्मा नहीं है बल्कि यह अल्लाह तआ़ला का बनाया हुआ निज़ाम है जिसके ज़रिये इनसान इस पानी से सैराब हो रहा है।

जिस्म के हर-हर हिस्से को पानी की ज़रूरत है

फिर हमने गिलास में पानी भरा और उसको हलक़ से नीचे उतार लिया। अब आगे के बारे में हमें नहीं मालूम कि वह पानी कहाँ जा रहा है और जिस्म के किस हिस्से को क्या फ़ायदा पहुँचा रहा है? इस ग़रीब इनसान को इसके बारे में कुछ पता नहीं। बस वह तो इतना जानता है कि मुझे प्यास लगी थी, पानी पिया और वह प्यास बुझ गई। उसको यह मालूम नहीं कि वह प्यास क्यों लगी थी? और प्यास लगने के बाद जब पानी पिया तो उस पानी का अन्जाम क्या हुआ? उसको कुछ नहीं मालूम। अरे तुम्हें प्यास इसलिए लगी थी कि तुम्हारे जिस्म के एक-एक हिस्से को पानी की ज़रूरत थी, सिर्फ़ मुँह को और हलक़ को ही ज़रूरत नहीं थी बल्कि जिस्म के तमाम अंगों को पानी की ज़रूरत थी। अगर जिस्म में पानी न हो तो इनसान की मौत हो जाए। ज़रा किसी को दस्त लग जाते हैं और उसके नतीजे में जिस्म के अन्दर पानी की कमी हो जाती है तो उस वक़्त कमज़ोरी की वजह से इनसान के लिए चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है।

ज़रूरत से ज़ायद पानी नुक़सानदेह है

इसलिए एक तरफ़ तो इनसान के जिस्म के हर-हर हिस्से को पानी की ज़रूरत है, इसलिए इनसान को प्यास लगती है और वह पानी पीता है, और दूसरी तरफ़ यह भी ज़रूरी है कि वह पानी जिस्म के अन्दर ज़रूरत से ज़्यादा न हो जाए। क्योंकि अगर ज़रूरत से ज़्यादा पानी जिस्म के अन्दर जमा हो जाए तो जिस्म पर वरम आ जाता है और सूज जाता है। या यह पानी अगर जिस्म के अन्दर किसी ऐसी जगह पर रुक जाए जहाँ रुकना नहीं चाहिये तो इसके नतीजे में बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं- जैसे अगर वह पानी फेफड़ों में रुक जाए तो इनसान को टी. बी. हो

जाती है। पस्लियों में पानी रुक जाए तो दमा हो जाता है। इसलिए अगर ज़रूरत से ज़्यादा पानी जमा हो जाए तो वह भी इनसान के लिए ख़तरा है। और अगर पानी कम हो जाए या ख़त्म हो जाए तो भी इनसान के लिए ख़तरा है। इनसान के जिस्म के अन्दर पानी एक ख़ास हद तक रहना ज़रूरी है।

जिस्म में आटोमैटिक मीटर लगा हुआ है

पानी की वह हद क्या है? एक इनसान जो अनपढ़ है, जिसको एक हर्फ़ पढ़ना नहीं आता, वह कैसे पहचाने कि कितना पानी मेरे जिस्म में होना चाहिए और कितना नहीं होना चाहिए। इसलिए अल्लाह तआला ने हर इनसान के जिस्म में एक आटोमैटिक मीटर लगा दिया है। जिस वक़्त इनसान के जिस्म को पानी की ज़रूरत होती है तो प्यास लग जाती है। प्यास क्यों लग रही है? इस वजह से नहीं लग रही है कि हलक़ ख़ुश्क है और होंठ ख़ुश्क हैं, बल्कि इस वजह से लग रही है कि तुम्हारे जिस्म को पानी की ज़रूरत है। इनसान को इस ज़रूरत का एहसास दिलाने के लिए अल्लाह तआला ने प्यास को पैदा कर दिया। एक बच्चा जो कुछ नहीं जानता लेकिन यह ज़रूर जानता है कि मुझे प्यास लग रही है, इसको बुझाना चाहिए।

जिस्म के अन्दर पानी क्या काम कर रहा है?

फिर जिस्म के अन्दर पहुँचने के बाद वह पानी जिस्म के अन्दर की पाईप लाईन के ज़रिये उन तमाम मुक़ामात (स्थानों) तक पहुँच रहा है जहाँ इसकी ज़रूरत है। और जो पानी ज़रूरत से ज़ायद है वह जिस्म की सफ़ाई करने के बाद पेशाब के ज़रिये बाहर आ जाता है ताकि वह गन्दा पानी जिस्म के अन्दर बाक़ी न रहे।

हम और आप एक लम्हे के अन्दर पानी पी लेते हैं और यह नहीं सोचते कि वह पानी कहाँ से आया था और किस तरह हमारे मुँह तक पहुँचा। और न यह सोचा कि अन्दर जाने के बाद उसका क्या अन्जाम होने वाला है और कौन उस पानी की निगरानी कर रहा है। इसलिए

"बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" का कलिमा दर असल हमें इन सारे तथ्यों की तरफ़ मुतवज्जह कर रहा है।

हारून रशीद का एक वाक़िआ

हारून रशीद एक बार अपने दरबार में बैठे हुए थे। पीने के लिए पानी मंगवाया। क़रीब में मजज़ूब-सिफ़त बुज़ुर्ग हज़रत बहलूल रहमतुल्लाहि अ़लैहि बैठे हुए थे। जब हारून रशीद पानी पीने लगे तो उन्होंने हारून रशीद से कहा कि अमीरुल्-मोमिनीन! ज़रा एक मिनट के लिए रुक जाएँ। वह रुक गए और पूछा क्या बात है? उन्होंने कहा कि अमीरुल्-मोमिनीन! मैं आप से एक सवाल करना चाहता हूँ वह यह कि आपको इस वक़्त प्यास लग रही है और पानी का गिलास आपके हाथ में है। यह बताएँ कि अगर आपको ऐसी ही प्यास लग रही हो और आप किसी बयाबान या जंगल में हों और वहाँ पानी मौजूद न हो और प्यास शिद्दत की लग रही हो तो आप एक गिलास पानी हासिल करने के लिए कितनी दौलत ख़र्च कर देंगे? हारून रशीद ने जवाब दिया कि अगर सख़्त प्यास के आ़लम में पानी न मिले तो चूँकि पानी न मिलने की सूरत में मौत है, तो अपनी जान बचाने के लिए मेरे पास जितनी दौलत होगी, ख़र्च कर दूँगा ताकि जान बच जाए। यह जवाब सुनने के बाद हज़रत बहलूल मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि अब आप "बिस्मिल्लाह" पढ़कर पानी पी लीजिए।

पूरी बादशाहत की क़ीमत एक गिलास पानी से भी कम है

जब बादशाह पानी पी चुके तो हज़रत बहलूल मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि अमीरुल्-मोमिनीन! मैं एक सवाल और करना चाहता हूँ। उन्होंने पूछा कि क्या सवाल है? बहलूल मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि सवाल यह है कि यह पानी जो आपने अभी पिया है, अगर यह पानी आपके जिस्म के अन्दर ही रह जाए और बाहर न निकले और पेशाब बन्द हो जाए। अब मसाने के अन्दर पेशाब भरा हुआ है और बाहर निकालने की कोई सूरत नहीं तो उसको बाहर निकालने के

लिए कितनी दौलत ख़र्च कर देंगे? हारून रशीद ने जवाब दिया कि अगर पेशाब न आए बल्कि पेशाब आना बन्द हो जाए और मसाना पेशाब से भर जाए तो यह सूरत भी ना-क़ाबिले बरदाश्त है। इसलिए अगर कोई शख़्स इसके इलाज के लिए जितनी दौलत माँगेगा मैं उसको दे दूँगा यहाँ तक कि अगर कोई शख़्स पूरी बादशाहत भी माँगेगा तो मैं दे दूँगा। बहलूल रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि अमीरुल्-मोमिनीन! इसके ज़रिये मैं यह हक़ीक़त बताना चाहता था कि आपकी पूरी हुकूमत और बादशाहत की क़ीमत एक गिलास पानी पीने और उसको बाहर निकालने के बराबर भी नहीं है। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आपको सारा निज़ाम मुफ़्त में दे रख है। मुफ़्त में पानी मिल रहा है और मुफ़्त में ख़ारिज हो (निकल) रहा है इसके निकालने के लिए कोई क़ीमत देनी और कोई परेशानी उठानी नहीं पड़ती।

"बिस्मिल्लाह" के ज़रिये यह एतिराफ़ करना है

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला ने हर इनसान को यह निज़ाम मुफ़्त में दे रखा है। क्योंकि उसने न कोई पैसा ख़र्च किया और न ही मेहनत उठाई। इसलिए यह जो हुक्म दिया जा रहा है कि पानी पीने से पहले "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ो। इसके ज़रिये इस तरफ़ तवज्जोह दिलाई जा रही है कि यह सब अल्लाह तआ़ला के परवर्दिगारी निज़ाम का करिश्मा है, और इसके ज़रिये यह एतिराफ़ (तस्लीम करना और इक़रार) भी हो रहा है कि ऐ अल्लाह! हमारे बस में यह नहीं था कि हम यह पानी पी सकते। अगर आपका बनाया हुआ यह पालनहारी कारख़ाना न होता तो हम तक यह पानी कैसे पहुँचता। आपने महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से हम तक यह पानी पहुँचाया। और जब यह पानी आपने ही पहुँचाया है तो ऐ अल्लाह! हम आप ही से यह दरख़्वास्त और दुआ़ करते हैं कि जो पानी हम पी रहे हैं यह पानी जिस्म के अन्दर जाने के बाद ख़ैर का सबब बने और कोई ख़राबी और गड़बड़ी न फैलाए। क्योंकि अगर इस पानी में बीमारियाँ और ख़राबियाँ होंगी तो यह पानी जिस्म में

फ़साद मचाएगा। इसी तरह अगर जिस्म के अन्दर के निज़ाम में ख़राबी पैदा हो जाए- जैसे जिगर अपना काम करना छोड़ दे तो वह पानी जिस्म के अन्दर तो जाएगा लेकिन उस पानी को साफ करने का और गन्दगी को बाहर फेंकने का जो निज़ाम है वह ख़राब हो जाएगा। इसलिए हम पानी पीते वक़्त दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! इस पानी का अन्जाम भी ख़ैर के साथ फ़रमा दे।

इनसानी गुर्दे की कीमत

कराची में गुर्दे के एक माहिर हैं। उनसे एक बार मेरे भाई साहिब ने पूछा कि आप इनसानी गुर्दा एक इनसान के जिस्म से निकाल कर दूसरे इनसान के जिस्म में मुन्तकिल कर देते हैं लेकिन अब तो साइंस ने बड़ी तरक़्क़ी कर ली है तो कोई मस्नूई (निर्मित और तैयार किया हुआ) गुर्दा क्यों नहीं बना लिया जाता ताकि दूसरे इनसान के गुर्दे को इस्तेमाल करने की ज़रूरत ही पेश न आए? वह हंसकर जवाब देने लगे कि अव्वल तो साइंस की इस तरक़्क़ी के बावजूद मस्नूई गुर्दा बनाना मुश्किल है। क्योंकि अल्लाह तआला ने गुर्दे के अन्दर जो छलनी लगाई है वह इतनी लतीफ़ और बारीक है कि अभी कोई ऐसी मशीन ईजाद नहीं हुई जो इतनी बारीक और महीन झिल्ली बना सके। अगर मान लो कोई ऐसी मशीन ईजाद भी कर ली जाए जो ऐसी छलनी बना सके तो उसकी तैयारी पर अरबों रुपये ख़र्च होंगे। और अगर अरबों रुपये ख़र्च करके ऐसी छलनी बना भी ली जाए तब भी गुर्दे के अन्दर एक चीज़ ऐसी है जिसको बनाना हमारी ताक़त से बाहर है। वह यह कि गुर्दे के अन्दर अल्लाह तआला ने एक दिमाग़ बनाया है जो यह फ़ैसला करता है कि उस आदमी के जिस्म में कितना पानी रखना चाहिए और कितना पानी बाहर फेंकना चाहिए। हर इनसान का गुर्दा उस इनसान के हालात के मुताबिक़, उसकी जसामत (डील-डोल) के मुताबिक़ और उसके वज़न के मुताबिक़ यह फ़ैसला करता है कि कितना पानी उसके जिस्म में रहना चाहिए और कितना पानी बाहर फेंकना चाहिए। और उसका यह फ़ैसला सौ फ़ीसद दुरुस्त होता है। इसके

नतीजे में वह उतना पानी जिस्म में रोकता है जितने पानी की ज़रूरत होती है और ज़रूरत से ज़ायद पानी को पेशाब की शक्ल में बाहर फेंक देता है। इसलिए अगर हम अरबों रुपये ख़र्च करके रबड़ का मस्नूई (निर्मित/ नक़ली) गुर्दा बना लें तब भी हम उसमें दिमाग़ नहीं बना सकते जो अल्लाह तआ़ला ने हर इनसान के गुर्दे में पैदा फ़रमाया है।

जिस्म के अन्दर परवर्दिगार का कारख़ाना

कुरआन करीम बार-बर इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहा है कि:

यानी और क्या तुम अपनी जानों में ग़ौर नहीं करते।

(सूरः ज़ारियात आयत 21)

तुम अपनी जानों में ग़ौर किया करो कि तुम्हारे जिस्म में हमारी कामिल कुदरत और मुकम्मल हिक्मत का क्या कारख़ाना काम कर रहा है, इस पर कभी-कभी ग़ौर किया करो। और इस गुर्दे का अन्जाम भी अल्लाह तआ़ला की कुदरत के क़ब्ज़े में है कि कब तक यह गुर्दा काम करे और कब यह काम करना बन्द कर दे। इसलिए "बिस्मिल्ला-हिर्रह्मानिर्रहीम" का यह पैग़ाम है कि एक तरफ़ यह याद करो कि यह पानी तुम्हारे पास कैसे पहुँचा और दूसरी तरफ़ यह ख़्याल करो कि यह पानी तुम्हारे जिस्म के अन्दर जाकर फ़साद (ख़राबी और गड़बड़ी) न फैलाए बल्कि यह पानी सेहत और बरकत का सबब बने और इस बिस्मिल्लाह के पढ़ने में एक तरफ़ अल्लाह तआ़ला की कामिल कुदरत और हिक्मत का एतिराफ़ है और दूसरी तरफ़ यह दुआ़ और दरख़्वास्त है कि हम इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला से दुआ़ और दरख़्वास्त कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! हम यह पानी पी तो रहे हैं लेकिन ऐ अल्लाह! यह पानी अन्दर जाकर कहीं फ़साद का सबब न बन जाए बल्कि यह पानी सेहत और बेहतराई का सबब बने। पानी पीने से पहले "बिस्मिल्ला-हिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ने का यह फ़ल्सफ़ा है। इसलिए पानी पीते वक़्त इस फ़ल्सफ़े को सामने रखकर फिर देखो कि पानी पीने में क्या लुत्फ़ है और क्या बरकत है और इस तरह पानी पीने को अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए

इबादत भी बना देंगे और इस पर अज्र व सवाब भी अता फ़रमाएँगे।

मुहब्बत और डर पैदा होगा

और जब पानी पीते वक़्त यह फ़ल्सफ़ा सामने रखेंगे तो क्या इसके नतीजे में उस ज़ात से मुहब्बत पैदा नहीं होगी? जब तुम इस तसव्वुर के साथ पानी पियोगे तो यह चीज़ तुम्हारे दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत में इज़ाफ़ा करेगी और अल्लाह तआला की बड़ाई में इज़ाफ़ा करेगी और उस मुहब्बत के नतीजे में तुम्हारे दिल में अल्लाह का डर पैदा होगा और फिर यह डर तुम्हें गुनाहों से भी रोक देगा।

काफ़िर और मुसलमान के पानी पीने में फ़र्क

एक काफ़िर भी पानी पीता है लेकिन वह ग़फ़लत की हालत में पानी पीता है, अपने ख़ालिक़ और मालिक को याद नहीं करता। एक मोमिन भी पानी पीता है लेकिन इस तसव्वुर और ध्यान के साथ पीता है। अगरचे पानी की नेमत अल्लाह तआला ने काफ़िर को भी दे रखी है और मोमिन को भी दे रखी है। लेकिन एक ऐसे शख़्स की पानी पीने की कैफ़ियत में जो नाशुक्रा है, और एक ऐसे शख़्स के पानी पीने में जो शुक्रगुज़ार है, इन दोनों में कुछ तो फ़र्क होना चाहिए। वह फ़र्क यह है कि मोमिन को चाहिए कि वह ध्यान के साथ अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए पानी पिये और अल्लाह तआला की नेमतों का एहसास और एतिराफ़ (इक़रार) करते हुए पानी पिये और बरकत की दुआ करते हुए पानी पिए। अल्लाह तआला हमें इन हकीक़तों को समझने और इन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

वुज़ू के दौरान की मस्नून दुआएँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ۔

(سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

हदीस में बयान हुई और मक़बूल दुआओं की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) का बयान पिछले कई जुमों से चल रहा है। पिछले जुमे को वुज़ू के अज़कार (दुआओं और वज़ीफ़ों) का बयान शुरू किया था और यह अ़र्ज़ किया था कि वुज़ू के शुरू करने से पहले जो ज़िक्र सुन्नत है वह "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" है। इसकी कुछ तफ़सील पिछले जुमे को अ़र्ज़ कर दी थी।

वुज़ू के दौरान की मस्नून दुआ

वुज़ू करने के दौरान जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो दुआ कसरत से माँगा करते थे वह यह दुआ है:

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी

तीन जुमलों की कामिलिय्यत

यह दुआ तीन जुमलों पर आधारित है। पहला जुमला है:

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह की मग़फ़िरत फ़रमा।

दूसरा जुमला है:

व वस्सिअ् ली फ़ी दारी

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे घर में कुशादगी और वुस्अ़त पैदा फ़रमा।

तीसरा जुमला है:

व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमा।

अगर आप ग़ौर करें तो यह नज़र आएगा कि ये तीनों जुमले (वाक्य) ऐसे हैं कि अगर एक बार भी अल्लाह तआ़ला इस दुआ़ को क़बूल फ़रमा लें तो दुनिया व आख़िरत में इनसान का बेड़ा पार हो जाए। क्योंकि यह गुनाहों की मग़फ़िरत, घर की कुशादगी और रिज़्क़ की बरकत की दुआ़ है। अगर इनसान को यह बात हासिल हो जाए कि उसके गुनाहों की मग़फ़िरत हो जाए और उसके घर में कुशादगी हासिल हो जाए और रिज़्क़ में बरकत हो जाए तो इनसान को और क्या चाहिए। दुनिया और आख़िरत की सारी हाजतें और सारे मक़ासिद और सारे उद्देश्य नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन तीनों जुमलों में समेट दिए हैं। क्योंकि इनमें से पहली दुआ़ आख़िरत के बारे में है और दूसरी दुआएँ दुनिया से मुताल्लिक़ हैं।

पहला जुमला: मग़फ़िरत तलब करना

पहला जुमला जो आख़िरत से मुताल्लिक़ है वह यह है:

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा।

अब अगर किसी को मग़फ़िरत मिल गई तो उसको आख़िरत की सारी नेमतें हासिल हो गईं क्योंकि जन्नत में जाने में रुकावट ये गुनाह हैं।

जब अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत फ़रमा दें तो यह रुकावट दूर हो गयी और जन्नत पक्की हो गयी। कोई भी इनसान ऐसा नहीं है जो गुनाहों से पाक हो, ग़लतियों से ख़ाली हो। हर इनसान से कभी न कभी कोई ग़लती कोई गुनाह छोटा या बड़ा हो जाता है, और कोई इनसान ऐसा नहीं है जो अल्लाह तआ़ला की मग़फ़िरत से बेनियाज़ हो। सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक ज़ात ऐसी थी जिनको मुकम्मल तौर पर गुनाहों से पाक कहा जा सकता है। आपकी ज़ात गुनाहों से इस तरह मासूम थी कि कोई गुनाह आपसे हो ही नहीं सकता, और अगर कोई छोटी-मोटी भूल-चूक हो भी गयी तो उसके बारे में भी अल्लाह तआ़ला ने ऐलान फ़रमा दिया है:

लि-यग़्फ़ि-र लकल्लाहु मा त-क़द्द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र

यानी अल्लाह तआ़ला ने अगली-पिछली तमाम भूल-चूक को भी माफ़ फ़रमा दिया है।

इसके बावजूद सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः मैं रोज़ाना सत्तर बार अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

और यह सत्तर का लफ़्ज़ भी गिनती के बयान के लिए इरशाद नहीं फ़रमाया बल्कि कसरत (अधिकता) की तरफ़ इशारा करने के लिए बयान फ़रमाया, जिसका मतलब यह है कि सत्तर से ज़्यादा बार आप इस्तिग़फ़ार किया करते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मग़फ़िरत तलब करना

इसके बावजूद अल्लाह तआ़ला यह हुक्म फ़रमा रहे हैं:

तर्जुमाः ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आप फ़रमाइये कि ऐ परवर्दिगार! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा, और आप सारे रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले हैं।

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम खुद भी कसरत से इस्तिग़फ़ार फ़रमा रहे हैं और अल्लाह तआ़ला ने भी आपकी मग़फ़िरत का ऐलान फ़रमा दिया है, इसके बाद भी आप से यह कहा जा रहा है कि आप मुझसे मग़फ़िरत तलब करें, ऐसा क्यों?

नामालूम गुनाहों से इस्तिग़फ़ार

बात दर असल यह है कि इनसान ज़्यादा से ज़्यादा यह कर सकता है कि जिस चीज़ को वह गुनाह और बुराई समझता है वह उसी से परहेज़ कर लेगा, लेकिन बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं कि इनसान को इस बात का ख़्याल भी नहीं आता कि मुझसे यह ग़लत काम हुआ है, हालाँकि हक़ीक़त में वह ग़लत काम होता है।

जैसे हम नमजा़ पढ़ते हैं। यह नमाज़ हक़ीक़त में तो बड़ी इबादत है, बड़े सवाब का काम है। अल्लाह तआ़ला की बन्दगी है। लेकिन जिस अन्दाज़ में हम नमाज़ पढ़ते हैं कि जैसे ही तकबीरे तहरीमा "अल्लाहु अकबर" कहकर नीयत बाँधी तो बस एक बटन खुल गया और फिर वह ज़बान आटोमैटिक तरीक़े पर चल रही है। न अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान है न अल्लाह तआ़ला की बड़ाई का ध्यान है। और जो अलफ़ाज़ ज़बान से निकल रहे हैं न उनकी तरफ़ तवज्जोह है। दिल कहीं है दिमाग़ कहीं है, ध्यान कहीं है। अगर नमाज़ के बाद यह पूछा जाए कि पहली रकअ़त में कौनसी सूरत पढ़ी और दूसरी रकअ़त में कौनसी सूरत पढ़ी थी तो कभी-कभी वह भी याद नहीं आता। हालाँकि यह नमाज़ दर हक़ीक़त अल्लाह तआ़ला के दरबार में हाज़िरी है और तमाम हाकिमों के हाकिम के दरबार में हाज़िरी है। अगर एक मामूली से बादशाह और हुकूमत के किसी मामूली से लीडर के दरबार में तुम्हारी हाज़िरी हो जाए और वहाँ पर यह रवैया इख़्तियार करो कि बादशाह के सामने खड़े हो और तुम्हारा दिमाग़ अपने दफ़्तर में हो या घर में हो या तिजारत में हो, न तुम उस बादशाह की बात सुन रहे हो और न तुम्हें इस बात का ध्यान है कि मैं बादशाह के दरबार में क्या दरख़्वास्त पेश कर रहा हूँ तो बादशाह के दरबार में ऐसी हाज़िरी क़ाबिले सज़ा होनी चाहिए कि तुम बादशाह के दरबार में आए हो या अपना कारोबार करने आए हो। असल तक़ाज़ा तो

यह था कि हाज़िरी को मुँह पर मार दिया जाए और इस हाज़िरी पर सज़ा दी जाए।

हमारी नमाज़ें उनकी शान के मुताबिक नहीं

लेकिन अल्लाह तआ़ला का बड़ा करम है कि हमारी इन ज़्यादतियों के बावजूद हमारी तरफ से इन कोताहियों के बावजूद महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से इन नमाज़ों को क़बूल फ़रमा लेते हैं। इसलिए यह नमाज़ जिसको हम इबादत कह रहे हैं हक़ीक़त पहचानने वाली निगाहों से देखो तो यह नमाज़ अल्लाह तआ़ला की तौहीन है। मगर इस तरह नमाज़ पढ़ते हुए हमें कभी यह ख़्याल भी नहीं आता कि हम कोई गुनाह कर रहे हैं। इसलिए बहुत-सी चीज़ें ऐसी होती हैं जिनके बारे में यह ख़्याल भी नहीं आता लेकिन हक़ीक़त में वे मग़फ़िरत के क़ाबिल होती हैं। इसी लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई किः

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमारी मग़फ़िरत फ़रमाइए और हम पर रहम फ़रमाइए और हमें माफ़ कर दीजिए और करम फ़रमाइए और हमारे उन गुनाहों से दरगुज़र कीजिए जो आपके इल्म में हैं क्योंकि आपके इल्म में हमारे वे गुनाह भी हैं जो हमारे इल्म में नहीं।

ये गुनाह हमने किये थे लेकिन हमें इनके गुनाह होने का पता नहीं। इसलिए कोई इनसान किसी भी लम्हे इस्तिग़फ़ार से बेनियाज़ (बेपरवाह) नहीं हो सकता।

तौबा से दरजों में तरक़्क़ी

इस्तिग़फ़ार की शक्ल में अल्लाह तआ़ला ने इनसान को ऐसा नुस्ख़ा-ए-कीमिया अ़ता फ़रमाया है कि यह मिट्टी को सोना बना दे और गन्दगी और नजासत को पाक चीज़ में तब्दील कर दे। गुनाह गन्दगी और नजासत है। लेकिन अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब मेरा बन्दा गुनाह करने के बाद सच्चे दिल से इस्तिग़फ़ार करता है और तौबा करता है तो वह गुनाह उसके दरजों की तरक़्क़ी का सबब बन जाता है। गुनाह हो जाने के बाद जब दिल में नदामत, शर्मिन्दगी और आ़जिज़ी पैदा हुई और

अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू किया और कहा या अल्लाह! मुझसे सख़्त ग़लती हुई, अपनी रहमत से मुझे माफ़ फ़रमा दें तो यह माफ़ी इनसान के दरजों की बुलन्दी का ज़रिया बन जाती है और इस इस्तिग़फ़ार के ज़रिये अल्लाह तआला गन्दगी को भी पाकी से तब्दील फ़रमा देते हैं। इसलिए हर-हर मर्हले पर इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिए यहाँ तक कि इबादत के बाद भी इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

नमाज़ के बाद इस्तिग़फ़ार क्यों है?

हदीस शरीफ़ में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब नमाज़ से सलाम फेरते थे तो सलाम फेरने के बाद पहला लफ़्ज़ जो ज़बान से अदा फ़रमाते, वह तीन बार इस्तिग़फ़ार होता था। अस्तग़फ़िरुल्लाह! अस्तग़फ़िरुल्लाह! अस्तग़फ़िरुल्लाह! अब सोचने की बात तो यह है कि इस्तिग़फ़ार तो किसी गुनाह के बाद होना चाहिए लेकिन यहाँ तो एक इबादत अन्जाम दी और एक सवाब का काम किया, उसके बाद इस्तिग़फ़ार क्यों किया? इस्तिग़फ़ार इस बात से किया कि या अल्लाह! नमाज़ अदा करने का जो हक़ था वह हमसे अदा नहीं हो सका। ऐ अल्लाह! हमसे आपकी इबादत का हक़ अदा नहीं हो पाया, न जाने कितनी कोताहियाँ और कितनी ग़लतियाँ इस इबादत के अन्दर हुईं। ऐ अल्लाह! हम पहले आप से उन कोताहियों और ग़लतियों पर मग़फ़िरत माँगते हैं जो हम से इस नमाज़ के अदा करने के दौरान हुई हैं।

हर इबादत के बाद दो काम करो

एक रिवायत में आता है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब कोई शख़्स कोई इबादत अन्जाम दे तो उस इबादत को अन्जाम देने के फ़ौरन बाद दो काम करे, चाहे वह इबादत नमाज़ हो, तिलावत हो, सदक़ा हो, रोज़ा हो, ज़िक्र हो, इन सब के बाद दो काम अन्जाम दे। एक यह कि ''अल्हम्दु लिल्लाह'' कहे और दूसरे ''अस्तग़फ़िरुल्लाह'' कहे। अल्हम्दु लिल्लाह इस बात पर कहे कि ऐ अल्लाह! आपने मुझे यह इबादत अन्जाम देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी।

अगर आप तौफ़ीक़ न देते तो मुझसे यह इबादत अन्जाम न पाती। अगर आपकी तौफ़ीक़ न होती तो हमें हिदायत न मिलती। अगर आपकी तौफ़ीक़ न होती तो हमें नमाज़ पढ़ने और रोज़े रखने की तौफ़ीक़ न होती। इसलिए पहले उस इबादत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा कर लो कि उसने इतनी तौफ़ीक़ दे दी कि उसकी बारगाह में आकर खड़े हो गए वरना कितने लोग हैं जो इससे मेहरूम हैं।

इबादत का हक़ अदा न हो सकने पर इस्तिग़फ़ार

फिर उसके बाद "अस्तग़फ़िरुल्लाह" कहे कि या अल्लाह! इस इबादत का जो हक़ था वह मुझसे अदा न हो सका। जिस तरह इस इबादत को अदा करना चाहिये था उस तरह अदा नहीं किया। इसलिए ऐ अल्लाह! मैं इस कोताही पर आप से माफ़ी माँगता हूँ। इसलिए इनसान किसी भी लम्हे इस्तिग़फ़ार से बेनियाज़ नहीं हो सकता। यह बड़ी अज़ीम दौलत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर जो दुआएँ तालीम फ़रमाईं उनमें इस्तिग़फ़ार को भी शामिल फ़रमाया। इसलिए वुज़ू के दौरान की दुआ में भी पहला जुमला यह इरशाद फ़रमाया:

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी

ज़ाहिरी और बातिनी मैल-कुचैल दूर हो जाए

वुज़ू के दौरान इस जुमले को पढ़ने में एक बारीक नुक्ता यह है कि जिस वक़्त इनसान वुज़ू करता है तो उसके ज़रिये वह अपने ज़ाहिरी अंगों के मैल-कुचैल को साफ़ करता है। इस जुमले के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वुज़ू करने वाले को इस तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा रहे हैं कि वह अपने बातिनी (अन्दर के) मैल-कुचैल की सफ़ाई का भी ख़्याल करे और उसकी भी फ़िक्र करे। कहीं ऐसा न हो कि वुज़ू के ज़रिये उसने अपने चेहरे को तो धोकर साफ़ कर लिया और अब वह चेहरा साफ़-सुथरा नज़र आ रहा है लेकिन बातिन के अन्दर गुनाहों की गन्दगी जमी हुई है, तो फिर इस ज़ाहिरी सफ़ाई का भी कोई फ़ायदा नहीं। इसलिए फ़रमाया कि जब तुम ज़ाहिरी अंगों को धो रहे हो और उनका

मैल-कुचैल दूर कर रहे हो तो उस वक़्त तुम अल्लाह तआ़ला से अन्दरूनी मैल-कुचैल की सफ़ाई भी माँगो और कहो "अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी" ऐ अल्लाह! मेरे अन्दर के मैल-कुचैल को भी साफ़ कर दीजिए और मेरे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए।

छोटे और बड़े दोनों क़िस्म के गुनाहों की माफ़ी

इस दुआ़ में एक और नुक्ता यह है कि हदीस शरीफ़ में आता है कि सग़ीरा (छोटे) गुनाह तो वुज़ू के ज़रिये खुद बखुद माफ़ होते रहते हैं चाहे तौबा करें या न करें, इसलिए जो सग़ीरा गुनाह हाथों के ज़रिये किये हैं वुज़ू में हाथ धोने से वे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। आँख से जो गुनाह किये हैं वे चेहरा धोने से माफ़ हो जाते हैं। कान से जो गुनाह किये हैं वे कान का मसह करने से माफ़ हो जाते हैं। जो गुनाह पाँव के ज़रिये चलकर किये हैं वे पाँव धोने से माफ़ हो जाते हैं। इसलिए सग़ीरा (छोटे) गुनाह तो इस तरह खुद माफ़ हो जाते हैं, लेकिन कबीरा (बड़े) गुनाह खुद माफ़ नहीं होते जब तक तौबा न की जाए। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह तरतीब बता रहे हैं कि सग़ीरा गुनाह तो अल्लाह तआ़ला खुद माफ़ फ़रमा रहे हैं अलबत्ता कबीरा और बड़े गुनाहों के लिए अल्लाह तआ़ला से इस वक़्त मग़फ़िरत माँग लो और कहो:

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी

ऐ अल्लाह! जो मेरे बड़े गुनाह हैं उनकी भी मग़फ़िरत फ़रमा। इस तरह सग़ीरा व कबीरा दोनों क़िस्म के गुनाह माफ़ हो जाएँगे, क्योंकि अल्लाह तआ़ला की सुन्नत (तरीक़ा और आ़दत) यह है कि जो बन्दा नेक-नीयती से अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत माँगता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फ़िरत फ़रमा ही देते हैं। बहरहाल! यह जुमला तो आख़िरत से मुताल्लिक़ है।

घर में दोनों तरह की कुशादगी मतलूब है

इसके बाद दो जुमले दुनिया से मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाए। पहला जुमला यह इरशाद फ़रमाया- "व वस्सिअ् ली फ़ी दारी" यानी ऐ अल्लाह!

मेरे घर में कुशादगी (बड़ा और खुला हुआ होना) अ़ता फ़रमा।

इसी वजह से उलमा ने फ़रमाया कि घर की कुशादगी मतलूब है, तंगी मतलूब नहीं। और यह कुशादगी दो तरह की होती है एक कुशादगी ज़ाहिरी होती है कि घर लम्बा-चौड़ा है, कमरे बड़े हैं, सेहन बड़ा है, बरामदा लम्बा-चौड़ा है। एक कुशादगी तो यह है। दूसरी कुशादगी मानवी (हक़ीक़ी और बातिनी) है, वह यह कि जब आदमी घर के अन्दर जाए तो उसके दिल को सुकून नसीब हो, आराम और राहत नसीब हो। लेकिन अगर घर तो बहुत बड़ा है, बड़ी कोठी और बंगला है मगर जब घर में दाख़िल होता है तो घर वालों का रवैया और बीवी-बच्चों का व्यवहार ऐसा है जिससे इनसान को तकलीफ़ और तंगी होती है और उसके घर में उसको आराम और सुकून नहीं मिलता। तो उस सूरत में घर की ज़ाहिरी कुशादगी (बड़ा होना) किस काम की। वह कुशादगी बेकार है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो कुशादगी माँगी उसके अन्दर दोनों तरह की कुशादगी दाख़िल है। यानी अल्लाह तआ़ला ज़ाहिरी कुशादगी भी अ़ता फ़रमाए और बातिनी कुशादगी भी अ़ता फ़रमाए ताकि जब मैं घर में जाऊँ तो राहत और सुकून नसीब हो।

घर की असल ख़ूबी "सुकून" है

कुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए सुकून की जगह बनाया। (सूरः नहल आयत 80)

इसलिए घर का सबसे आला वस्फ़ (गुण और ख़ूबी) यह है कि उसके अन्दर जाने के बाद इनसान को सुकून नसीब हो। अगर सुकून नसीब नहीं फिर वह घर चाहे कितना ही बड़ा बंगला हो उसका कुछ फ़ायदा नहीं। और अगर झोंपड़ी हो और उसके अन्दर सुकून हासिल हो जाए तो वह बड़े-बड़े महलों से बेहतर है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मेरे घर में कुशादगी अ़ता फ़रमा।

घर में ख़ूबसूरती से ज़्यादा कुशादगी मतलूब है

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ नहीं फ़रमाई कि मेरे घर को ख़ूबसूरत बना दीजिए या मेरे घर को आ़लीशान बना दीजिए बल्कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "कुशादगी" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया। मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि इस जुमले से यह बात मालूम हुई कि घर की असल सिफ़त यह है कि उसमें कुशादगी हो तंगी न हो, क्योंकि अगर तंगी हुई तो इनसान के लिए तकलीफ़देह होगी और कुशादगी इनसान के लिए राहत का सबब होगी। बाक़ी टीप-टाप और सजावट ये ज़ायद चीज़ें हैं। इनसान की असल ज़रूरत यह है कि घर के अन्दर कुशादगी हो, इसलिए आपने यह दुआ़ फ़रमाई।

तीन चीज़ें नेकबख़्ती की निशानियाँ हैं

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें इनसान की ख़ुशनसीबी में हैं- एक अच्छी बीवी, दूसरे कुशादगी वाला घर, तीसरे ख़ुशगवार और आरामदेह सवारी। इसलिए आपने यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे घर में कुशादगी अ़ता फ़रमा।

दिलों का मिला हुआ होना कुशादगी में दाख़िल है

फिर "कुशादगी" का लफ़्ज़ इतना विस्तृत है कि इसके मायने सिर्फ़ यह नहीं हैं कि घर बड़ा हो, बल्कि इसके अन्दर यह बात भी दाख़िल है कि घर वालों के दिल आपस में एक-दूसरे के साथ मिले हुए हों। अगर घर तो बड़ा है लेकिन घर वालों के दिल मिले हुए नहीं हैं तो वह घर बड़ा होने के बावजूद घर की राहत उसमें हासिल नहीं हो सकेगी। इसलिए इस दुआ़ के अन्दर यह बात भी दाख़िल है कि घर के माहौल के अन्दर राहत मिले। यह न हो कि घर में दाख़िल होकर इनसान एक अ़ज़ाब के अन्दर मुब्तला हो जाए।

बरकत की दुआ़ की वजह

तीसरा जुमला इरशाद फ़रमायाः

व बारिक् ली फी रिज़्की

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे रिज़्क में बरकत अता फरमा।

इस जुमले में भी ग़ौर करने की बात यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ नहीं फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मुझे बहुत ज़्यादा रिज़्क अता फ़रमा, मेरे माल में इज़ाफ़ा फ़रमा। बल्कि यह दुआ फ़रमाई कि मेरे रिज़्क में बरकत अता फ़रमा। इसके ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सबक़ दे दिया कि माल-दौलत हो या दुनिया के और साज़ो-सामान हों, चाहे खाने-पीने का सामान हो या पहनने और ओढ़ने का सामान हो, या घर के अन्दर इस्तेमाल करने का सामान हो, ये सब रिज़्क के अन्दर दाख़िल हैं। बहरहाल! ये जितने भी सामान हैं सिर्फ़ इनकी गिनती बढ़ जाने से कुछ नहीं होता या बैंक बैलेंस बढ़ जाने से कुछ नहीं होता जब तक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस माल में बरकत न हो।

माँगने की चीज़ "बरकत" है

अगर अल्लाह तआ़ला बरकत अता फ़रमा दें तो मज़दूरी की थोड़ी-सी तन्ख़्वाह में भी बरकत अता फ़रमा देते हैं जिससे उसको सुकून और चैन नसीब हो जाता है। अगर अल्लाह तआ़ला बरकत उठा लें तो करोड़पति और अरबपति इनसान के लिए उसका माल राहत का सबब बनने के बजाए उल्टा अ़ज़ाब का सबब बन जाता है। इसलिए फ़रमा दिया कि अल्लाह तआ़ला से माँगने की चीज़ गिनती का इज़ाफ़ा नहीं है बल्कि माँगने की चीज़ बरकत है। गिनती के बारे में तो अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर का ज़िक्र करते हुए सूरः हु-मज़ह् में फ़रमायाः

तर्जुमाः अफ़सोस है उस काफ़िर के लिए जो दूसरों पर ताने मारता फिरता है और दूसरों के ऐब तलाश करता फिरता है, और माल जमा करके फिर हर वक़्त गिनता रहता है। (सूरः हु-मज़ह् आयत 1, 2)

क्योंकि उसको गिनती करने में मज़ा आता है कि अब इतने हो गए और अब इतने हो गए। कुरआन करीम ने इसको मज़म्मत (निन्दा और बुराई) के पैराए में बयान फ़रमाया कि गिनती बढ़ जाने में धोखे ही धोखे

हैं। देखने की चीज़ यह है कि इस गिनती बढ़ने के नतीजे में तुझे सुकून कितना मिला और तुझे राहत और आराम कितना नसीब हुआ। अगर गिनती तो लाखों और अरबों तक पहुँच गयी और जायदादें बना लीं लेकिन खुद जेलख़ाने में पड़ा है तो सारी दौलत राहत का सबब बनने के बजाए उल्टा अज़ाब का सबब बन रही है। उस दौलत में बरकत नसीब नहीं हुई।

दूसरी तरफ़ एक मामूली से मज़दूर को जो आठ घन्टे मेहनत करने के बाद थोड़े से पैसे मिले लेकिन अल्लाह तआला ने उन पैसों में बरकत अता फ़रमाई। उसके नतीजे में उसने भरपूर भूख के साथ खाना खाया, इत्मीनान के साथ वह खाना हज़म हुआ और रात को आठ घन्टे तक भरपूर नींद ली और सुबह ताज़ा दम होकर बेदार हुआ।

सबक़ लेने के क़ाबिल वाक़िआ

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि एक वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं। लखनऊ के एक बहुत बड़े नवाब साहिब बहुत बड़े जागीरदार थे। उनके महल और क़िले थे। नौकर-चाकर और सेवक थे। तरह-तरह की नेमतें उपलब्ध थीं मगर नवाब साहिब के मेदे में एक ऐसी बीमारी हो गई थी जिसकी वजह से उनके चिकित्सक ने यह कह दिया था कि अब आपकी ग़िज़ा सारी उम्र एक ही हो सकती है, वह यह कि बकरी का आधा पाव क़ीमा लिया जाए और उसको मलमल के कपड़े में रखकर उसका जूस निकाला जाए। बस वह जूस आपका भोजन है। इसके अलावा कोई भी चीज़ आप नहीं खा सकते। अब घर में तरह-तरह के खाने पक रहे हैं, फल-फ्रूट मौजूद हैं, मेवे मौजूद हैं, और दुनिया भर की नेमतें मौजूद हैं लेकिन नवाब साहिब को सिर्फ़ क़ीमे का जूस मिलता है और कुछ नहीं मिलता।

अल्लाह तआला यह दौलत ले लें और सुकून की नींद दे दें

एक दिन वह नवाब साहिब दरिया-ए-गोमती के किनारे अपने महल

में बैठे हुए थे और दरिया का नज़ारा कर रहे थे। उन्होंने देखा कि दरिया के किनारे फटे-पुराने कपड़े पहने एक मज़दूर आया। दोपहर का समय था। वह दरिया के किनारे एक पेड़ के साए में बैठ गया। और फिर उसने अपनी गठरी खोली और उसमें से जौ की दो मोटी-मोटी रोटियाँ निकाली और प्याज़ निकाली और फिर उन रोटियों को उस प्याज़ के साथ ख़ूब शौक़ और रग़बत के साथ खाया। फिर दरिया से पानी पिया और फिर उसी पेड़ के नीचे सो गया और ख़र्राटे लेनें शुरू कर दिये।

नवाब साहिब ऊपर से यह सारा मन्ज़र देख रहे थे। नवाब साहिब ने कहा कि मैं इस पर राज़ी हूँ कि यह सारी दौलत, ये कोठी, ये बंगले वग़ैरह ये सब अल्लाह तआला मुझसे ले लें और आराम व सुकून की जो नींद इस मज़दूर को हासिल है वह मुझे मिल जाए। इसलिए दौलत है लेकिन बरकत नहीं।

आज सब कुछ है मगर बरकत नहीं

अगर ग़ौर किया जाए तो यह नज़र आएगा कि हमारा आज का मसला (समस्या) यह है कि आज हमारे पास सब कुछ है लेकिन बरकत नहीं है। जो शख़्स माहाना एक हज़ार रुपया कमा रहा है और वह शख़्स जो माहाना एक लाख रुपये कमा रहा है, दोनों की ज़बान से एक ही जुमला सुनने को मिलेगा कि "गुज़ारा नहीं होता" बल्कि कभी-कभी लाखों कमाने वाला उस मज़दूर के मुक़ाबले में ज़्यादा शिकायत कर रहा होता है जो महीने में दो हज़ार रुपये कमाता है। क्यों? इसलिए कि आज बरकत उठ गई है, न माल में बरकत है, न खाने में बरकत है, न पानी में बरकत है, न लिबास में बरकत है, न वक़्त और समय में बरकत है।

आज वक़्त में बरकत नहीं

आज के दौर में साइंस की ईजादात (आविषकारों) ने इनसान का कितना वक़्त बचाया है। पहले ज़माने में पकाने के लिए चूल्हा झोंकना पड़ता था। लकड़ियों सुलगाई जाती थीं। अगर एक कप चाय बनानी है तो आधा घन्टा चाहिये, मगर आज के दौर में तुमने चूल्हे का कान मरोड़ा

और चूल्हा जल गया और दो मिनट में चाय तैयार हो गई। यानी कि इस चूल्हे ने तुम्हारा आधा घन्टा बचा दिया। लेकिन ज़रा ग़ौर करो कि यह आधा घन्टा कहाँ गया? इसी तरह पहले सफ़र पैदल होते थे या घोड़ों और ऊँटों पर होते थे। आज तेज़ रफ़्तार सवारियाँ मौजूद हैं यहाँ तक कि सिर्फ़ तीन घन्टे में एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में पहुँच सकते हो। चौबीस घन्टों में पूरी दुनिया का चक्कर लगा सकते हो। इसलिए इन तेज़ रफ़्तार सवारियों से हमारा कितना वक़्त बच गया, लेकिन इसके बावजूद यह रोना है कि वक़्त नहीं मिलता, फ़ुरसत नहीं है। नई-नई ईजादों ने जो वक़्त बचाए वे कहाँ गए? ये सब वक़्त बे-बरकती की भेंट हो रहे हैं कि समय और वक़्तों में बरकत नहीं है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वक़्त की बरकत

जब अल्लाह तआ़ला वक़्त में बरकत अ़ता फ़रमाते हैं तो फिर तेईस साल के अन्दर पूरी दुनिया में इन्क़िलाब बरपा हो जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िन्दगी को देखिए! अगर तालीम की तरफ़ नज़र डालें तो ऐसा मालूम होता है कि आप सारी उम्र तालीम ही देते रहे। अगर इस्लाह के काम की तरफ़ देखो तो यह नज़र आएगा कि सारी उम्र लोगों की इस्लाह ही करते रहे। अगर जिहाद के काम को देखो तो यह नज़र आएगा कि आप सारी उम्र जिहाद ही करते रहे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सिर्फ़ तेईस साल में सारे बड़े-बड़े काम अन्जाम दिलवा दिए। यह सब वक़्त की बरकत है। अल्लाह तआ़ला ने सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वक़्तों में जो बरकत अ़ता फ़रमाई थी सरकार के उन गुलामों के वक़्तों में भी वह बरकत अ़ता फ़रमा दी जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गुलामी को सर का ताज समझा। थोड़े वक़्त में अल्लाह तआ़ला ने उनसे भी कितने बड़े-बड़े काम ले लिए।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह० और वक़्त की बरकत

बहुत दूर की बात नहीं। हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि को देखिए! एक हज़ार किताबें छोड़कर दुनिया से तशरीफ़ ले गए। आज अगर कोई आदमी उनकी लिखी हुई किताबों को अव्वल से आख़िर तक सिर्फ़ पढ़ना ही चाहे तो इसके लिए भी सालों चाहिएँ और किताबें लिखने के साथ मजालिस भी जारी थीं। पीरी-मुरीदी का काम भी जारी था। ख़त लिखने और उनका जवाब देने (पत्राचार) का सिलसिला भी जारी था। अल्लाह तआ़ला ने उनके औक़ात (वक़्तों) में यह बरकत अ़ता फ़रमाई थी।

बरकत हासिल है तो सब कुछ हासिल है

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला से असल माँगने की चीज़ बरकत है। जब यह बरकत उठ जाती है तो फिर रोना ही रोना होता है। खाने में रोना, पीने में रोना, पैसे में रोना, मकान में रोना, वक़्त में रोना, हर चीज़ में रोना होता है। यह सब बरकत के अभाव (न होने) की वजह से होता है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ तालीम फ़रमाई कि यह दुआ़ करो: **व बारिक् फी रिज़्क़ी**

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमा।

वह रिज़्क़ चाहे थोड़ा हो लेकिन बरकत वाला हो, फिर देखो उस रिज़्क़ में क्या मज़ा आता है।

तमाम हाजतें इन दुआ़ओं में सिमट गईं

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऊपर बयान हुई जो तीन दुआ़एँ वुज़ू के दौरान पढ़ने के लिए इरशाद फ़रमाया, अगर इनसान पाँचों नमाज़ों के वक़्त वुज़ू करते हुए ये दुआ़एँ माँगे तो कभी न कभी तो अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाएँगे, इन्शा-अल्लाह। और जब इस नीयत से ये दुआ़एँ माँगोगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ये दुआ़एँ माँगी हैं तो मुम्किन नहीं कि ये दुआ़एँ क़बूल न हों।

इन्शा-अल्लाह ज़रूर क़बूल फ़रमाएँगे। और दुनिया व आख़िरत की कोई ज़रूरत ऐसी नहीं है जो इन दुआओं में न सिमट गई हो।

वुज़ू के दौरान की दूसरी दुआ

वुज़ू के दौरान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जो दूसरा ज़िक्र साबित है वह यह है:

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

कुछ रिवायतों में यह आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वुज़ू के दौरान यह ज़िक्र फ़रमाया करते थे। और कुछ रिवायतों में आता है कि वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर यह ज़िक्र फ़रमाया करते थे।

वुज़ू के बाद की दुआ

वुज़ू ख़त्म होने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते थे:

अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनत्तव्वाबी-न वज्अ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से बना दीजिए और पाकी हासिल करने वालों में से बना दीजिए।

इस दुआ की कुछ तफ़सील और बुजुर्गों ने वुज़ू के दौरान जो हर-हर अंग के धोने के वक़्त की दुआएँ बताई हैं, अगर ज़िन्दगी रही तो इन्शा-अल्लाह अगले जुमे को इसकी तफ़सील अ़र्ज़ करूँगा। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से और अपने फ़ज़्ल व करम से हम सबके हक़ में इन दुआओं को क़बूल फ़रमाए। अल्लाह तआ़ला हमारे गुनाहों की भी मग़फ़िरत फ़रमाए, हमारे घरों में भी कुशादगी अ़ता फ़रमाए और हमारे रिज़्क़ में भी बरकत अ़ता फ़रमाए। और वुज़ू को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ अन्जाम देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

वुज़ू के दौरान

हर अंग को धोने की अलग दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ۔

(سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गों और प्यारे भाईयो! पिछले जुमे को उन दुआओं का बयान हुआ था जो दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से वुज़ू के दौरान पढ़ना साबित हैं लेकिन बुज़ुर्गों ने वुज़ू के दौरान हर अंग को धोते वक़्त मुस्तक़िल दुआओं की भी तालीम दी है। ये दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस तरह साबित नहीं कि आप वुज़ू के दौरान फ़लाँ हिस्से (अंग) को धोते वक़्त फ़लाँ दुआ पढ़ा करते थे और फ़लाँ हिस्से को धोते वक़्त फ़लाँ दुआ पढ़ा करते थे। अलबत्ता ये दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ही से दूसरे मौक़ों पर पढ़ना साबित हैं। बुज़ुर्गों ने वुज़ू के दौरान अंगों को धोते वक़्त भी इन दुआओं को पढ़ने की तालीम दी ताकि इनसान का वुज़ू के वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान रहे और अल्लाह तआ़ला से दुआएँ माँगता रहे।

वुज़ू शुरू करते वक़्त की दुआ़

चुनाँचे बुज़ुर्गों ने फ़रमायाः जब आदमी वुज़ू करे तो यह दुआ़ पढ़ेः

बिस्मिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीमि वल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला मिल्लतिल् इस्लामि।

तर्जुमाः उस अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बुलन्द और अ़ज़ीम है और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिसने मिल्लते इस्लाम की दौलत अ़ता फ़रमाई।

गट्टों तक हाथ धोने की दुआ़

उसके बाद जब गट्टों तक हाथ धोए तो यह दुआ़ पढ़ेः

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल् युम्-न वल्बर्-क-त व अऊ़ज़ु बि-क मिनश्शुऊमि वल्-हलाकति।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूँ और नहूसत और तबाही से आपकी पनाह चाहता हूँ।

कुल्ली करने की दुआ़

उसके बाद जब कुल्ली करे तो यह दुआ़ पढ़ेः

अल्लाहुम्-म अ़िन्नी अ़ला तिलावतिल् कुरआनि व ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्ने इबादति-क।

तर्जुमाः या अल्लाह! कुरआन करीम की तिलावत करने पर और आपका ज़िक्र करने पर और आपका शुक्र अदा करने पर और आपकी बेहतर तरीक़े से इबादत करने पर मेरी मदद फ़रमाइए।

नाक में पानी डालते वक़्त की दुआ़

उसके बाद जब नाक में पानी डाले तो यह दुआ़ पढ़ेः

अल्लाहुम्मर्हम्नी राइ-हतल् जन्नति व ला तुरिह्नी राइ-हतन्नारि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे जन्नत की ख़ुशबू सुंघाइए और जहन्नम की ख़ुशबू न सुंघाइए।

चेहरा धोते वक़्त की दुआ

उसके बाद जब चेहरा धोए तो यह दुआ पढ़ेः

अल्लाहुम्-म बय्यिज़् वज्ही यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुन् व तस्वद्दु वुजूहुन्।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ चेहरे स्याह होंगे, उस दिन मेरे चेहरे को सफ़ेद बनाइएगा। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः उस दिन मैदाने हश्र में कुछ चेहरे सफ़ेद चमकते होंगे और कुछ चेहरे स्याह होंगे। (सूरः आलि इमरान आयत 106)

मोमिनों के चेहरे जिन्होंने नेक अ़मल किया होगा, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सफ़ेद होंगे और काफ़िरों के चेहरे स्याह होंगे।

एक और जगह पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी क़ियामत के दिन कुछ चेहरे तो तरोताज़ा होंगे और अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे, और कुछ चेहरे मुरझाए हुए और कुमहलाए हुए होंगे और उनका यह गुमान होगा कि अब हमारे साथ कमर तोड़ने वाला मामला किया जाएगा। (सूरः क़ियामत आयत 22-25)

एक और जगह पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी बहुत से चेहरे उस दिन रोशन, हंसते और ख़ुशियाँ करते होंगे, और कुछ चेहरे ऐसे होंगे कि उन पर उस दिन गुबार और स्याही छायी होगी। यही लोग काफ़िर और फ़ाजिर (बदकार और गुनाहगार) होंगे। (सूरः अ़-ब-स आयत 38 से 42)

क़ियामत के दिन बदन के अंग चमकते होंगे

बहरहाल! मैदाने हश्र ही में चेहरों की स्याही और सफ़ेदी से इनसान को अपने अन्जाम का पता लग जाएगा कि मुझे कहाँ जाना होगा। हदीस

शरीफ़ में आता है कि जो लोग दुनिया में वुज़ू करने के आदी थे अल्लाह तआ़ला उनको इस हाल में उठाएँगे कि उनके चेहरे उनकी पेशानियाँ और उनके हाथ और उनके पाँव, ये सब अंग चमकते होंगे और इस चमक की वजह से दूर से यह नज़र आएगा कि यह बन्दा नमाज़ के लिए वुज़ू किया करता था। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के लोग "गुर्रम् मुहज्जलीन" की सूरत में उठाए जाएँगे यानी उनके चेहरे भी सफ़ेद होंगे और उनके हाथ और पाँव भी सफ़ेद होंगे। चूँकि वह दिन आने वाला है और चेहरे की सफ़ेदी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मक़बूल होने की निशानी है और चेहरे की स्याही अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मरदूद होने की निशानी है, इसलिए बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि वुज़ू के दौरान चेहरा धोते वक़्त यह दुआ़ किया करो किः

अल्लाहुम्-म बय्यिज़् वज्ही यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुन् व तस्वद्दु वुजूहुन्।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा चेहरा उस दिन सफ़ेद रखिये जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ चेहरे स्याह होंगे।

दायाँ हाथ धोने की दुआ़

उसके बाद दायाँ हाथ कोहनी तक धोए तो उस वक़्त यह दुआ़ पढ़ेः

अल्लाहुम्-म अअ्तिनी किताबी बि-यमीनी व हासिब्नी हिसाबंय्-यसीरा।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा नामा-ए-आमाल मुझे दाएँ हाथ में दीजिएगा और मेरा हिसाब आसान फ़रमाइयेगा।

इस दुआ़ में क़ुरआन करीम की उस आयत की तरफ़ इशारा है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा, और फिर वह अपने मुताल्लिक़ीन (मिलने-जुलने वालों और ताल्लुक़ वालों) के पास खुश-खुश आएगा। (सूरः इनशिक़ाक़ आयत 7 से 9)

यानी सरसरी हिसाब लेकर उससे कहा जाएगा कि जाओ। क्योंकि जिस शख़्स से बाक़ायदा हिसाब लिया जाएगा और उससे कहा जाएगा कि अपने एक-एक अ़मल का पूरा हिसाब दो तो उसके बारे में हदीस शरीफ़ में आता है कि:

मन् नूक़िशल् हिसा-ब उज़्ज़ि-ब (अबू दाऊद शरीफ़)

यानी जिस शख़्स से पूरा-पूरा हिसाब लिया जाए और उसको एक-एक अ़मल का जवाब देना पड़े तो आख़िरकार उसका अन्जाम यह होगा कि वह अ़ज़ाब में मुब्तला होगा। अल्लाह तआ़ला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

मजमूई ज़िन्दगी दुरुस्त करने की फ़िक्र करें

यह ईमान की दौलत ऐसी चीज़ है कि जब अल्लाह तआ़ला यह दौलत किसी को अ़ता फ़रमा देते हैं तो उस पर यह करम होता है कि अगर उसकी मजमूई ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी और हुक्मों के पालन) में गुज़री है, अगरचे उससे छोटे-छोटे गुनाह भी हो गए हैं, तो अल्लाह तआ़ला उसके हिसाब-किताब में ज़्यादा जाँच पड़ताल नहीं करेंगे बल्कि उसकी पेशी होगी और पेशी होने के बाद उसका नामा-ए-आमाल सरसरी तौर पर दिखा दिया जाएगा। फिर अल्लाह तआ़ला अपने करम का मामला फ़रमाएँगे और जन्नत में भेज देंगे। लेकिन जिस शख़्स की मजमूई ज़िन्दगी बुरे कामों में गुज़री होगी और वह अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल रहा था और अल्लाह तआ़ला को भूला हुआ था और अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िरी का एहसास ही दिल से जाता रहा था, ऐसे शख़्स से हिसाब पूरा-पूरा लिया जाएगा। और जिस शख़्स से पूरा-पूरा हिसाब लिया जाएगा वह अ़ज़ाब में धर लिया जाएगा। इसलिए ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी फ़रमाया कि यह दुआ़ माँगा करो कि:

ऐ अल्लाह! मेरा नामा-ए-आमाल मुझे दाएँ हाथ में अ़ता फ़रमाइयेगा और मेरा हिसाब आसान लीजिएगा।

अ़रबी के अलफ़ाज़ याद न हों तो उर्दू (या जो भाषा भी आती हो

उस) में यह दुआ कर लिया करो।

बायाँ हाथ धोने की दुआ

उसके बाद जब बायाँ हाथ धोए तो यह दुआ करे:

अल्लाहुम्-म ला तुअ्तिनी किताबी बिशिमाली व ला मिंव्वरा-इ ज़ह्‌री।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा नामा-ए-आमाल मेरे बाएँ हाथ में न दीजिएगा और न पुश्त की तरफ़ से दीजिएगा।

कुरआन करीम में आया है कि मोमिनों और नेक अ़मल करने वालों को उनका नामा-ए-आमाल दाएँ हाथ में दिया जाएगा और काफ़िरों को और बुरे अ़मल वाले लोगों को उनका नामा-ए-आमाल पुश्त की तरफ़ से बाएँ हाथ में दिया जाएगा। इसलिए यह दुआ करनी चाहिये कि:

ऐ अल्लाह! मेरा नामा-ए-आमाल न तो बाएँ हाथ में दीजिए और न पुश्त की जानिब से दीजिए ताकि काफ़िरों और बद-अ़मलों में मेरा शुमार न हो।

सर का मसह करते वक़्त की दुआ

उसके बाद जब इनसान सर का मसह करे तो उसके लिए बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि यह दुआ करनी चाहिये कि:

अल्लाहुम्-म अज़िल्लिनी तह्-त ज़िल्लि अ़र्शि-क यौ-म ला ज़िल्-ल इल्ला ज़िल्लु अ़र्शि-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाइयेगा उस दिन जिस दिन आपके अ़र्श के साए के अ़लावा कोई साया नहीं होगा।

हर मुसलमान जानता है कि जब मैदाने हश्र में लोग जमा होंगे तो वहाँ पर सख़्त गर्मी का आ़लम होगा और सूरज क़रीब होगा। हदीस शरीफ़ में आता है कि लोग उस दिन अपने पसीने में ग़र्क़ होंगे। कुछ लोगों के घुटनों तक पसीना होगा और कुछ लोगों के होंटों तक पसीना होगा। इस तरह लोग अपने पसीने में डूबे हुए होंगे। अल्लाह तआ़ला हश्र के दिन की उस गर्मी से हम सब को महफ़ूज़ रखे, आमीन। इसलिए

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि यह दुआ किया करो कि:

ऐ अल्लाह! जिस दिन आपके अ़र्श के साए के अ़लावा कोई साया नहीं होगा, मुझे उस दिन अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाइएगा।

अ़र्श के साए वाले सात आदमी

हदीस शरीफ़ में आता है कि उस दिन अल्लाह तआ़ला अपने ख़ास बन्दों को अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएँगे उनमें सात तरह के लोगों का ख़ास तौर पर ज़िक्र फ़रमायाः

1. एक वह नौजवान जिसने अपनी जवानी अल्लाह तआ़ला की इबादत में गुज़ारी हो और बचपन ही से अल्लाह तआ़ला ने उसको इबादत का ज़ौक़ अ़ता फ़रमाया हो।

2. दूसरा वह शख़्स जिसका दिल हर वक़्त मस्जिद में अटका हुआ हो। एक नमाज़ पढ़कर घर गया, अब दूसरी नमाज़ का फ़िक्र और उसका इन्तिज़ार लग गया कि मुझे दोबारा मस्जिद में जाना है।

3. तीसरा वह शख़्स जिसको किसी रुतबे वाली और हसीन व ख़ूबसूरत औ़रत ने गुनाह की दावत दी हो लेकिन उसने जवाब में कहा हो कि मैं अल्लाह तआ़ला से डरता हूँ।

4. चौथा वह शख़्स जिसने दूसरे शख़्स से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए मुहब्बत की हो, दुनियावी ग़रज़ के लिए दोस्ती और मुहब्बत न की हो।

5. पाँचवाँ वह शख़्स जिसने दाएँ हाथ से इस तरह सदक़ा दिया हो कि उसके बाएँ हाथ को भी पता न चला हो कि क्या दिया है।

6. छटा वह शख़्स जिसने तन्हाई में अल्लाह तआ़ला को याद किया और इसके नतीजे में उसकी आँखों में आँसू जारी हो गए।

7. सातवाँ इमाम आ़दिल। (इन्साफ़ करने वाला बादशाह और हाकिम) इन लोगों को अल्लाह तआ़ला अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएँगे। इसलिए सर का मसह करते वक़्त यह दुआ़ करनी चाहिये कि या अल्लाह! मुझे उस दिन अ़र्श का साया अ़ता फ़रमा जिस दिन अ़र्श के साए के अ़लावा कोई साया नहीं होगा।

गर्दन के मसह के वक़्त की दुआ

उसके बाद जब आदमी गर्दन का मसह करे तो यह दुआ पढ़े:

अल्लाहुम्-म अअ्तिक् र-क़-बती मिनन्नारि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरी गर्दन को आग (जहन्नम) से आज़ाद कर दीजिए।

दायाँ पाँव धोते वक़्त की दुआ

उसके बाद जब दाहिना पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

अल्लाहुम्-म सब्बित् क़-दमय्-य अ़लस्सिराति यौ-म तज़िल्लु फ़ीहिल् अक़्दामु।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे पाँवों को उस दिन पुलसिरात पर साबित क़दम रखियेगा जिस दिन वहाँ पर लोगों के पाँव फिसल रहे होंगे।

यह पुलसिरात जन्नत के ऊपर एक पुल है जिससे गुज़र कर आदमी जन्नत में जाएगा। जो लोग जहन्नमी होंगे उनके पाँव उस पुल पर फिसल जाएँगे जिसके नतीजे में वे जहन्नम के अन्दर जा गिरेंगे।

पुलसिरात पर हर एक को गुज़रना होगा

हदीस शरीफ़ में आता है कि जहन्नम में लोहे के काँटे लगे हुए हैं। जब कोई जहन्नमी उस पुल के ऊपर से गुज़रेगा तो नीचे से काँटा आकर उसको खींचकर जहन्नम में गिरा देगा। यह वक़्त बहुत सख़्त होगा और हर शख़्स को उस पुल से गुज़रना होगा। क़ुरआन करीम का इरशाद है:

तर्जुमाः यानी तुम में से हर शख़्स को जहन्नम से गुज़रना ही है चाहे वह मोमिन हो या काफ़िर हो, नेक हो या बुरा हो। (सूरः मरियम -71)

लेकिन अगर उसके आमाल अच्छे होंगे और वह फ़रमाँबरदार होगा तो वह बिजली की तरह तेज़ी से उस पुल पर से गुज़र जाएगा। जहन्नम की कोई तपिश उसको नहीं पहुँचेगी। लेकिन अगर वह काफ़िर होगा या गुनाहगार व बदकार होगा तो उस सूरत में जहन्नम के काँटे उसको अपनी तरफ़ खींच लेंगे। इसलिए बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि यह दुआ किया करो कि ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन साबित क़दम रखियेगा जिस दिन लोगों के पाँव

फिसल रहे होंगे।

बायाँ पाँव धोते वक़्त की दुआ

उसके बाद जब बायाँ पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

अल्लाहुम्मज्अ़ल् ज़म्बी मग़फ़ूरंव्-व सअ़्यी मश्कूरन् व तिजारती लन् तबूर।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा दीजिए और मैंने जो कुछ अ़मल किया है अपने फ़ज़्ल से उसका अज्र मुझे अ़ता फ़रमाइए और जो मैंने तिजारत की है यानी जो ज़िन्दगी गुज़ारी है जो हकीक़त में तिजारत ही है, इसका नतीजा आख़िरत में ज़ाहिर होने वाला है, तो ऐ अल्लाह तआ़ला! मेरी ज़िन्दगी की तिजारत को घाटे की तिजारत न बनाइयेगा बल्कि नफ़े की तिजारत होकर आख़िरत में इसका अज्र मुझे मिल जाए।

बहरहाल! बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि वुज़ू के दौरान ये दुआ़एँ पढ़ते रहना चाहिये। बेहतरीन दुआ़एँ हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से भी दूसरे मौक़ों पर इन दुआ़ओं का पढ़ना साबित है। अगरचे वुज़ू के वक़्त पढ़ना साबित नहीं। अगर इनमें से एक दुआ़ भी अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फ़रमा ली तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला बेड़ा पार हो जाएगा। अल्लाह तआ़ला हम सबके हक़ में ये सारी दुआ़एँ क़बूल फ़रमा ले। आमीन।

दुआ़ओं के अ़रबी अलफ़ाज़ याद कर लें और जब तक अ़रबी अलफ़ाज़ याद न हों उस वक़्त तक अपनी ज़बान (उर्दू हिन्दी वग़ैरह) ही में माँग लें तो उस वुज़ू के नतीजे में अल्लाह तआ़ला ज़ाहिरी सफ़ाई के साथ-साथ बातिनी सफ़ाई भी करेंगे। अल्लाह तआ़ला इन दुआ़ओं की बरकत हम सबको अ़ता फ़रमाएँ और हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

वुज़ू के बाद की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَo (سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुजुर्गो और प्यारे भाईयो! अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ क़वी और मज़बूत करने के लिए जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक़बूल दुआओं की तालीम फ़रमाई है। सुबह से शाम तक तुम्हारी ज़िन्दगी में जो मुख़्तलिफ़ मोड़ आते हैं, हर मोड़ के लिए एक दुआ़ तलक़ीन फ़रमा (तालीम फ़रमा और सिखा) दी है कि यह दुआ़ माँगा करो। जब सुबह को नींद से जागो तो यह दुआ़ करो। जब घर से बाहर निकलो तो यह दुआ़ करो। जब बाज़ार जाओ तो यह दुआ़ करो। जब लैट्रीन में जाओ तो यह दुआ़ करो। जब मस्जिद में जाओ तो यह दुआ़ करो, वग़ैरह। इन्हीं मक़बूल दुआओं में से कुछ की तशरीह (व्याख्या और ख़ुलासा) पिछले जुमों में अ़र्ज़ की थी।

वुज़ू के दौरान पढ़ने की दुआ

वुज़ू की दुआओं का बयान चल रहा था। वुज़ू के दौरान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो दुआ पढ़ा करते थे वह यह थी:

अल्लाहुम्मग़फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी।

कुछ रिवायतों में आता है कि वुज़ू के दौरान और बाज़ रिवायतों में आता है कि वुज़ू के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह पढ़ा करते थे:

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

वुज़ू के बाद की दुआ

जब आदमी वुज़ू से फ़ारिग़ हो जाए तो उस वक़्त क्या दुआ करे? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस मौक़े पर दो दुआएँ पढ़ना साबित हैं- एक यह कि:

अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनत्तव्वाबी-न वज्अ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन।

जैसा कि मैंने पहले भी अ़र्ज़ किया था कि जब बन्दा वुज़ू करता है तो ज़ाहिरी सफ़ाई के साथ-साथ अल्लाह तआ़ला बातिनी (उसके अन्दर की) सफ़ाई भी करते जाते हैं और हर अंग के ज़रिये किये गये सग़ीरा (छोटे) गुनाह अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमाते जाते हैं। चुनाँचे एक रिवायत में आता है कि जब बन्दा वुज़ू से फ़ारिग़ होता है तो वह सग़ीरा (छोटे) गुनाहों से पाक हो चुका होता है, अलबत्ता अभी उसके ज़िम्मे कबीरा (बड़े) गुनाह होते हैं। अब कबीरा गुनाहों से पाकी के लिए इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ इरशाद फ़रमाई कि:

अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनत्तव्वाबी-न वज्अ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उन लोगों में से कर दीजिए जो बहुत तौबा करने वाले हैं, और उन लोगों में से बना दीजिए जो तहारत और पाकी हासिल करने वाले हैं।

छोटे गुनाहों के साथ बड़े गुनाहों की भी माफ़ी

इस दुआ में दो जुमले इरशाद फ़रमाए- एक जुमला यह कि मुझे बहुत तौबा करने वालों में से बना दीजिए। इस जुमले के दो अर्थ हो सकते हैं- एक यह कि वुज़ू के ज़रिये सग़ीरा (छोटे) गुनाह तो माफ़ हो गए इसलिए कि सग़ीरा गुनाह नेक आमाल के ज़रिये माफ़ हो जाते हैं, लेकिन कबीरा (बड़े) गुनाहों के बारे में क़ानून यह है कि वे तौबा के बग़ैर माफ़ नहीं होते, इसलिए इस मौक़े पर यह दुआ तलक़ीन फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे सग़ीरा गुनाह तो माफ़ हो गये लेकिन मेरे बड़े-बड़े गुनाह अभी बाक़ी हैं, उनसे पाक होने के लिए ऐ अल्लाह! मुझे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइए ताकि उस तौफ़ीक़ के बाद मैं तौबा करूँ और उसके नतीजे में मेरे कबीरा (बड़े) गुनाह भी माफ़ हो जाएँ।

बार-बार तौबा करने वाला बना दे

इस जुमले का दूसरा अर्थ यह है कि यह नहीं फ़रमाया कि मुझे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइये बल्कि यह फ़रमाया कि मुझे उन लोगों में से बना दीजिए जो बहुत तौबा करने वालों में से हैं। अब सवाल यह है कि यहाँ मुबालग़े का सीग़ा (कलिमा) क्यों इस्तेमाल फ़रमाया जबकि अल्लाह तआला यह फ़रमाते हैं कि जो मुझसे तौबा करेगा मैं उसके गुनाह माफ़ कर दूँगा। अब बहुत तौबा करने का क्या मतलब? मतलब इसका यह है कि या अल्लाह! मैं इस वक़्त तो तौबा कर लूँगा और उसके नतीजे में आप मेरी मग़फ़िरत भी फ़रमा देंगे लेकिन उसके बाद भी मुझे अपने ऊपर भरोसा नहीं है, न जाने कब दोबारा फिसल जाऊँ और फिर दोबारा गुनाह में मुब्तला हो जाऊँ। अगर ऐसा हो जाए तो ऐ अल्लाह! मुझे दोबारा तौबा करने की तौफ़ीक़ दीजिएगा? जिस तरह इनसान के कपड़े एक बार धुलने के बाद दोबारा मैले हो जाते हैं और उनको दोबारा धोने की ज़रूरत पेश आती है इसी तरह इनसान तौबा के ज़रिये पाक हो जाता है और पाक होने के बाद जब वह दोबारा गुनाह करता है तो फिर नापाक हो जाता है और फिर दोबारा तौबा की ज़रूरत पेश आती है। इसलिए यह दुआ

फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! अव्वल तो मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाइये और अगर गुनाह हो जाए तो मुझे दोबारा तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाइये।

बहुत ज़्यादा रुजू करने वाला बना दें

इस जुमले का तीसरा अर्थ यह है कि इसमें लफ़्ज़ "तव्वाब" आया है जिसके मायने हैं "बहुत लौटने वाला और बहुत रुजू करने वाला" दुआ़ के अब मायने यह हुए कि ऐ अल्लाह! मुझे उन लोगों में से बना दीजिए जो हर वक़्त आपसे रुजू करते हैं, हर वक़्त आपकी तरफ़ लौटते हैं। जिन्होंने आपके साथ मज़बूत ताल्लुक़ क़ायम कर रखा है, उनको जब भी कोई मसला पेश आता है तो ये लोग आपकी तरफ़ रुजू करते हैं। यह दुआ़ उस वक़्त की जा रही है जब आदमी अभी वुज़ू से फ़ारिग़ हुआ है और वुज़ू के दौरान भी रिवायतों में आई दुआ़एँ पढ़ता रहा है। अब यह दुआ़ कर रहा है कि या अल्लाह! मुझे कसरत से आपकी तरफ़ रुजू करने वाला बना दीजिए ताकि हर वक़्त मैं आपसे राब्ता क़ायम रखूँ।

बातिन को भी पाक करने वाला बना दें

इस दुआ का दुसरा जुमला यह है:

वज्अ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मुझे उन लोगों में से बना दीजिए जो कोशिश करके पाकी हासिल करते हैं।

"ताहिर" के मायने हैं "पाक" लेकिन लफ़्ज़ मु-ततह्हिरीन अ़रबी ग्रामर के जिस बाब से ताल्लुक़ रखता है उसकी ख़ासियत यह है कि किसी काम के करने में ख़ास कोशिश और मशक़्क़त और तकल्लुफ़ करना। इसलिए इस लफ़्ज़ के मायने यह हुए कि जो एहतिमाम करके और कोशिश करके पाकी हासिल करने वाले हैं। मतलब यह है कि ये वे लोग हैं जो ज़ाहिरी पाकी के साथ-साथ बातिनी (अपने अन्दर की) पाकी भी हासिल करते हैं और अपने दिल की दुनिया को भी पाक करते हैं। इसलिए ऐ अल्लाह! वुज़ु करने के नतीजे में मेरे अंग तो धुल गए और उन पर जो ज़ाहिरी मैल-कुचैल था वह भी चला गया लेकिन अब मेरे

बातिन का मैल-कुचैल भी दूर कर दीजिए। वुज़ू के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक तो यह दुआ़ पढ़ना साबित है।

वुज़ू के बाद की दूसरी दुआ़

वुज़ू के बाद एक और ज़िक्र भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है। आप यह पढ़ा करते थेः

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्द-क ला शरी-क ल-क अस्तग़फ़िरु-क व अतूबु इलै-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपकी पाकी बयान करता हूँ और आपकी तारीफ़ बयान करता हूँ। आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आपका कोई शरीक नहीं, आपसे इस्तिग़फ़ार करता हूँ और तौबा करता हूँ।

इस दुआ़ में भी वही बात दोबारा आ गई यानी छोटे-छोटे गुनाह तो वुज़ू से ख़ुद बख़ुद माफ़ हो गए थे, बड़े गुनाह के लिए तौबा की ज़रूरत थी इसलिए वुज़ू के बाद आपने यह दुआ़ फ़रमाईः

अस्तग़फ़िरु-क व अतूबु इलै-क

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपसे मग़फ़िरत माँगता हूँ और आपसे तौबा करता हूँ।

इसलिए तौबा के ज़रिये कबीरा (बड़े) गुनाहों को भी माफ़ करा लिया।

ऐसा शख़्स मेहरूम नहीं रहेगा

आप ज़रा सोचें कि जो इनसान दिन में पाँच बार वुज़ू करेगा और वुज़ू करने के दौरान वह वे दुआ़एँ पढ़ेगा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तालीम फ़रमाई हैं और हर वुज़ू के बाद यह कहेगा कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे मग़फ़िरत माँगता हूँ और तौबा करता हूँ। तो गोया कि वह शख़्स दिन में पाँच बार अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा और इस्तिग़फ़ार करेगा, तो क्या अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दे की तौबा क़बूल नहीं फ़रमाएँगे? क्या ऐसे बन्दे को अल्लाह तआ़ला अपने साथ मज़बूत ताल्लुक़ नहीं अ़ता फ़रमाएँगे? जो बन्दा यह कह रहा है कि ऐ अल्लाह! मुझे अपनी तरफ़ रुजू करने वाला बना दीजिए और अपनी तरफ़ माईल होने

वाला बना दीजिए। तो क्या ऐसे बन्दे को अल्लाह तआ़ला मेहरूम फ़रमा देंगे? हरगिज़ नहीं! अरे वह तो रहमान व रहीम हैं, वह तो हमारे परवर्दिगार हैं। अगर एक बेटा अपने बाप से या अपनी माँ से रोज़ाना दिन में पाँच बार एक दरख़्वास्त करे और वह दरख़्वास्त भी नामाकूल (ग़लत और ग़ैर-मुनासिब) न हो तो क्या कोई बाप ऐसा होगा जो उसकी दरख़्वास्त कुबूल नहीं करेगा? ज़रूर कुबूल करेगा। अल्लाह तआ़ला तो माँ-बाप से कहीं ज़्यादा रहीम व करीम हैं। वह कैसे बन्दे की इस दुआ़ को रद्द फ़रमा देंगे, बल्कि इन्शा-अल्लाह तआ़ला यह दुआ़ ज़रूर कुबूल होगी और कुबूल होने के नतीजे में अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को अपने साथ मज़बूत ताल्लुक़ अ़ता फ़रमाएँगे और उस ताल्लुक़ के नतीजे में इन्शा-अल्लाह उसकी ज़िन्दगी दुरुस्त हो जाएगी।

बहरहाल! ये वुज़ू के बाद पढ़ने की दुआ़एँ थीं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तलक़ीन फ़रमाईं। अल्लाह तआ़ला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ .

(سورةالبقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! फ़ज्र की नमाज़ के लिए जब मुसलमान बेदार होगा (सोकर उठेगा) और वुज़ू करेगा और वुज़ू के बाद फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने के लिए मस्जिद की तरफ़ जाएगा तो फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त रास्ते में जो दुआ पढ़ना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है वह यह है:

अल्लाहुम्मज्अल् फ़ी क़ल्बी नूरन् व फ़ी ब-सरी नूरन् व फ़ी समूअी नूरन् व अन् यमीनी नूरन् व अन् यसारी नूरन् व फ़ौक़ी नूरन् व तह्ती

नूरन् व अमामी नूरन् व ख़ल्फ़ी नूरन् वजअल्-ली नूरन् व अअ्ज़िम् ली नूरन् अल्लाहुम्-म अअ्तिनी नूरन्।

तर्जुमा व तशरीहः ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर पैदा फ़रमा दीजिए। देखिए! फ़ज्र का वक़्त है और आदमी फ़ज्र की नमाज़ के लिए जा रहा है, उस वक़्त में रात का अन्धेरा छाया रहता है और दिन की रोशनी आ रही होती है। दिन की रोशनी की आमद के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ माँग रहे हैं कि ऐ अल्लाह! यह ज़ाहिरी रोशनी तो आप फैला रहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ मेरे दिल में भी नूर अ़ता फ़रमाइये। मेरी आँखों में नूर अ़ता फ़रमाइये। मेरे कानों में नूर अ़ता फ़रमाइये। मेरी दाईं तरफ़ नूर हो, मेरी बाईं तरफ़ नूर हो, मेरे ऊपर नूर हो, मेरे नीचे नूर हो, मेरे आगे नूर हो, मेरे पीछे नूर हो। ऐ अल्लाह! मेरे लिए नूर मुक़र्रर फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! मेरे नूर को बड़ा कर दीजिए। ऐ अल्लाह! मुझे नूर अ़ता फ़रमाइये।

एक रिवायत में इस लफ़्ज़ की बढ़ौतरी है कि "वज्अ़ल्नी नूरन्" ऐ अल्लाह! मुझे सरापा (पूरा-का-पूरा) नूर बना दीजिए। फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह नियम था कि यह दुआ पढ़ा करते थे।

ऐसा शख़्स मेहरूम नहीं रहेगा

अगर एक शख़्स रोज़ाना बिना नाग़ा सुबह के वक़्त नमाज़ के लिए जाते हुए रास्ते में यह दुआ माँग रहा है कि ऐ अल्लाह! मुझे सरापा नूर बना दीजिए, मेरे दिल में नूर हो, मेरी आँखों में नूर हो, मेरे कानों में नूर हो, मेरे आगे मेरे पीछे मेरे ऊपर मेरे नीचे, मेरे दाएँ मेरे बाँए नूर हो, मेरे हर तरफ़ नूर हो। ऐ अल्लाह! मुझे नूर बना दीजिए, तो क्या अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ क़बूल नहीं फ़रमाएँगे? जो शख़्स रोज़ाना यह दुआ माँग रहा हो और ऐसे वक़्त में जबकि वह बिस्तर को छोड़कर नींद की क़ुरबानी देकर अपनी ख़्वाहिशात को कुचलकर अल्लाह तआ़ला के लिए निकला है, वुज़ू करके पाक-साफ़ होकर अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिए जा रहा है, क्या उसकी दुआ क़बूल नहीं फ़रमाएँगे? क्या उसको नूर

अता नहीं फ़रमाएँगे? ज़रूर अता फ़रमाएँगे।

दिल के अन्दर नूर होने का मतलब

फिर हर चीज़ का नूर अलग होता है। चिराग़ और बिजली का नूर रोशनी है। आँखों का नूर बीनाई है लेकिन यह बीनाई ज़ाहिरी नूर है। अलबत्ता हर चीज़ का हक़ीक़ी और बातिनी नूर यह है कि जब अंगों में वह नूर पैदा हो तो ये अंग अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल हों। यह है असल नूर। इसलिए इस दुआ में यह जो फ़रमाया कि मेरे दिल में नूर हो। दिल में नूर होने का मतलब यह है कि मेरे दिल में ऐसे ख़्यालात आएँ जो रोशन हों। ऐसे इरादे पैदा हों जो नूर वाले हों और अल्लाह तआला की रिज़ा के मुताबिक़ हों। और दिल के अन्दर से निफ़ाक़ की बीमारी दूर हो, दिल के अन्दर से तकब्बुर की बीमारी दूर हो, दिल के अन्दर से हसद निकल जाए, हिर्स निकल जाए, माल व पद की मुहब्बत निकल जाए और उसकी जगह अल्लाह तआला की मुहब्बत दिल में पैदा हो और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत दिल में पैदा हो, नेकियों की मुहब्बत दिल में पैदा हो, यह सब दिल का नूर है। जब इनसान रोज़ाना अल्लाह तआला से यह नूर माँगेगा तो क्या अल्लाह तआला उसको नूर नहीं देंगे? ज़रूर देंगे। अलबत्ता माँगने वाला सच्चे दिल से माँगे, नीयत की बेहतराई से माँगे, तवज्जोह और एहतिमाम से माँगे और ध्यान से माँगे तो इन्शा-अल्लाह यह नूर ज़रूर अता होगा।

आँख में नूर होने का मतलब

और इस दुआ में यह जो फ़रमाया कि मेरी आँखों में नूर पैदा फ़रमा। इसका मतलब यह है कि वह आँख जायज़ और हलाल चीज़ को देखे और नाजायज़ चीज़ से परहेज़ करे। ऐसी चीज़ को देखे जिसको देखने के लिए अल्लाह तआला ने यह आँख बनाई है। इसका दुनिया में भी फ़ायदा है और आख़िरत में भी फ़ायदा है।

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने दीनी बयानों में एक हदीस नक़ल की है कि

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि एक शख़्स अपने घर में दाख़िल हुआ और उसने अपनी बीवी को मुहब्बत की निगाह से देखा और बीवी ने शौहर को मुहब्बत की निगाह से देखा तो अल्लाह तआ़ला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं। यह आँख का जायज़ और मुस्तहब बल्कि वाजिब इस्तेमाल है।

माँ-बाप को देखने से हज व उमरे का सवाब

एक और हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर औलाद अपने बाप को या माँ को या दोनों को मुहब्बत की निगाह से देखें तो एक बार उन पर मुहब्बत की निगाह डालना एक मक़बूल हज और एक मक़बूल उमरे का सवाब रखता है। अब हम हज के लिए कितनी मेहनत करते हैं और उमरा करने के लिए कितनी मशक़्क़त उठाते हैं, लेकिन जिसको अल्लाह तआ़ला ने माँ-बाप की नेमत अ़ता की हुई है वह दिन में सैकड़ों बार हज व उमरे का सवाब हासिल कर लेता है। यह आँख का सही इस्तेमाल है। लेकिन अगर यह आँख नाजायज़ जगह पर पड़े जैसे लज़्ज़त हासिल करने की नीयत से नामेहरम को देखे या किसी को हिक़ारत की (गिरी हुई) निगाह से देखे, ज़िल्लत की निगाह से देखे, तो यह इस आँख का नाजायज़ इस्तेमाल है। या कोई इस आँख को दूसरे का दिल दुखाने के लिए इस्तेमाल करे, या कोई ऐसी चीज़ इस आँख से देखे जिसको उसका मालिक छुपाना चाहता है तो यह आँख का नाजायज़ इस्तेमाल है।

दूसरों के घरों में झाँकना

एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब किसी दूसरे के घर जाओ तो पहले इजाज़त ले लो। इजाज़त लेने से पहले किसी के घर में दाख़िल होना जायज़ नहीं। इसी हदीस में आपने यह भी इरशाद फ़रमाया कि:

मन् न-ज़-र फ़क़द् द-ख़-ल

यानी एक शख़्स अभी दूसरे के घर में दाख़िल नहीं हुआ और अभी

उसको घर में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं मिली लेकिन वह घर के अन्दर झाँक रहा है। जैसे कुछ लोगों की आदत होती है कि जब वह इजाज़त लेने के इन्तिज़ार में दरवाज़े पर खड़े होते हैं तो खड़े-खड़े अन्दर झाँकना शुरू कर देते हैं। इसके बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि इजाज़त के बग़ैर अन्दर झाँकना भी जायज़ नहीं।

एक वाकिआ

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। आपके हाथ में एक कंघी थी जिसके ज़रिये आप अपने जिस्म पर खुजला रहे थे। अचानक आपकी नज़र दरवाज़े पर पड़ी तो देखा कि कोई शख़्स दरवाज़े के सुराख़ से अन्दर झाँक रहा है। अब ज़ाहिर है कि जो साहिब अन्दर झाँक रहे थे उनकी नीयत ख़राब नहीं होगी क्योंकि आ़म तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर में कोई ऐसी चीज़ होती नहीं थी कि आदमी चोरी करने या डाका डालने के लिए आए। बज़ाहिर वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत में झाँक रहा था कि आपको देखूँ कि आप क्या कर रहे हैं, इसलिए उनकी नीयत बज़ाहिर ख़राब नहीं थी लेकिन चूँकि इजाज़त के बग़ैर झाँक रहे थे इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब उनको इस तरह झाँकते हुए देखा तो उनसे फ़रमाया कि तुमने इतना बड़ा गुनाह किया है कि तुम इस लायक़ हो कि इस कंघी से तुम्हारी आँख फोड़ दी जाए।

यह निगाह का ग़लत इस्तेमाल है

एक दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स दूसरे के घर में इजाज़त के बग़ैर देखे और वह घर वाला उस देखने वाले शख़्स की आँख फोड़ दे तो वह शख़्स अपने आपको मलामत करे, फोड़ने वाले को मलामत न करे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इतनी सख़्त सज़ा इसकी बयान फ़रमाई। बहरहाल! यह निगाह का ग़लत इस्तेमाल है। इसी तरह एक शख़्स का घर

ऊँचा है और दूसरे शख़्स का घर नीचे की तरफ़ है और ऊपर घर वाला शख़्स नीचे वाले घर में झाँक रहा है तो यह निगाह का ग़लत इस्तेमाल है, नाजायज़ इस्तेमाल है।

आँखों के ज़रिये गुनाह और सवाब दोनों कमा सकते हो

इसलिए इस निगाह के ज़रिये अगर कोई शख़्स चाहे तो रोज़ाना बीसियों बार हज और उमरे का सवाब हासिल कर सकता है। और इस निगाह के ज़रिये अपने दामन में अल्लाह तआ़ला की रहमत जमा कर सकता है। और यही निगाह है कि अगर इनसान इसको ग़लत इस्तेमाल करेगा तो उसके नामा-ए-आमाल में गुनाहों का अंबार जमा होता रहेगा। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरी आँख में नूर अ़ता फ़रमाइये। इस नूर से मुराद ज़ाहिरी बीनाई (आँखों की रोशनी) नहीं, ज़ाहिरी बीनाई तो अल्हम्दु लिल्लाह पहले से मौजूद है, बल्कि इस नूर से मुराद आँख का नूर है जो आँख को जायज़ इस्तेमाल की हद के अन्दर सीमित रखे और उसको गुनाहों से महफ़ूज़ रखे।

कान में नूर होने का मतलब

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे कान में नूर अ़ता फ़रमा। अब कान में नूर अ़ता फ़रमाने का यह मतलब नहीं है कि उस नूर के नतीजे में कान में कोई बल्ब जल जाएगा या कोई चिराग़ जल जाएगा, बल्कि कान में नूर अ़ता होने का मतलब यह है कि वह कान सही कामों में इस्तेमाल हो, नाजायज़ कामों से वह बचे जैसे उसके ज़रिये क़ुरआन करीम की तिलावत सुनी जाए जिसके नतीजे में एक-एक लफ़्ज़ तुम्हारे नामा-ए-आमाल में नेकियों का इज़ाफ़ा कर रहा है। इस कान के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात सुनो और दीन की बातें सुनो तो उस सूरत में यह कान इबादत में लगा हुआ है। अल्लाह पाक इस पर अज्र व सवाब अ़ता फ़रमा रहे हैं।

कान का सही इस्तेमाल

एक शख़्स किसी के पास दीन का इल्म हासिल करने के लिए जाता है या दीन की बात सुनने के लिए जाता है तो उसके बारे में हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः जो शख़्स इल्म की बात सुनने के लिए किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआ़ला उस रास्ते पर चलने की वजह से उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देते हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

इसलिए अगर कोई शख़्स घर से चलकर मस्जिद की तरफ़ आता है और नमाज़ पढ़ने के साथ-साथ उसके दिल में यह नीयत भी है कि मैं मस्जिद में जाकर दीन की बातें सुनूँगा और क़ुरआन करीम की तालीमात और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात और दीन के अहकाम सुनूँगा तो यह कान का सही इस्तेमाल है, इसके नतीजे में उसको हदीस में बयान की हुई वह फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी।

कान का ग़लत इस्तेमाल

लेकिन अगर कोई शख़्स इस कान के ज़रिये बुरी बातें सुनता है, या गाना बजाना सुनता है, या नामेहरमों की आवाज़ से मज़ा उठाने के लिए उनकी बातें सुनता है, या इस कान के ज़रिये ग़ीबत सुनता है तो यह सब कान का ग़लत और नाजायज़ इस्तेमाल है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ माँग रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मेरे कान में नूर अ़ता फ़रमा। यानी यह कान जायज़ और हलाल काम में इस्तेमाल हो और नाजायज़ और हराम काम से बचे, और यह कान जन्नत में ले जाये और जहन्नम से बचाए। यह कान का नूर है।

दाएँ-बाएँ आगे-पीछे नूर होना

इसके बाद यह दुआ़ फ़रमाई कि मेरे दाएँ नूर अ़ता फ़रमा, मेरे बाएँ नूर अ़ता फ़रमा, मेरे आगे नूर अ़ता फ़रमा और मेरे पीछे नूर अ़ता फ़रमा। यानी ऐ अल्लाह! मैं जिस जगह भी चलकर जाऊँ वहाँ मुझे नूरानी माहौल अ़ता फ़रमाइये। ऐसा माहौल हो जो मुझे नेकियों पर उभारे और

गुनाहों से बचाए। जो मुझे आपकी याद दिलाए और मेरे दिल में आख़िरत की फ़िक्र पैदा करे।

शैतान चार तरफ़ से हमला करता है

जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला शैतान को जन्नत से निकाल रहे थे तो पहले तो उसने यह चालाकी की कि अल्लाह तआ़ला से यह मोहलत माँग ली कि ऐ अल्लाह! मुझे क़ियामत तक ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा दें। क़ियामत तक मुझे मौत न आए। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उसको क़ियामत तक ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा दी। जब उसको मोहलत मिल गई तो फिर कहता है कि अब मैं आपकी मख़्लूक़ को गुमराह करूँगा। क़ुरआन करीम में है:

तर्जुमाः यानी इनसान को गुमराह करने के लिए उसके आगे से, उसके पीछे से, उसकी दाईं तरफ़ से और उसकी बाईं तरफ़ से आऊँगा। चारों तरफ़ से इनसान पर हमले करूँगा। आप उनमें से अक्सर बन्दों को शुक्रगुज़ार नहीं पाएँगे और आपके अहकाम की तामील (पालन) नहीं करेंगे। (सूरः आराफ़ आयत 17)

अगरचे अल्लाह तआ़ला ने शैतान से उसी वक़्त फ़रमा दिया था कि यह तुम क्या कह रहे हो कि मैं दाईं तरफ़ से आऊँगा और बाईं तरफ़ से आऊँगा और चारों तरफ़ से आऊँगा, और आप अक्सर बन्दों को शुक्रगुज़ार नहीं पाएँगे! यह तू क्या शेख़ी बघारता है, हक़ीक़त यह है कि:

मेरे बन्दों पर दाँव नहीं चलेगा

तर्जुमाः यानी जो मेरे बन्दे होंगे उन पर तेरा कोई क़ाबू नहीं चलेगा। उन पर तेरा कोई वार कारगर नहीं होगा। हाँ तेरा वार उन पर कारगर होगा जो मेरी बन्दगी से हटे हुए होंगे। (सूरः हिज्र आयत 42)

जो मेरा बन्दा नहीं बनना चाहते और मेरी बन्दगी से दूर भागना चाहते हैं वे तेरे जाल में आ जाएँगे, लेकिन जहाँ तक मेरे बन्दों का ताल्लुक़ है, यानी जिनको अपने बन्दा होने का एहसास होगा और उस एहसास होने के नतीजे में वे मुझसे रुजू करते रहेंगे और यह कहते रहेंगे कि या अल्लाह! हम तेरे बन्दे हैं, हमें इस शैतान से बचा ले। मेरे उन

बन्दों पर तेरा दाँव नहीं चलेगा। उन पर तेरा क़ाबू नहीं होगा। मगर वे लोग जो गुमराह हैं, जिनको यह एहसास ही नहीं कि हम अल्लाह के बन्दे हैं, जो इस ज़मीन पर ख़ुदा बनकर रहना चाहते हैं, फ़िरऔन बनकर रहना चाहते हैं, वे तेरे दाँव में आ जाएँगे, लेकिन मेरे बन्दों पर तेरा दाँव नहीं चलेगा।

मेरे बन्दे कौन हैं?

अब सवाल यह पैदा होता है कि मेरे "बन्दे" से क्या मुराद है? क्योंकि तमाम इनसान अल्लाह के बन्दे हैं। इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने "मेरे बन्दे" कहकर इस तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि इससे वे बन्दे मुराद हैं जिनके दिल में अपने बन्दा होने का जज़्बा हो, बन्दगी का जज़्बा हो और जो मुझसे रुजू करें। जहाँ शैतान गुमराह करे और अपना दाँव चलाए तो वे फ़ौरन मेरी तरफ़ रुजू करें कि या अल्लाह! यह शैतान मुझे परेशान कर रहा है, यह मुझे बहकाना चाहता है, ऐ अल्लाह! मुझे बचा लीजिए। ऐसे बन्दों पर शैतान का दाँव नहीं चलेगा।

शैतान के हमले से बचाव

इसलिए चूँकि शैतान ने यह कहा था कि मैं इनसान को बहकाने के लिए दाएँ से, बाएँ से, आगे से, पीछे से आऊँगा, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! हमारे आगे भी नूर अ़ता फ़रमा, पीछे भी नूर अ़ता फ़रमा, दाएँ भी नूर अ़ता फ़रमा और बाँए भी नूर अ़ता फ़रमा। वह शैतान तो अंधकार और तारीकी ला रहा होगा, वह तो बुराईयों का अंधेरा ला रहा होगा। ऐ अल्लाह! आप हमारे आगे और पीछे दाएँ और बाएँ नूर पैदा फ़रमाएँ ताकि उसकी लाई हुई अंधेरी से हमारी हिफ़ाज़त हो जाए। अब जो शख़्स सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त रोज़ाना अल्लाह तआ़ला से यह माँगेगा तो क्या अल्लाह तआ़ला उसको नूर नहीं देंगे? ज़रूर देंगे। अरे! उन्होंने ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिल पर ये अलफ़ाज़ उतारे और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को ये अलफ़ाज़

सिखाए। इसलिए जब उन्हीं की तरफ़ से यह कहा जा रहा है कि मुझसे यह चीज़ इस तरह माँगो तो क्या फिर भी नहीं देंगे? यह काम तो एक मामूली शरीफ़ इनसान भी नहीं कर सकता।

कोई शरीफ़ इनसान भी ऐसा नहीं करेगा

एक फ़क़ीर आदमी था। वह तुम से माँग रहा था। तुमने उससे कहा कि मेरे घर चलो हम तुम्हें देंगे। फिर तुम उसको अपने साथ घर लाए। जब घर पहुँचे तो तुमने उससे पूछा कि बताओ क्या माँगते हो? उस फ़क़ीर ने कहा कि मुझे इतने पैसों की ज़रूरत है। अब तुमने उससे कहा कि भाग जाओ। बताइये कि कोई शरीफ़ इनसान यह काम करेगा? कोई अहमक़ और कमीना शख़्स ही ऐसा काम कर सकता है, क्योंकि घर पर साथ लाया है, इसी लिए लाया है ताकि उसको कुछ दे।

माँगने वाला होना चाहिए

इसी तरह जब अल्लाह तआला ने अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये ये दुआएँ हमसे मंगवाईं और फ़रमाया कि मुझसे माँगो तो इस बात में कोई अदना शक व शुब्हे की भी गुन्जाईश नहीं कि वह नहीं अ़ता करेंगे बल्कि वह ज़रूर अ़ता करेंगे। बस माँगने वाला चाहिये और जब वह नूर अ़ता करेंगे तो फिर शैतान का दाँव हमारे ऊपर नहीं चलेगा, इन्शा-अल्लाह। क्योंकि शैतान में इतनी ताक़त नहीं कि वह हमें ज़बरदस्ती जहन्नम में घसीट कर ले जाए। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः अल्लाह वली है, यानी अल्लाह ज़िम्मेदार है, अल्लाह दोस्त और निगराँ है ईमान वालों का कि उनको अन्धेरों से नूर की तरफ़ निकाल कर लाता है। और जो लोग काफ़िर हैं उनके ज़िम्मेदार और उनके वली और सरपरस्त शयातीन हैं जो उनको नूर से अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं। ये जहन्नम वाले हैं और हमेशा उसमें रहेंगे। (सूरः ब-क़रह् आयत 257)

हम ज़बरदस्ती नूर नहीं देते

इसलिए अल्लाह तआला तो ईमान वालों को अन्धेरों से नूर की तरफ़

निकाल कर लाना चाहता है। इसलिए फ़रमाया कि हमसे नूर माँगो। जब तुम माँगोगे तो हम तुमको ज़रूर देंगे। हाँ! अगर तुम ऐसे बेनियाज़ (बेपरवाह) बन जाओ और यह कहो कि आप नूर दिया करें लेकिन हमें ज़रूरत नहीं, अल्लाह की पनाह! तो उसके बारे में कुरआन करीम में साफ़ इरशाद है किः

तर्जुमाः क्या ज़बरदस्ती हम तुमको दे दें जबकि तुम इसको नापसन्द कर रहे हो? (सूरः हूद आयत 28)

जब तुम नूर लेना नहीं चाहते, जब तुम हिदायत लेना नहीं चाहते, फिर भी हम ज़बरदस्ती तुम पर नूर और हिदायत थोप दें, हम ऐसा नहीं करेंगे।

तलब का इज़हार करके क़दम बढ़ाओ

हम तो यह देखना चाहते हैं कि एक बार तुम्हारी तरफ़ से तलब का इज़हार हो जाए और फिर उस तलब के मुताबिक़ थोड़ा क़दम बढ़ा दो फिर हम तुमको देंगे। जब तुम फ़ज्र की नमाज़ के लिए आ रहे हो उस वक़्त तुम्हारा क़दम ख़ैर की तरफ़, ईमान की तरफ़, नेक अमल की तरफ़ उठा हुआ है, उस वक़्त तुम ज़बान से नूर माँगते हुए चले जाओ, इन्शा-अल्लाह ज़रूर अ़ता फ़रमाएँगे। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे भी और आपको भी और सब मुसलमानों को यह नूरे हिदायत अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ٥

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ .

(سورةالبقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

तम्हीद

मोहतरम बुजुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले कुछ जुमों से हदीस में आई उन दुआओं की तशरीह (व्याख्या और खुलासे) का सिलसिला चल रहा है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ मर्हलों में तलक़ीन (सिखाई और तालीम) फ़रमाई। अब तक चन्द दुआओं की तशरीह बयान कर दी गयी है, यानी नींद से जागते वक़्त की दुआ, वुज़ू के दौरान पढ़ने की दुआएँ और सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त जो दुआ पढ़ी जाती है, आख़िर में इसका बयान हुआ था।

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त यह पढ़ें

उसके बाद इनसान मस्जिद में नमाज़ के लिए दाख़िल होता है। मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त जो दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है वह यह है:

अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क

कुछ रिवायतों में दुआ से पहले बिस्मिल्लाह और दुरूद शरीफ़ के इज़ाफ़े के साथ इस तरह यह दुआ नक़ल की गयी है:

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क

इस रिवायत से मालूम हुआ कि इनसान मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले अल्लाह का नाम ले और "बिस्मिल्लाह" कहे ताकि इसके ज़रिये इस बात का इक़रार हो जाए कि मेरा मस्जिद में आना अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से है, इसलिए मैं अल्लाह का नाम लेकर उसकी नेमत का एतिराफ़ (इक़रार) करके और उसकी तौफ़ीक़ का सहारा लेकर मस्जिद में दाख़िल हो रहा हूँ।

दुआ के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ें

"बिस्मिल्लाह" पढ़ने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़िये और यह कहिये:

वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म

क्योंकि जिस नेकी के करने की तौफ़ीक़ हो रही है वह दर असल हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम व तलक़ीन का सदक़ा है। अगर आपकी तालीमात न होतीं और आपकी रहनुमाई न होती तो किसी इनसान के लिए यह मुम्किन नहीं था कि वह मस्जिद के दरवाज़े तक पहुँच जाए। इस दुरूद शरीफ़ के ज़रिये इस बात का एतिराफ़ (इक़रार) है कि मैं जो मस्जिद के दरवाज़े तक पहुँचा और मस्जिद के अन्दर दाख़िल होने की जो तौफ़ीक़ हो रही है, यह दर हक़ीक़त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अज़ीम (बड़ा) एहसान है। इसलिए जब नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा तो उसके ज़रिये एक तरफ़ आपके एहसान का इक़रार है।

दुरूद शरीफ़ में अपना फ़ायदा भी है

दूसरी तरफ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ना ख़ुद अपने फ़ायदे की चीज़ है। क्योंकि जब कोई शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजता है तो यह एक अदना उम्मती की तरफ़ से दर हक़ीक़त एक हदिया है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पेश किया जा रहा है। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सारी ज़िन्दगी का यह मामूल (नियम) रहा है कि जब कोई शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में कोई हदिया पेश करता तो आप उस हदिये का कोई न कोई बदला किसी भी अन्दाज़ से उसको ज़रूर अ़ता फ़रमाया करते थे। यह आपका ज़िन्दगी भर का मामूल था। इसलिए जब कोई उम्मती नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में दुरूद व सलाम का हदिया पेश करता है तो आपकी सिफ़त "रहमतुल् लिल्आ़लमीन" से यह उम्मीद है कि आप जिस तरह ज़िन्दगी में हर हदिये का बदला दिया करते थे तो इस दुरूद व सलाम के हदिये का बदला भी ज़रूर अ़ता फ़रमाएँगे। अब आ़लमे दुनिया में इसका बदला देना तो मुम्किन नहीं, अलबत्ता आ़लमे आख़िरत में उसका यह बदला हो सकता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस दुरूद व सलाम भेजने वाले उम्मती के हक़ में दुआ़ फ़रमाएँ। इसलिए जब हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में दुरूद व सलाम का हदिया भेजा तो उम्मीद है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़-ए-मग़फ़िरत और दुआ़-ए-रहमत हमारे शामिले हाल हो जाएगी और जब मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ़ हमें मिलेगी तो उसके नतीजे में मस्जिद में दाख़िल होने के बाद ऐसी इबादत करने की तौफ़ीक़ होगी जो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ होगी और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ होगी, इन्शा-अल्लाह।

रहमत के दरवाज़े खुल जाएँ

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद यह दुआ तालीम फ़रमाईः

अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।

यानी ऐ अल्लाह! मस्जिद का दरवाज़ा तो मेरे लिए खुला हुआ है और उसमें दाख़िल हो रहा हूँ लेकिन मेरा मस्जिद के अन्दर दाख़िला उसी वक़्त कारामद और मुफ़ीद हो सकता है जब ऐ अल्लाह! आप मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दें वरना मस्जिद में तो फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बदकार और गुनाहगार) लोग भी दाख़िल हो जाते हैं, तमाशाई भी दाख़िल हो जाते हैं, महज़ सैर व तफ़रीह वाले भी दाख़िल हो जाते हैं, यहाँ तक कि ग़ैर-मुस्लिम भी दाख़िल हो जाते हैं। लेकिन ऐ अल्लाह! मैं मस्जिद में इस आरज़ू के साथ दाख़िल हो रहा हूँ कि मेरा यह दाख़िला आपकी रहमत के दरवाज़े खोलने का सबब बने।

"बाब" के बजाए "अबूवाब" कहने की हिकमत

और फिर इस दुआ में यह नहीं फ़रमायाः

अल्लहुम्मफ़्तह् ली बा-ब रह्मति-क

यानी ऐ अल्लाह! अपनी रहमत का 'दरवाज़ा' खोल दीजिए। बल्कि यह फ़रमायाः "अबूवा-ब रह्मति-क" यानी अपनी रहमत के 'दरवाज़े' खोल दीजिए। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला की रहमत के मुख़्तलिफ़ उनवान हैं। मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ और क़िस्में हैं और हर क़िस्म का एक दरवाज़ा है, इसलिए इसके मायने यह हुए कि ऐ अल्लाह! मैं आपकी रहमत की तमाम क़िस्मों का मोहताज हूँ और मैं उन सबके खोलने की दुआ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे लिए वे सब खोल दीजिए।

रहमत की अलग-अलग क़िस्में हैं

अब अल्लाह तआ़ला की रहमत की क्या-क्या क़िस्में हैं? कोई इनसान उनका इहाता (घेराव) नहीं कर सकता। दुनिया के अन्दर नाज़िल होने

वाली रहमतें अलग-अलग हैं। और फिर दुनिया में नाज़िल होने वाली रहमतों की कई क़िस्में हैं- जैसे सेहत के अन्दर रहमतों की कई-कई क़िस्में है। जिस्म की सेहत अलग एक रहमत है, दिमाग़ की सेहत अलग एक रहमत है, और सर से लेकर पाँव तक जितने अंग हैं उन सबकी सेहत अल्लाह तआला की अलग-अलग रहमतें हैं। उसके दिल पर नाज़िल होने वाली रहमतें, इरादों पर नाज़िल होने वाली रहमतें, ख़्यालात पर नाज़िल होने वाली रहमतें, ये सब अल्लाह तआला की रहमतें हैं। अगर अल्लाह तआला की रहमत न हो तो इनसान सेहतमन्द ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता। अगर अल्लाह तआला की रहमत न हो तो दिल में पाकीज़ा इरादे पैदा नहीं होते बल्कि बुराईयों के इरादे जन्म लेते हैं। इसलिए जब मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए तो इसका मतलब यह है कि आपकी रहमत की जितनी क़िस्में हैं मैं उन सबके दरवाज़े खोलने की दुआ करता हूँ।

"रहमत अ़ता फ़रमा दें" क्यों नहीं फ़रमाया?

फिर एक तरीक़ा माँगने का यह था कि ऐ अल्लाह! मैं आपकी सारी रहमतों का मोहताज हूँ। आप मुझे वे सब रहमतें अ़ता फ़रमा दीजिए। यह कहने के बजाए यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे ऊपर अपनी रहमत के सारे दरवाज़े खोल दीजिए। इससे इस तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि ऐ अल्लाह! मैं इस वक़्त मस्जिद में दाख़िल हो रहा हूँ और एक मुसलमान का मस्जिद में दाख़िल होने का मन्शा यह होता है कि वहाँ जाकर नमाज़ पढ़े और आपकी इबादत करे, तो ऐ अल्लाह! मैं मस्जिद में दाख़िल होकर जिन इबादतों को अन्जाम देने जा रहा हूँ ऐ अल्लाह! ये इबादतें मेरे लिए रहमत के दरवाज़े बन जाएँ। नमाज़ पढ़ूँ तो ऐसी पढ़ूँ जो आपकी रहमत को मुतवज्जह करने वाली हो। तिलावत करूँ तो ऐसी करूँ जो आपकी रहमत को मुतवज्जह करने वाली हो। ज़िक्र करूँ तो ऐसा करूँ जो आपकी रहमत को मुतवज्जह करने वाला हो। इसलिए मैं मस्जिद में इबादत करने के लिए दाख़िल तो हो रहा हूँ लेकिन यह इबादत उसी वक़्त कारामद है

जब आपकी तरफ़ से इख़्लास शामिले हाल हो जाए वरना अगर मैं मस्जिद में दाख़िल भी हो गया और वहाँ जाकर नमाज़ भी पढ़ ली लेकिन वह नमाज़ इख़्लास से नहीं पढ़ी और सुन्नत के मुताबिक़ नहीं पढ़ी बल्कि दिखावे के लिए पढ़ी और ग़लत तरीक़े पर बे-अदबी के साथ पढ़ी तो उस नमाज़ के बारे में अगरचे मुफ़्ती यह फ़तवा देगा कि यह नमाज़ दुरुस्त हो गयी, लेकिन ऐ अल्लाह! आपकी बारगाह में तो क़ाबिले क़बूल न होगी और आपकी रहमत को मुतवज्जह करने वाली न होगी। इसलिए मेरे लिए रहमत का ऐसा दरवाज़ा खोल दीजिए कि उसके नतीजे में मेरी यह इबादत आपकी बारगाह में पेश करने के लायक़ बन जाए और आपकी रहमत को मुतवज्जह करने वाली बन जाए और आपकी बारगाह में क़ाबिले क़बूल हो जाए।

नमाज़ शुरू होने से पहले रहमत को मुतवज्जह करना

देखिए! अभी नमाज़ शुरू नहीं हुई और अभी इबादत शुरू नहीं हुई लेकिन पहले से अल्लाह तआला की रहमत को मुतवज्जह किया जा रहा है कि ऐ अल्लाह! जब तक आपकी तौफ़ीक़ और रहमत शामिले हाल न होगी उस वक़्त तक वह इबादत जो मैं मस्जिद में जाकर करूँगा कारामद और मुफ़ीद नहीं हो सकती, इसलिए मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।

ताकि मैं यह वक़्त बरबाद न कर दूँ

यह भी तो मुम्किन है कि मैं मस्जिद में दाख़िल तो हो जाऊँ लेकिन अपनी तबीयत की नापाकी की वजह से इबादत के बजाए किसी और ग़लत काम में मशग़ूल हो जाऊँ जैसे मस्जिद में जाकर लोगों से बातें करना शुरू कर दूँ या मस्जिद में जाकर तिजारत शुरू कर दूँ। चूँकि ये सब संभावनाएँ मौजूद हैं इसलिए ऐ अल्लाह! पहले ही क़दम पर मैं आपसे दुआ कर रहा हूँ कि मेरा मस्जिद में दाख़िला आपकी रहमत के दरवाज़े खोलने का सबब बन जाए। कहीं ऐसा न हो कि मैं इस वक़्त को बेकार

कर दूँ और ग़लत कामों में बरबाद कर दूँ।

क्या ऐसा शख़्स मेहरूम रहेगा?

अब आप अन्दाज़ा लगाइये कि जो बन्दा बेदार होते (नींद से जागते) ही अपने अल्लाह को पुकार रहा है और उसका शुक्र अदा कर रहा है और जब बैतुलख़ला (लैट्रीन) में जा रहा है तो अपने अल्लाह को पुकार रहा है। जब बैतुलख़ला से बाहर निकल रहा है तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा कर रहा है। जब वुज़ू कर रहा है तो हर अंग को धोते वक़्त अपने मालिक को पुकार रहा है। फिर जब वुज़ू करके फ़ारिग़ होता है तो उस वक़्त अपने मालिक को पुकार रहा है और फ़ज्र की नमाज़ के लिए जब मस्जिद की तरफ़ जा रहा है तो रास्ते में दुआएँ करता जा रहा है। अब जब मस्जिद में दाख़िल हो रहा है तो यह दुआ कर रहा है कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए। क्या ऐसे बन्दे को अल्लाह तआला मेहरूम फ़रमा देंगे? अल्लाह तआला जो अर्‌हमुर्राहिमीन (तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले) हैं, और हर बन्दे पर माँ-बाप से ज़्यादा शफ़ीक़ और मेहरबान हैं। क्या वह ऐसे बन्दे को मेहरूम फ़रमा देंगे? जब उस बन्दे ने सच्चे दिल से माँग लिया कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए। इन्शा-अल्लाह! जब वह मस्जिद में दाख़िल होगा तो ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ होगी जो अल्लाह तआला के यहाँ क़ाबिले क़बूल होगी। यह इस दुआ का बहुत बड़ा फ़ायदा है।

दुआ करते वक़्त सोच लिया करें

हम मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त आदतन यह दुआ तो पढ़ लेते हैं लेकिन यह पूरा पसे-मन्ज़र ज़ेहन में नहीं होता इसलिए ज़रा सोचकर माँगो कि मस्जिद में दाख़िल हो रहा हूँ और अल्लाह तआला से रहमत के दरवाज़े खोलने की दरख़्वास्त कर रहा हूँ तो इन्शा-अल्लाह! अल्लाह तआला मुझे अपनी रिज़ा के मुताबिक़ इबादत की तौफ़ीक़ बख़्शेंगे।

मस्जिद में जाकर तहिय्यतुल्-मस्जिद पढ़ लें

जब मस्जिद में दाख़िल हो गये और अभी जमाअत खड़ी होने में

वक़्त है तो बैठने से पहले दो रक्अ़त नमाज़ "तहिय्यतुल्-मस्जिद" की नीयत से पढ़ लें। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः जब तुम में से कोई शख़्स मस्जिद में आए तो दो रक्अ़तें पढ़ ले।

इन रक्अ़तों को "तहिय्यतुल-मस्जिद" कहा जाता है। लफ़्ज़ "तहिय्यत" अ़रबी ज़बान में उस जुमले को कहते हैं जो कोई शख़्स दूसरे से मुलाक़ात के वक़्त उसके इस्तिक़बाल (स्वागत) करने के लिए कहता है। जैसे मुसलमानों का "तहिय्यत" "अस्सलामु अ़लैकुम" है। कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मुलाक़ात करता है तो वह "अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाहि" कहकर उसका इस्तिक़बाल करता है। इसको अ़रबी में "तहिय्यत" कहा जाता है। दूसरी क़ौमें दूसरे अलफ़ाज़ इस्तेमाल करती हैं। कोई "गुड मॉर्निंग" कहता है, कोई "गुड ईवनिंग" कहता है, कोई "नमस्ते" कहता है। यह सब "तहिय्यत" है। इसी तरह इन दो रक्अ़तों का नाम "तहिय्यतुल्-मस्जिद" रखा गया है। यानी ये दो रक्अ़तें तुम्हारी तरफ़ से मस्जिद के नाम एक "तहिय्यत" है। मस्जिद से तुम्हारी मुलाक़ात हुई और अल्लाह तआ़ला के घर की ज़ियारत और उसमें दाख़िल होने की तौफ़ीक़ हुई तो जिस तरह तुम किसी इनसान से मिलते वक़्त पहले उसको "अस्सलामु अ़लैकुम" करते हो उसी तरह जब तुम मस्जिद में आए तो बैठने से पहले मस्जिद को सलाम कर लो और दो रक्अ़त पढ़ लो, और इस बात का एतिराफ़ (इक़रार) कर लो कि यह अल्लाह तआ़ला का घर है और इसमें हाज़िरी की तौफ़ीक़ हुई है। इस हाज़िरी की तौफ़ीक़ के नतीजे में इसका इस तरह इकराम व सम्मान कर रहा हूँ कि दाख़िले के फ़ौरन बाद दो रक्अ़त अदा कर रहा हूँ। इसलिए अगर अभी जमाअ़त खड़ी नहीं हुई तो पहले दो रक्अ़त "तहिय्यतुल्-मस्जिद" की नीयत से पढ़ लेनी चाहियें।

सुन्नतों में तहिय्यतुल्-मस्जिद की नीयत करना

यह बात याद रखो कि जिन नमाज़ों में फ़र्ज़ से पहले

सुन्नते-मुअक्कदा हैं- जैसे ज़ोहर में फ़र्ज़ों से पहले चार रक्अ़तें सुन्नते-मुअक्कदा हैं तो उसमें बेहतर तो यह है कि "तहिय्यतुल्-मस्जिद" की दो रक्अ़तें अ़लैहिदा पढ़ें और चार रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा अ़लैहिदा पढ़ें। लेकिन अगर वक़्त में गुन्जाईश नहीं है तो शरअ़न हमारे लिए यह आसानी कर दी गई है कि जो चार रक्अ़त सुन्नत आप पढ़ रहे हैं उसी में "तहिय्यतुल्-मस्जिद" की नीयत भी कर लें तो अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि वह दोनों का सवाब अ़ता फ़रमाएँगे, सुन्नतों का भी और तहिय्यतुल्-मस्जिद का भी।

जमाअ़त के इन्तिज़ार में बैठे हुए यह दुआ़ पढ़ें

"तहिय्यतुल्-मस्जिद" पढ़ने के बाद वक़्त बाक़ी हो और जमाअ़त खड़ी होने में देर हो तो उस वक़्त के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जो शख़्स मस्जिद में नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठा है तो वह शख़्स ऐसा है जैसा कि वह जन्नत की कियारियों में बैठा है। और आपने यह इरशाद भी फ़रमाया कि जब तुम जन्नत की कियारियों में बैठो तो जन्नत के फल भी खाया करो। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! जन्नत के फल कैसे खाएँ? आपने फ़रमाया कि जब तुम मस्जिद में नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठे हो तो जितनी देर बैठे हो उतनी देर ये कलिमात पढ़ते रहा करोः

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर।

ये कलिमात पढ़ना ऐसा है जैसे जन्नत के फल खाना, क्योंकि इसके नतीजे में इन्शा-अल्लाह तुम्हें आख़िरत में फल मिलेंगे। इसलिए जितना वक़्त मस्जिद में गुज़रे उस वक़्त में यह कलिमा तुम्हारी ज़बान पर रहे।

मस्जिद में करने के काम

बल्कि बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि अगर किसी शख़्स के लिए वक़्त की कमी की वजह से "तहिय्यतुल्-मस्जिद" पढ़ने का मौक़ा न हो तो उस वक़्त उसको चाहिये कि वह ये कलिमात पढ़ता रहे तो वह शख़्स इन्शा-अल्लाह "तहिय्यतुल्-मस्जिद" की फ़ज़ीलत से मेहरूम नहीं रहेगा।

इसके अलावा मस्जिद के आदाब का ख़्याल रखो और मस्जिद में बैठकर बिना ज़रूरत फ़ुज़ूल बातें न करो। अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ मुतवज्जह रहो, कुरआन की तिलावत का मौक़ा हो तो तिलावत कर लो, नफ़्लें पढ़ते रहो और जब जमाअत खड़ी हो जाए तो उसके आदाब और सुन्नतों के मुताबिक़ नमाज़ अदा करो।

इन सब कामों का नतीजा यह होगा कि जो दुआ दाख़िल होते वक़्त माँगी थी कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए इन्शा-अल्लाह मस्जिद में रहते हुए रहमत के दरवाज़े खुल जाएँगे और उसकी वजह से ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ हो जाएगी जो अल्लाह तआला की रिज़ा के मुताबिक़ होगी। अब जब नमाज़ के बाद मस्जिद से बाहर निकलोगे तो कामयाब व कामरान होकर निकलोगे। अल्लाह तआला हम सबको इन बातों पर अमल करने की पूरी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ο

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاο اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ο بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ο

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ، اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ ο (سورة المؤمن آيت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ο

मस्जिद से निकलते वक़्त यह पढ़ें

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले कुछ जुमों से मस्नून दुआओं का बयान चल रहा है। पिछले जुमा को मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ की तशरीह (तफ़सील और व्याख्या) अ़र्ज़ की थी। और मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त जो दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तालीम फ़रमाई है वह यह है:

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क।

मस्जिद से निकलते वक़्त बायाँ पाँव निकाले

सुन्नत यह है कि जब आदमी मस्जिद से बाहर निकले तो बायाँ पाँव

पहले निकाले। बज़ाहिर तो यह मामूली सी बात है कि जब आदमी मस्जिद में दाख़िल हो तो दायाँ पाँव दाख़िल करे और जब मस्जिद से बाहर निकले तो पहले बायाँ पाँव निकाले। लेकिन जब बन्दा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी में यह काम करता है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से "महबूबियत" का परवाना उसको मिल जाता है। क़ुरआन करीम का इरशाद है:

तर्जुमाः (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़रमाया गया कि) आप लोगों से फ़रमा दीजिये कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह तआ़ला तुम से मुहब्बत करेंगे। (सूरः आलि इमरान आयत 31)

इसलिए हर वह अ़मल जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी में किया जाए वह इनसान को अल्लाह का महबूब बना देता है, चाहे वह अ़मल कितना ही छोटा नज़र आ रहा हो।

वह शख़्स फ़ज़ीलत से मेहरूम हो गया

दायाँ पाँव पहले दाख़िल करने में और बायाँ पाँव पहले निकालने में कोई मेहनत ख़र्च नहीं होती। कोई वक़्त ज़्यादा नहीं लगता। कोई पैसा ख़र्च नहीं होता। लेकिन अगर आदमी इस बात का ज़रा एहतिमाम कर ले और ध्यान से बायाँ पाँव पहले निकाले तो सुन्नत की पैरवी करने की फ़ज़ीलत उसको हासिल हो जाती है। और अगर बे-ध्यानी में दायाँ पाँव पहले निकाल दिया अगरचे इसमें कोई गुनाह नहीं हुआ लेकिन सुन्नत की पैरवी की फ़ज़ीलत से वह मेहरूम हो गया। इसलिए इस बात की आ़दत डालनी चाहिये कि जब भी मस्जिद में दाख़िल हों तो दायाँ पाँव पहले दाख़िल करें और जब बाहर निकलें तो बायाँ पाँव पहले निकालें।

दाख़िल होने और निकलने की दुआ़ओं में फ़र्क़

और मस्जिद से निकलते वक़्त यह छोटी-सी दुआ़ पढ़ेः

"अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन फ़ज़्लि-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपके फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।

देखिए जब मस्जिद में दाख़िल हो रहे थे तो उस वक़्त यह दुआ की थी:

"अल्लहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।

और जब बाहर निकल रहे हैं तो यह दुआ कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपके फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ। दाख़िल होते वक़्त अल्लाह की रहमत माँगी थी और अब निकलते वक़्त अल्लाह का फ़ज़्ल माँगा जा रहा है। बज़ाहिर रहमत और फ़ज़्ल में कोई ख़ास फ़र्क़ नज़र नहीं आता लेकिन कुरआन व हदीस की इस्तिलाह (मुहावरे और परिभाषा) में ग़ौर करने से मालूम होता है कि दोनों के दरमियान बड़ा फ़र्क़ है।

"रहमत" से मुराद दीनी नेमत

कुरआन करीम में और पाक हदीसों में जब अल्लाह तआला की रहमत का लफ़्ज़ आता है तो उससे मुराद अल्लाह तआला की दीनी नेमत होती है, जो इनसान को दीनी मामलात में हासिल होती है- जैसे यह कि इनसान को सही तौर पर इबादत करने की तौफ़ीक़ हासिल हो जाए। यह सब दीनी रहमत है। और मस्जिद में इनसान इसलिए दाख़िल होता है कि वहाँ जाकर इबादत अन्जाम दे, इसलिए दाख़िल होते वक़्त यह दुआ माँगी गई कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए यानी दीनी नेमतों के दरवाज़े खोल दीजिए ताकि मस्जिद में दाख़िल होने के बाद मुझे इबादत की तौफ़ीक़ हो और नमाज़ ठीक-ठीक तरीक़े पर अन्जाम दूँ और आपकी इबादत इख़्लास के साथ अन्जाम दूँ वरना यह भी तो संभव है कि आदमी मस्जिद में दाख़िल होने के बाद बेकार बातों में अपना वक़्त बरबाद कर दे या ऐसे कामों में वक़्त गुज़ार दे जिनका कुछ हासिल नहीं।

"फ़ज़्ल" से मुराद दुनियावी नेमत

और "फ़ज़्ल" का लफ़्ज़ कुरआन व हदीस में अक्सर दुनियावी नेमतों के लिए आता है- जैसे यह कि रिज़्क़ अच्छा मिले, रोज़गार अच्छा मिले, आमदनी अच्छी हो, सेहत हासिल हो और घर में ख़ुशहाली हो। इन सब नेमतों को "फ़ज़्ल" से ताबीर किया जाता है। चुनाँचे कुरआन करीम में

जुमा की नमाज़ के बारे में आया है:

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! जुमे के दिन जुमे की अज़ान कही जाए तो तुम अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ चल पड़ो और ख़रीद-बेच और तिजारत के मामलात छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुमको समझ है। पस जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो। (सूरः जुमा आयत 9, 10)

अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने से मुराद यह है कि दुनिया की नेमतें, तिजारत, रोज़गार के साधन तलाश करो। इसके अलावा कुरआन करीम में दूसरी जगहों पर भी तिजारत को और माल को "फ़ज़्ल" से ताबीर किया गया है।

मस्जिद से निकलने के बाद 'फ़ज़्ल' की ज़रूरत

इसलिए जब इबादत करने के बाद आदमी मस्जिद से बाहर निकलेगा तो बाहर उसको दुनियावी ज़रूरतें पेश आएँगी और दुनियावी हाजतें उसको लाहिक़ होंगी और उन हाजतों को पूरा करना उसकी ज़िम्मेदारी है। इसलिए इस मौके पर यह दुआ माँगी जा रही है कि ऐ अल्लाह! मैं अब ज़िन्दगी के कारोबार में निकल रहा हूँ और ज़िन्दगी की जंग में दाख़िल हो रहा हूँ ऐ अल्लाह! इस ज़िन्दगी की जंग में मुझे अपना फ़ज़्ल अ़ता फ़रमाइये। आपका रिज़्के हलाल मुझे हासिल हो, आपकी तरफ़ से मुझे कामों में बरकत हासिल हो, मेरे कामों में नूर हो और जायज़ तरीक़े से मैं आपका रिज़्क़ हासिल करूँ।

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त रहमत की ज़रूरत थी इसलिए उस वक़्त "रहमत" तलब की, और मस्जिद से बाहर निकलने के बाद "फ़ज़्ल" की ज़रूरत थी इसलिए उस मौके पर अल्लाह तआ़ला का "फ़ज़्ल" तलब किया। कैसी बारीकी के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ़एँ तलक़ीन (सिखाई और तालीम) फ़रमाई हैं। जिस वक़्त इनसान की जो हाजत है उस हाजत का लिहाज़ करते हुए आपने वह दुआ़ तलक़ीन फ़रमाई जो उस वक़्त के मुताबिक़ हो।

अगर ये दुआएँ कबूल हो जाएँ तो!

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ये दुआएँ ऐसी हैं कि अगर इनमें से एक भी दुआ क़बूल हो जाए तो इनसान का बेड़ा पार हो जाए। जब मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए। अगर यह दुआ क़बूल हो जाए और रहमत के दरवाज़े खुल जाएँ तो सारी दीनी नेमतें हासिल हो जाएँ। और बाहर निकलते वक़्त जब यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपके फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ। अगर यह दुआ क़बूल होकर "फ़ज़्ल" मिल जाए तो दुनिया की तमाम हाजतें और तमाम मक़ासिद अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से पूरे हो जाएँ।

दुनियावी नेमतें अल्लाह का फ़ज़्ल कैसे हैं?

जैसा कि मैंने बताया कि कुरआन व हदीस में जब "फ़ज़्ल" का लफ़्ज़ आता है तो आ़म तौर पर इससे रिज़्क़, तिजारत और आर्थिक दशा के दूसरे मसाइल मुराद होते हैं। इसलिए तिजारत, नौकरी, खेती-बाड़ी वग़ैरह ये सब अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल के अन्दर शामिल हैं। सवाल यह है कि (नौकरी) को, तिजारत को, खेती को और रोज़गार को अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल क्यों कहा गया? हालाँकि आदमी यह सोच सकता है कि तिजारत तो एक दुनियावी मामला है और एक रिवाज चला आ रहा है कि एक शख़्स अपना सामान लेजाकर बाज़ार में बैठ जाता है, ख़रीदार आकर उससे सामान ख़रीदते हैं, उसके नतीजे में बेचने वाले को नफ़ा हासिल होता है। या कोई शख़्स मुलाज़िम है तो वह पूरे महीने मेहनत करता है और वक़्त लगाता है तो उसके नतीजे में महीने की समाप्ति पर उसको तन्ख़्वाह (वेतन) मिल जाती है। या कोई खेती करता है और हल जोतता है, बीज डालता है, पानी डालता है, मेहनत करता है तो उसके नतीजे में छह महीने के बाद उसकी फ़सल तैयार हो जाती है। इसलिए ये सब चीज़ें तो इनसान की अपनी मेहनत के नतीजे में हासिल हो रही हैं, तो फिर इनको अल्लाह के "फ़ज़्ल" से क्यों ताबीर किया जा रहा है?

इनसान को धोखा लग गया है

इसका जवाब यह है कि क़ुरआन करीम ने इन चीज़ों के लिए लफ़्ज़ "फ़ज़्ल" इस्तेमाल फ़रमा कर एक बड़ी अज़ीम हक़ीक़त की तरफ़ इनसानों को मुतवज्जह किया है, और एक बहुत बड़े धोखे से निकाला है। वह यह कि इनसान ने जब तिजारत करने के लिए सरमाया इकट्ठा किया, दुकान लगाई, उस दुकान में सामान जमा किया, उस दुकान पर बोर्ड लगाया और फिर सुबह से शाम तक उस दुकान में बैठा रहा और उसके नतीजे में उसको मुनाफ़ा मिला और आमदनी हुई तो उस इनसान को यह धोखा लग जाता है कि यह जो आमदनी मुझे हासिल हुई यह मेरी मेहनत और मेरे बाज़ू की ताक़त का नतीजा है। मैंने चूँकि पैसा लगाया, मैंने मेहनत की, मैंने वक़्त लगाया तो इसके नतीजे में मुझे यह मुनाफ़ा हासिल हुआ। फिर इस धोखे के नतीजे में वह इनसान इन्हीं ज़ाहिरी असबाब को रिज़्क़ हासिल होने का असल ज़रिया समझने लगता है।

अल्लाह के फ़ज़्ल के बग़ैर कुछ हासिल नहीं कर सकते

क़ुरआन करीम हमें इस तरफ़ मुतवज्जह कर रहा है कि ख़ुदा के लिए इस धोखे में मत आना क्योंकि यह आमदनी और जो मुनाफ़ा मिल रहा है बेशक तुमने उसको हासिल करने के लिए मेहनत की है, तुमने सरमाया लगाया है, तुमने वक़्त ख़र्च किया है, लेकिन अगर हमारा "फ़ज़्ल" शामिल न होता तो फिर तुम हज़ार मेहनत करते, हज़ार सरमाया लगाते, हज़ार वक़्त लगाते, तब भी तुम्हें एक पैसे की आमदनी न होती। तुम्हारे इख़्तियार में तो बस इतना था कि तुम दुकान खोलकर बैठ गए लेकिन ग्राहक को लाना तुम्हारे इख़्तियार में नहीं था। कितने लोग ऐसे हैं जो दुकान खोलकर बैठते हैं। सुबह से लेकर शाम तक दुकान खोले बैठे हैं लेकिन ग्राहक नहीं आता। ग्राहक को कौन भेज रहा है? कौन उसके दिल में यह बात डाल रहा है कि फ़लाँ दुकान पर जाकर सामान ख़रीदो, हालाँकि वही सौदा दूसरी दुकान पर भी मिल रहा है, वह ग्राहक वहाँ क्यों नहीं जा रहा है, तुम्हारे पास क्यों आ रहा है? इसलिए तिजारत के दूसरे

असबाब तो तुमने जमा कर लिए हैं लेकिन इन ज़ाहिरी असबाब में तासीर पैदा करके उनको तुम्हारे लिए आमदनी का ज़रिया बनाना, यह अल्लाह तआला के "फ़ज़्ल" के अलावा कोई नहीं करता।

एक सबक लेने वाला वाकिआ

मेरे बड़े भाई मुहम्मद ज़की कैफ़ी मरहूम, लाहौर में उनकी दीनी किताबों की दुकान थी। यही उनका रोज़ी-रोटी का ज़रिया था। एक बार उन्होंने अपना वाकिआ सुनाया कि एक दिन जब सुबह मैं उठा तो बहुत तेज़ मूसलाधार बारिश हो रही थी। बारिश लगातार जारी थी। यहाँ तक कि दुकान खोलने का वक़्त आ गया और सड़कों पर घुटनों के बराबर पानी बह रहा था। उस वक़्त मेरे दिल में ख़्याल आया कि इस वक़्त दुकान खोलने से क्या हासिल? बारिश तेज़ हो रही है, लोगों के लिए घर से बाहर निकलना मुश्किल है, बहुत शदीद ज़रूरत के लिए तो कोई शख़्स घर से बाहर निकलेगा। लेकिन इस वक़्त दीनी किताब ख़रीदने के लिए कौन निकलेगा? अगर अफ़सानों और नाविलों की दुकान होती तो शायद इस मौसम की दिलचस्पी के लिए किताब ख़रीदने आ जाते, लेकिन यह खुश्क (बे-मज़ा और अफ़सानों की किताबों की तरह की मिठास और दिलचस्पी से ख़ाली) दीनी किताबों की दुकान है, कौन ऐसे मौसम में किताब ख़रीदने आएगा। इसलिए दुकान खोलने की क्या ज़रूरत है। चलो आज छुट्टी कर लें।

लेकिन साथ-साथ इसका जवाब भी मेरे दिल में आया कि अरे भाई! तुम्हारा काम यह है कि जाकर दुकान खोलो, ग्राहक को भेजना न भेजना तुम्हारा काम नहीं। तुम्हारा काम सिर्फ़ इतना है कि दुकान खोलकर बैठ जाओ। अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होगा तो ग्राहक को भेज देंगे, मन्ज़ूर नहीं होगा तो नहीं भेजेंगे। लेकिन अगर तुम ग्राहक की फ़िक्र में पड़ गए तो दुकान चल गयी। चुनाँचे मैंने छतरी उठाई और पानी के अन्दर चलता हुआ दुकान पर आ गया और दुकान खोलकर बैठ गया। और यह सोचकर कि ग्राहक तो कोई आएगा नहीं, बैठकर कुरआन पाक पढ़ना शुरू

कर दिया। लेकिन थोड़ी देर के बाद मेरी हैरत की इन्तिहा हो गयी कि लोग बरसातियाँ पहनकर और छतरियाँ तानकर दुकान पर आना शुरू हो गए और किताबें ख़रीदने लगे। मैं हैरान था कि इस बारिश के मौसम में इनको इन किताबों की ऐसी फ़ौरी क्या ज़रूरत पेश आई कि ये लोग किताबें ख़रीदने आ रहे हैं, लेकिन साथ ही यह जवाब भी ज़ेहन में आया कि ये लोग ख़ुद नहीं आ रहे हैं बल्कि कोई भेजने वाली ज़ात इनको भेज रही है।

देने वाला कोई और है

यह है अल्लाह का फ़ज़्ल। इनसान को यह धोखा लग जाता है और वह ज़ाहिरी असबाब जमा करके यह सोचने लगता है कि यह मुझे जो कुछ मिल रहा है वह मुझे ज़ाहिरी असबाब से मिल रहा है, मेरी दुकान से मिल रहा है, मेरी मेहनत से मिल रहा है। अरे हक़ीक़त में देने वाला कोई और है। बेशक तुम्हारे ज़िम्मे यह ज़रूरी है कि हाथ पर हाथ रखकर न बैठो बल्कि मेहनत करो, अपना वक़्त लगाओ। लेकिन मेहनत और वक़्त लगाने के बाद उस मेहनत और वक़्त को कारगर बनाने वाला सिवाए अल्लाह के फ़ज़्ल के कोई और नहीं है। अगर उनका फ़ज़्ल न हो तो सारा दिन दुकान पर बैठे रहो और कोई ग्राहक न आए।

एक और वाक़िआ

जब मेरा पहली बार 1963 में हिजाज़े मुक़द्दस (सऊदी अ़रब) जाना हुआ तो एक साहिब ने वहाँ पर अपना एक बड़ा अ़जीब वाक़िआ सुनाया कि एक बार मैं बाज़ार में कपड़ा ख़रीदने गया। एक दुकान पर जाकर कपड़ा देखा, कपड़ा पसन्द आया तो मैंने उससे भाव-ताव किया और सौदा कर लिया। मैंने उससे कहा कि इसमें से इतना कपड़ा मुझे काट दो। उस दुकानदार ने कहा कि आपको यह कपड़ा पसन्द है? मैंने कहा कि पसन्द है। फिर उसने कहा कि दाम मुनासिब हैं? मैंने कहा कि हाँ! मुनासिब हैं। वह दुकानदार कहने लगा कि आप ऐसा करें कि यही कपड़ा सामने वाली दुकान पर इसी दाम में मिल जाएगा, आप वहाँ से जाकर ले लें। मैं बड़ा

हैरान हुआ और उस दुकानदार से कहा कि मेरा सौदा आपसे हुआ है, बात आपसे हुई है, अब मैं दूसरी दुकान से क्यों लूँ? दुकानदार ने कहा कि आपको तो कपड़ा ख़रीदने से मतलब। आप इस बहस में न पड़ें और वहाँ से जाकर कपड़ा ख़रीद लीजिए।

मैंने कहा कि मैं सौदा वहाँ से नहीं लूँगा। मेरा सौदा तो आपसे हुआ है आप ही से लूँगा वरना आप इसकी वजह बताएँ कि आपसे कपड़ा न लूँ और उस दुकानदार से जाकर लूँ। उस दुकानदार ने कहा कि बात दर असल यह है कि मेरे पास सुबह से बहुत से ग्राहक आ चुके हैं और सुबह से लेकर अब तक अल्हम्दु लिल्लाह मेरी आमदनी हो चुकी है लेकिन मैं यह देख रहा हूँ कि मेरे सामने वाला दुकानदार सुबह से अपनी दुकान पर बैठा है मगर उसके पास सुबह से अब तक कोई ग्राहक नहीं आया। मेरा दिल चाहता है कि उसके पास भी ग्राहक आए। इसलिए मैं तुमसे कह रहा हूँ कि तुम यह कपड़ा वहाँ से ख़रीद लो ताकि उसकी बिक्री हो जाए।

इस्लामी समाज की एक झलक

यह दर हक़ीक़त उस समाज और तहज़ीब की छोटी-सी झलक थी जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस ख़ित्ते (इलाक़े और क्षेत्र) में पैदा फ़रमायी थी कि सिर्फ़ अपना पेट नहीं देखना बल्कि अपने मुसलमान भाईयों के साथ भी ख़ैरख़्वाही (भलाई) करनी है। बहरहाल! जब मैंने उसकी यह बात सुनी तो मेरे दिल में उसकी बड़ी क़द्र हुई और मैंने कहा कि ठीक है मैं ये कपड़े वहाँ से ख़रीद लूँगा।

फ़ज़्ल के बग़ैर असबाब में तासीर नहीं

लेकिन देखने की बात यह है कि उस ताजिर के दिल में यह बात डालने वाला कौन था कि तुम अपने ग्राहक से फ़ायदा उठाने के बजाए उस ग्राहक को दूसरे के पास भेजो। यह अल्लाह का "फ़ज़्ल" नहीं था तो और क्या था? इसलिए अल्लाह तआ़ला दुनिया की इन नेमतों को अपना "फ़ज़्ल" क़रार देकर इनसान को इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं कि तुम

जो मेहनत और कोशिश करते हो और सरमाया लगाते हो, बेशक ये सब ज़ाहिरी असबाब हैं लेकिन तुम इस धोखे में मत आना कि इन असबाब के अन्दर उनकी ज़ात में कोई तासीर मौजूद है। जब तक अल्लाह तआ़ला का "फ़ज़्ल" शामिले हाल न हो तो उस वक़्त तक इन असबाब में तासीर नहीं आ सकती।

नौकरी के लिए डिग्रियाँ काफ़ी नहीं

आपने कॉलेज और यूनिवर्सिटी में पढ़कर डिग्रियाँ हासिल कर लीं और बड़े आला दर्जे के ओ़हदे पर काम करने के क़ाबिल हो गए। और आप ऐसी सलाहियत के मालिक हो गए कि आपको सोने में तौला जाए लोग आपकी इज़्ज़त करें। लेकिन कितने डिग्रियों वाले और सलाहियतों वाले ऐसे हैं जो जूतियाँ चटख़ाते फिरते हैं मगर उनको नौकरी नहीं मिलती। बात दर असल यह है कि डिग्रियाँ हासिल कर लेना एक सबब है, सलाहियत हासिल कर लेना एक सबब है। लेकिन इस सबब को मुअस्सिर (प्रभावी) बनाकर उसके ज़रिये अच्छी नौकरी दिलवा देना यह अल्लाह के "फ़ज़्ल" के अ़लावा और कुछ नहीं है।

खेती उगाना इनसान के इख़्तियार में नहीं

देखिए! किसान ज़मीन पर हल चलाता है, उसको नरम करता है, उसको साफ़ करता है, उसमें से पत्थर निकालता है, और इस तरह ज़मीन से खेती निकलने की रुकावटों को अपनी तरफ़ से दूर करने की कोशिश करता है, और फिर बीज डालता है और पानी देता है। यह सब मेहनत वह करता है लेकिन किसान की इस मेहनत को कामयाब करना और उसने जो बीज ज़मीन के अन्दर डाला था उसको फाड़ना और उसमें से कौंपल निकालना और उस कौंपल को ज़मीन के पेट को चाक करके बाहर निकलना और फिर कौंपल से पौधा बनना और उस पौधे से दरख़्त (पेड़ और पौधा) बनना और उस दरख़्त पर फल लगना यह सब काम अल्लाह के "फ़ज़्ल" के बग़ैर नहीं हो सकते। क़ुरआन करीम का इरशाद है:

यानी ज़मीन में जो चीज़ तुम बोते हो उसको तुम उगाते हो या हम

उगाते हैं? (सूरः वाक़िआ आयत 63, 64)

तुमने तो बस बीज डाल दिया लेकिन उस बीज का फूटना और उसमें से शगूफ़े फूटना और उसमें से कली निकलना वग़ैरह यह काम तुम्हारे बस में हैं? नहीं। अगर सारी दुनिया की साइंस की ताक़तें भी लगा दो तब भी तुम यह काम नहीं कर सकते, जब तक कि हमारा "फ़ज़्ल" शामिले हाल न हो। इसलिए दुनिया में तुम्हें जितनी नेमतें मिल रही हैं वे सब "अल्लाह का फ़ज़्ल" हैं, और तुमने रोज़ी कमाने के जितने ज़रिये (साधन) अपनाए हुए हैं वे सब हमारे फ़ज़्ल व करम से कामयाब होते हैं। इसलिए हमारे फ़ज़्ल व करम को भूलकर कुछ हासिल करना चाहोगे तो मुँह की खाओगे, कुछ हासिल न होगा।

"फ़ज़्ल" के अन्दर सारी नेमतें दाख़िल हैं

इसलिए जिस वक़्त तुम मस्जिद से बाहर निकल रहे हो तो उस वक़्त हमसे हमारा "फ़ज़्ल" माँगो और कहो:

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपके फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।

इस "फ़ज़्ल" के अन्दर दुनिया की सारी नेमतें आ गईं। अगर कोई शख़्स ताजिर है तो इस "फ़ज़्ल" में उसकी तिजारत की कामयाबी आ गयी। अगर कोई शख़्स मुलाज़िम है तो उसकी मुलाज़मत का रिज़्क़े हलाल इसमें आ गया। अगर कोई शख़्स काश्तकार है तो उसकी फ़सल की बेहतराई इसके अन्दर आ गई। और इसके अलावा दुनिया की जितनी नेमतें हो सकती हैं जैसे सेहत की नेमत, ख़ुशहाली की नेमत, घर वालों की ख़ुशहाली की नेमत और अपने दरमियान इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद (मेल-जोल) की नेमत वग़ैरह ये सब नेमतें इस दुआ के अन्दर आ गईं। इसलिए अगर यह छोटी-सी दुआ एक बार भी अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल हो जाए तो दुनिया की सारी मुसीबतें दूर हो जाएँ। अल्लाह तआला मुझे और आप सबको इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सूरज निकलते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِیْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ یَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ یُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَنَبِیَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ o

وَقَالَ رَبُّکُمُ ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ . (سورۃالمؤمن آیت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِیْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِیُّ الْکَرِیْمُ، وَنَحْنُ عَلٰی ذٰلِکَ مِنَ الشَّاهِدِیْنَ وَالشَّاکِرِیْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले कुछ जुमों से मस्नून दुआओं की तशरीह (वज़ाहत और व्याख्या) का बयान चल रहा है और सबसे आख़िरी दुआ जिसका बयान पिछले जुमे को हुआ, वह मस्जिद से निकलने की दुआ थी, कि जब आदमी मस्जिद से निकले तो यह दुआ पढ़े:

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क।

इश्राक़ की नमाज़ की फ़ज़ीलत

अलबत्ता जब आदमी फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो अगर उसके लिए मुम्किन हो तो नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मस्जिद से बाहर निकलने के बजाए मस्जिद में बैठ जाए। हदीस में इसकी बड़ी फ़ज़ीलत (बड़ाई) आई है कि जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद जिस जगह नमाज़ पढ़ी है, सूरज निकलने तक उसी जगह बैठा रहे और इस बीच

ज़िक्र करता रहे, तस्बीहें पढ़ता रहे, क़ुरआन करीम की तिलावत करता रहे और दुआएँ करता रहे। फिर जब सूरज निकल जाने के बाद बुलन्द (ऊँचा) हो जाए उस वक़्त दो रक्अ़त या चार रक्अ़त इशराक़ की नमाज़ पढ़े तो उस शख़्स को एक हज और एक उमरे का सवाब मिलेगा।

रोज़ाना एक हज और एक उमरा करें

अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि आदमी हज अदा करने के लिए क्या कुछ ख़र्च करता है। कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। उमरा अदा करने के लिए क्या कुछ करना पड़ता है। लेकिन अल्लाह तआ़ला इस छोटे से अ़मल पर एक हज और एक उमरे का सवाब अ़ता फ़रमा देते हैं। इसलिए जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दें, उनको इसकी फ़ज़ीलत से फ़ायदा उठाना चाहिए। यह अ़मल कोई फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है, अगर कोई शख़्स न करे तो कोई गुनाह भी नहीं है लेकिन बड़ी फ़ज़ीलत वाला अ़मल है।

सूरज निकलते वक़्त की दुआ

मस्जिद में बैठने के दौरान जिस वक़्त सूरज निकले तो उस वक़्त वे कलिमात अदा करे जो कलिमात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सूरज निकलते वक़्त पढ़ा करते थे। वे ये हैं:

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ालना यौमना हाज़ा
व लम् युह्लिक्ना बिज़ुनूबिना।

तर्जुमाः तमाम तारीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिसने हमें हमारा यह दिन वापस कर दिया और हमारे गुनाहों की वजह से हमें हलाक और बरबाद नहीं किया।

इस दुआ़ में दो जुमले हैं लेकिन इन दो जुमलों में मायने की दुनिया पोशीदा है। अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और उसकी कामिल क़ुदरत की और उसकी हिक्मत की और उसके इनामात के एतिराफ़ (इक़रार) की कायनात पोशीदा है। जब अ़रबी अलफ़ाज़ याद न हों तो उस वक़्त हिन्दी (यानी किसी और ज़बान में जिसको जानते हों) में यह दुआ़ कर लिया

करें कि ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने यह दिन हमें वापस कर दिया। इस शुक्र की वजह यह है कि जब हम रात को सो रहे थे, क्या हमें उस वक़्त मालूम था कि सुबह को हमारी आँख खुलेगी या नहीं? ज़िन्दगी के ये लम्हात सोते में ख़त्म तो नहीं हो जाएँगे। न जाने कितने लोग हैं जो रात को अच्छे-ख़ासे सोए और फिर सोते ही रह गए और दिन के आने से पहले ही उनके दिल पर ऐसा हमला हुआ कि उन्हें दिन देखना नसीब न हुआ।

सोते वक़्त रूह क़ब्ज़ हो जाती है

क़ुरआन करीम का इरशाद हैः

तर्जुमाः मौत के वक़्त अल्लाह तआला इनसानों की रूह को क़ब्ज़ कर लेता है। (अब मौत के वक़्त इनसान का सारा जिस्म तो वैसा ही नज़र आता है, बस जिस्म के अन्दर जो रूह थी अल्लाह तआला ने उसको क़ब्ज़ कर लिया। आगे फ़रमाया) और जिनकी मौत का वक़्त नहीं आया अल्लाह तआला उनकी रूहों को भी रोज़ाना नींद के वक़्त क़ब्ज़ फ़रमा लेते हैं। (यही वजह है कि सोने के बाद हमें कुछ एहसास और शऊर बाक़ी नहीं रहता। यह मालूम ही नहीं होता कि दुनिया में क्या हो रहा है। इसकी वजह यह है कि वह रूह आंशिक रूप से जिस्म से अ़लैहिदा हो जाती है) फिर जिनके लिए तक़दीर में मौत लिखी होती है उनकी रूहों को अल्लाह तआला वापस नहीं छोड़ते। (यानी सोते-सोते में मौत आ जाती है) और जिनकी मौत अभी मुक़द्दर नहीं है उनकी रूहों को अल्लाह तआला वापस छोड़ देते हैं। (चुनाँचे वह रूह दोबारा जिस्म में वापस चली जाती है और आदमी दोबारा उठ बैठता है और पहले जिस तरह होशियार और तरोताज़ा था दोबारा उसी तरह चुस्त और तेज़-तर्रार हो जाता है। (सूरः जुमर आयत 46)

सोने से पहले की दुआ

इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल (तरीक़ा और नियम) यह था कि आप सोने से पहले क़ुरआन करीम की इस

हक़ीक़त को मद्देनज़र रखते हुए यह दुआ फ़रमाया करते थे कि:

बिस्मि-क रब्बी वज़अ्तु जम्बी व बि-क अर्फ़उहू इन् अम्सक्-त नफ़्सी फ़ग़फ़िर् लहा व इन् अर्सल्तहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिही इबादकस्सालिहीन।

तर्जुमाः यानी ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने आप ही के नाम से बिस्तर पर पहलू रखा है और आप ही के नाम से उठाऊँगा। अगर आप मेरी रूह को रोक लें यानी सोते हुए मेरी रूह को क़ब्ज़ कर लें तो इसकी मग़फ़िरत फ़रमा दीजिएगा। और अगर आप इस रूह हो छोड़ दें यानी ज़िन्दगी की हालत में सुबह को नींद से उठा दें तो इसकी हिफ़ाज़त फ़रमाइयेगा जिस तरह आप अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करते हैं।

यानी मेरी रूह का वापस आना उसी वक़्त फ़ायदेमन्द है जब आपकी हिफ़ाज़त उसके साथ लगी हुई हो और गुनाहों में मुब्तला न हो। वह बुरे आमाल में मुब्तला न हो। वह जहन्नम का शिकार न हो और शैतान के जाल में न फंसे। कौन ऐसी दुआएँ माँगेगा जो दुआएँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम माँगकर तशरीफ़ ले गए। बहरहाल! यह दुआ करके आप सोया करते थे।

यह दिन अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेमत है

और फिर जब रात गुज़र गई और सुबह हो गई और दिन निकल आया और सूरज निकल आया तो इससे मालूम हुआ कि अल्हम्दु लिल्लाह! यह रात मेरे लिए मौत का पैग़ाम नहीं लाई थी और मुझे अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दगी का एक दिन और अ़ता फ़रमा दिया है। इसलिए सूरज निकलते वक़्त दुआ फ़रमा रहे हैं कि उस अल्लाह का शुक्र है जिसने यह दिन हमें वापस लौटा दिया। आज इस वक़्त जुमे के दिन हम सब यहाँ जमा हैं, हम में से किसी को इल्म है कि कल का दिन हमें मिलेगा या नहीं? इसलिए दिन के शुरू में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं कि यह दिन जो तुम्हें मिला है यह अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेमत है। अगर यह दिन तुम्हें न मिलता तो तुम क्या कर लेते। इसलिए पहले तो इस बड़ी और ज़बरदस्त नेमत

पर शुक्र अदा करो और फिर उस दिन को सही जगह और सही कामों में ख़र्च करो। कहीं ऐसा न हो कि यह दिन ग़फ़लत में ज़ाया हो जाए।

अगर यह दिन न मिलता तो!

और अगर यह दिन तुम्हें न मिलता बल्कि सोते में तुम्हें मौत आ गई होती और उस हालत में अल्लाह तआला के सामने पेशी होती और आमाल ख़राब होने की वजह से अल्लाह तआला की तरफ़ से सवाल होता तो उस वक़्त यह हसरत होती कि काश! मुझे ज़िन्दगी का एक दिन और मिल जाए तो अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर लूँ और अपनी पिछली ज़िन्दगी को साफ़ कर लूँ और अपना हिसाब बराबर कर लूँ। आज अल्लाह तआला ने इस हसरत के बग़ैर तुम्हें यह दिन दे दिया है तो अब इस दिन से काम लो और इसको उन कामों में ख़र्च करो जिनके नतीजे में बाद में तुम्हारे लिए हसरत का सबब न बने। चलिये! आजका दिन तो आपको मिल गया लेकिन इसकी कोई गारन्टी नहीं है कि अगला दिन तुम्हें मिलेगा या नहीं? इसलिए आज के इस दिन को सही कामों में ख़र्च करो।

वक़्त आ जाने के बाद मोहलत नहीं मिलेगी

क़ुरआन शरीफ़ में है कि जब आख़िरत में अल्लाह तआला के सामने लोगों की पेशी होगी तो उस वक़्त एक बन्दा कहेगा कि:

यानी (ऐ अल्लाह! आपने मुझे मौत दे दी लेकिन) मुझे थोड़ी-सी मोहलत और दे दीजिए और थोड़ी देर के लिए मुझे दुनिया में वापस भेज दीजिए तो फिर आप देखियेगा कि मैं कितना नेक बन जाऊँगा।

(सूरः मुनाफ़िक़ून आयत 10)

लेकिन अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

यानी जब किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो फिर अल्लाह तआला किसी की मौत में कोई देरी नहीं करते एक मिनट इधर से उधर नहीं हो सकता। (सूरः मुनाफ़िक़ून आयत 11)

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुआ के ज़रिये इस

तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं कि इससे पहले कि तुम अल्लाह तआला के सामने जाकर यह कहो कि ऐ अल्लाह! मुझे एक दिन के लिए और दुनिया में भेज दीजिए ताकि उसमें तौबा करके नेक बन जाऊँ। आज तुम्हें अल्लाह तआला ने यह नया दिन अ़ता फ़रमाया है। इस दिन के बारे में यह समझो कि तुम मौत के मुँह से निकलकर आ रहे हो।

यह समझो कि यह तुम्हारी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन है

ज़रा सोचो कि एक आदमी के लिए फाँसी का हुक्म हो चुका है। आज उसको फाँसी दी जानी है। फाँसी का फन्दा लटका हुआ तैयार है। उस आदमी को फाँसी के तख़्ते पर लेजाया गया और बस इतनी देर बाक़ी है कि जल्लाद रस्सी खींचकर काम तमाम कर दे। उस वक़्त अगर कोई हाकिम यह कहे कि हम तुम्हारी फाँसी को एक दिन के लिए टाल देते हैं इसलिए आज के बजाए कल फाँसी दी जाएगी। बताइये एक तरफ़ तो उसकी ख़ुशी कितनी होगी? दूसरी तरफ़ वह शख़्स वह एक दिन किस तरह गुज़ारेगा? इसकी तरफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तवज्जोह दिला रहे हैं कि यह जो तुम्हें नया दिन मिला है, यह ऐसा ही है जैसा फाँसी का हुक्म हो जाने के बाद अल्लाह तआला ने तुम्हें एक दिन और अ़ता फ़रमा दिया। जिस तरह तुम वह दिन गुज़ारते आज का दिन भी उसी तरह गुज़ारो।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअ़म रह० का वाक़िआ

जो अल्लाह तआला के नेक बन्दे होते हैं वह हर दिन इसी तरह गुज़ारते हैं। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअ़म रह० जो तब्-ए-ताबिईन में से थे और बड़े ऊँचे दर्जे के मुहद्दिस (हदीस शरीफ़ के आ़लिम) थे। उनका वाक़िआ लिखा है कि एक शख़्स के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि मेरे ज़माने के जितने बुज़ुर्गाने दीन हैं उन सबसे मुलाक़ात करूँ और उनसे यह पूछूँ कि अगर आपको किसी तरह यह पता चल जाए कि कल बारह बजे मौत आने वाली है और आपके पास ज़िन्दगी के सिर्फ़ चौबीस घन्टे बाक़ी हैं तो आप उन चौबीस घन्टों में क्या अ़मल करेंगे? उन साहिब

के पेशे-नज़र यह था कि हर बुज़ुर्ग की अलग शान होती है और हर एक की प्राथमिकता अलग होती है इसलिए हर बुज़ुर्ग वह काम बताएगा जो उसके नज़दीक सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल और सबसे ज़्यादा फ़ायदे वाला और सबसे ज़्यादा अज्र व सवाब वाला होगा।

चुनाँचे वह शख़्स मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों के पास गए। हर बुज़ुर्ग ने मुख़्तलिफ़ जवाब दिए। जब हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअ़म रहमतुल्लाहि अ़लैहि के पास पहुँचे और उनसे सवाल किया कि आप उन चौबीस घन्टों में क्या अ़मल करेंगे? तो उन्होंने जवाब में फ़रमाया कि मैं वही काम करूँगा जो आज कर रहा हूँ। यानी मैंने तो हर दिन ऐसा बनाया हुआ है गोया कि वह दिन मेरी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन है। इसलिए जो अ़मल मैं करता हूँ उस पर किसी दूसरे अ़मल का इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। बहरहाल! इस दुआ के पहले जुमले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने आज का दिन हमें वापस दे दिया। इस जुमले में ये सारे मज़ामीन छुपे हुए हैं।

अल्लाह तआ़ला ने गुनाहों की वजह से हलाक नहीं किया

इस दुआ में दूसरा जुमला हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह इरशाद फ़रमायाः

व लम् युह्लिक्ना बिज़ुनूबिना।

तर्जुमाः और अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने हमें हमारे गुनाहों की वजह से हलाक नहीं किया।

यह जुमला भी अपने अन्दर मायने की एक कायनात रखता है। इस जुमले में इस बात का एतिराफ़ (इक़रार) है कि हमसे इस दुनिया की ज़िन्दगी में न जाने कितने गुनाह हो रहे हैं और उन गुनाहों की वजह से हम इस बात के मुस्तहिक़ (पात्र) हैं कि हम पर अ़ज़ाब नाज़िल हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें उस अ़ज़ाब से बचा रखा है। अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने हमें हलाक नहीं किया।

क़ौमे आद पर अ़ज़ाब

आज अगर हम अपनी ज़िन्दगी पर निगाह डालें तो यह नज़र आएगा कि वे बड़े-बड़े गुनाह जिनकी वजह से पिछली उम्मतों में पूरी-पूरी क़ौम को तबाह कर दिया गया, तक़रीबन वे सब गुनाह आज हमारे समाज में फैले हुए हैं। क़ौमे आद पर अल्लाह तआ़ला ने हवा का अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया। तीन दिन तक इस तरह हवा का तूफ़ान आया कि कुछ देखने वालों ने लिखा है कि यह तूफ़ानी हवा औरतों और जानवरों को उड़ाकर ले गई और बादलों से उनके रोने और चीख़ने की आवाज़ें आती थीं।

क़ौमे समूद और क़ौमे शुऐब पर अ़ज़ाब

क़ौमे समूद को एक ऐसी चीख़ के ज़रिये हलाक किया गया जिससे उनके कलेजे फट गए। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के बारे में कुरआन करीम में आया है कि यह क़ौम नाप-तौल में कमी किया करती थी। तौलते वक़्त डन्डी मारने की आ़दत थी। उन पर इस तरह का अ़ज़ाब आया कि तीन दिन तक सख़्त गर्मी पड़ी, आसमान से आग बरस रही थी और ज़मीन शोले उगल रही थी। तीन दिन की गर्मी से बिलबिला उठे। उसके बाद अचानक ठन्डी हवाएँ चलनी शुरू हुईं और बस्ती से बाहर खुले मैदान में एक बादल का टुकड़ा आया और उसमें से ठन्डी हवा आने लगी। चूँकि वह क़ौम तीन दिन से गर्मी की सख़्ती बरदाश्त कर रही थी। जब उस ठन्डे बादल को बस्ती के बाहर देखा तो पूरी क़ौम बस्ती से बाहर निकलकर उस बादल के नीचे जमा हो गयी। जब सारी क़ौम जमा हो गई तो उस बादल से अंगारे बरसाए गए और उन अंगारों के नतीजे में पूरी क़ौम तबाह हो गयी। यह अ़ज़ाब इस वजह से आया कि वे कुफ़्र और शिर्क के अ़लावा नाप-तौल में कमी किया करते थे।

क़ौमे लूत पर अ़ज़ाब

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम पर बदफ़ेली (कुकर्म) की वजह से और लोगों का माल लूटने की वजह से अ़ज़ाब आया। यानी एक तो ग़ैर-फ़ितरी (अप्राकृतिक कुकर्म) के करने की आ़दत थी, दूसरे लोगों का

माल लूटकर उसको नाहक़ खाने की आदत थी। इन दो ख़राबियों की वजह से उन पर पत्थरों की बारिश का अज़ाब आया। और दूसरा अज़ाब यह आया कि उनकी बस्तियाँ उलट दी गईं। ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का हिस्सा ऊपर कर दिया गया। आज भी उनकी बस्तियों का हश्र उर्दुन में देखा जा सकता है। मैंने खुद जाकर देखा है। वह जगह जहाँ उनकी बस्तियाँ आबाद थीं आज वहाँ पर ऐसा समन्दर है जिसमें कोई जानदार ज़िन्दा नहीं रह सकता। जिसकी वजह से उसको "बहरे मय्यित" कहा जाता है। अगर कोई मछली दरिया से उस समन्दर में आ जाए तो वह फ़ौरन मर जाती है।

दुनिया का सबसे ज़्यादा पस्त इलाक़ा

भूगोल के माहिरों ने बताया है कि वह जगह जहाँ लूत अलैहिस्सलाम की बस्तियाँ थीं। वह जगह आज सारे रू-ए-ज़मीन पर सबसे ज़्यादा पस्त जगह है। यानी वह जगह समन्दर की सतह के एतिबार से पूरी ज़मीन में सबसे ज़्यादा निचली जगह है। चुनाँचे जगह-जगह पर रास्ते में बोर्ड लगे हुए हैं कि अब इसकी सतह इतनी नीचे हो गयी, अब इतनी नीचे हो गयी। कुरआन करीम ने यह जो फ़रमाया था कि:

तुर्जमा: हमने उसके बुलन्द मुक़ामात को नीचे कर दिया।

(सूर: हिज्र आयत 74)

आज भी इनसान इसको अपनी खुली आँखों से वहाँ देख सकता है।

उम्मते मुहम्मदिया आम अज़ाब से महफ़ूज़ है

बहरहाल! पिछली उम्मतों पर उनकी मुख़्तलिफ़ बद-आमालियों (बुरे कामों) की वजह से अल्लाह तआला मुख़्तलिफ़ वक़्तों में मुख़्तलिफ़ अज़ाब नाज़िल करते रहे हैं, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत को अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल में यह विशेषता बख़्शी है कि इस उम्मत पर कोई आम (सार्वजनिक) अज़ाब नहीं आएगा जो पूरी उम्मत को एक ही बार हलाक कर दे। चुनाँचे क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

तर्जुमा: अल्लाह तआला आपकी उम्मत को उस वक़्त तक अ़ज़ाब नहीं देंगे जब तक आप उनके अन्दर मौजूद हैं। और अल्लाह तआला उनको उस वक़्त तक अ़ज़ाब नहीं देंगे जब तक ये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (सूरः अन्फ़ाल आयत 33)

इस ऐलान का नतीजा यह है कि आज सख़्त बुरे आमालों के बावजूद अल्लाह तआला इस उम्मत पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमाएँगे जिसमें पूरी उम्मत तबाह व बरबाद हो जाए।

आंशिक अ़ज़ाब उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर आएँगे

लेकिन ख़ूब याद रखिए इस ऐलान का यह मतलब नहीं है कि आंशिक अ़ज़ाब से भी छुट्टी मिली हुई है। बल्कि हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में भी आंशिक अ़ज़ाब आएँगे। कभी ज़लज़ले के ज़रिये से तबाह किया जाएगा, कभी सूरतें बिगाड़ दी जाएँगी, कभी पत्थर बरसेंगे, कभी हवाओं के तूफ़ान आएँगे। इसलिए आंशिक अ़ज़ाब का सिलसिला बन्द नहीं हुआ, बल्कि आंशिक अ़ज़ाब मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर ज़ाहिर होता रहता है।

बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सूरज निकलते वक़्त यह दुआ फ़रमाईः

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ालना यौमना हाज़ा व लम् युह्लिक्ना बिज़ुनूबिना।

तर्जुमा: अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने यह दिन हमें वापस दे दिया और हमारे गुनाहों की वजह से हमें हलाक नहीं किया।

एक नबी ही का मुक़ाम है कि वह ऐसे अलफ़ाज़ से दुआ करे। इस दुआ में सिर्फ़ दो जुमले हैं लेकिन उनमें मायनों की एक दुनिया छुपी हुई है। एक तरफ़ उनमें अल्लाह तआला के इनामों का शुक्र भी है, दूसरी तरफ़ अल्लाह के अ़ज़ाब से ख़ौफ़ और डर भी है, और इसमें गुनाहों से तौबा करने का मौक़ा मिल जाने का एतिराफ़ (इक़रार) भी है, और

साथ-साथ यह दावत भी है कि जब एक नया दिन मिला है तो इस दिन को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करने में और उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में ख़र्च किया जाए। अल्लाह तआ़ला इस दुआ़ की ख़ुसूसियतों (विशेषताओं) को समझने और उन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सुबह के वक़्त पढ़ने की दुआएँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ. (سورة المؤمن آيت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले जुमे को इस दुआ की तशरीह (तफ़सील और व्याख्या) अर्ज़ की थी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूरज निकलते वक़्त पढ़ा करते थे। वह दुआ यह थी:

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ालना यौमना हाज़ा व लम् युह्लिक्ना बिज़ुनूबिना।

फिर दिन के शुरू होने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से चन्द और दुआएँ पढ़ना भी साबित हैं। और बेहतर यह है कि सूरज निकलने के बाद जब सूरज बुलन्द हो जाए और नमाज़ पढ़ना जायज़ हो जाए यानी सूरज निकलने के तक़रीबन बीस मिनट के बाद तो पहले इशराक़ की नमाज़ पढ़ें और फिर ये दुआएँ पढ़ें। क्योंकि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दो रकअ़त या चार रकअ़त नमाज़

"इश्राक़" की नीयत से पढ़ना साबित है। और हदीसों में उनकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है। यह दो रक्अ़त गोया कि इस बात का शुक्राना हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दगी का एक दिन और अ़ता फ़रमाया। इसलिए बेहतर यह है कि ये दुआएँ इश्राक़ की नमाज़ के बाद पढ़ी जाएँ और फ़ज्र की नमाज़ के बाद भी पढ़ सकते हैं।

पहली दुआ़

पहली दुआ़ जो दिन के शुरू होने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पढ़ना साबित है वह यह है:

अल्लाहुम्-म बि-क अस्बह्ना व बि-क अम्सैना व बि-क नह्या व बि-क नमूतु।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमारी सुबह भी आप ही के करम से है और हमारी शाम भी आप ही के करम से है। और हमारी ज़िन्दगी भी आप ही की बदौलत है। और जब हमें मौत आएगी तो वह मौत भी आप ही की तरफ़ से है।

इस दुआ़ में इस बात का एतिराफ़ (इक़रार) है कि हमारे सुबह से लेकर शाम तक के सारे वक़्त अल्लाह तआ़ला के एहसान और फ़ज़्ल व करम के सबब हैं।

दूसरी दुआ़

सुबह के वक़्त दूसरी यह दुआ़ पढ़ना साबित है:

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़ल् यौमि व ख़ै-र मा बअ्दहू।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो दिन शुरू हो रहा है मैं इस दिन की भलाई आप से माँगता हूँ। और इस दिन के बाद जो दिन आने वाले हैं उनकी भी भलाई आप से माँगता हूँ।

इस दुआ़ में लफ़्ज़ "ख़ैर" बयान फ़रमाया जिसके मायने हैं "भलाई" यह इतना मुकम्मल और आ़म लफ़्ज़ है कि इसमें दुनिया और आख़िरत की सारी हाजतें जमा हो जाती हैं इसलिए जब यह कहा कि मैं इस दिन

की भलाई माँगता हूँ तो इसका मतलब यह है कि इस दिन में जो भी वाक़िआ पेश आए और जो हालात पेश आएँ वे मेरे लिए ख़ैर हों और मेरे लिए भलाई का सबब हों। हक़ीक़त यह है कि अगर इन दुआओं में से एक दुआ भी अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल हो जाए तो इनसान का बेड़ा पार हो जाए। चुनाँचे इस दुआ में भी दुनिया और आख़िरत की सारी भलाईयाँ जमा हैं।

तीसरी दुआ

फिर एक और दुआ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस "ख़ैर" की थोड़ी-सी तफ़सील बयान करते हुए फ़रमायाः

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़ल् यौमि व फ़त्हहू व नस्रहू व नूरहू व ब-र-क-तहू व हुदाहु।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपसे इस दिन की भलाई और इस दिन की फ़तह और इस दिन में आपकी मदद और नुसरत और इस दिन का नूर और इस दिन की बरकत और इस दिन में हासिल होने वाली हिदायत माँगता हूँ।

लफ़्ज़ "फ़तह" की तशरीह

इस दुआ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "फ़तह" का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया। हमारी उर्दू ज़बान (और दुनिया की हर ज़बान) इतनी तंग है कि अरबी के लफ़्ज़ "फ़तह" का सही तर्जुमा मुम्किन नहीं है। इसलिए मैंने इसका यह तर्जुमा किया कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे इस दिन की फ़तह माँगता हूँ। क्योंकि उर्दू (और हिन्दी वग़ैरह) में कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं है जो इस लफ़्ज़ की पूरी-पूरी नुमाईन्दगी कर सके।

"फ़तह" के लफ़्ज़ी मायने हैं "खोलना" जैसे कोई चीज़ बन्द है और फिर उसको खोल दिया जाए तो उसके लिए फ़तह का लफ़्ज़ बोला जाएगा। चुनाँचे यह जो कहा जाता है कि क़िला फ़तह कर लिया, फ़लाँ शहर फ़तह कर लिया इसके मायने यह हैं कि वह पहले हमारे लिए बन्द था और हमारा उस पर क़ब्ज़ा नहीं था और हमें इस बात की ताक़त नहीं

थी कि उसके अन्दर दाख़िल हो सकते, लेकिन अब वह फ़तह हो गया है और हमारे लिए खुल गया है। इसलिए उर्दू में सबसे ज़्यादा क़रीब इसका तर्जुमा "दरवाज़े खोल देना" हो सकता है।

रहमत के दरवाज़े खोल दे

इसलिए इस दुआ के मायने यह हुए कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे यह दुआ करता हूँ कि आप मेरे लिए इस दिन के अन्दर अपनी तौफ़ीक़ और रहमत के दरवाज़े खोल दें। क्योंकि इनसान जब दिन के शुरू में अपनी सरगर्मियों (गतिविधियों) में दाख़िल होता है जैसे सुबह के वक़्त रोज़ी कमाने के लिए और दूसरी ज़रूरतें पूरी करने के लिए घर से बाहर निकलता है तो उस वक़्त इनसान को क़दम-क़दम पर रुकावटें पेश आती हैं और ऐसा मालूम होता है कि दरवाज़े बन्द हैं। फिर बहुत-सी बार वे रुकावटें बरक़रार रहती हैं और इनसान अपना मक़सद हासिल करने में नाकाम हो जाता है। और कभी-कभी अल्लाह तआला ग़ैब से वह रुकावट दूर फ़रमा देते हैं और इनसान अपने मक़सद में कामयाब हो जाता है।

दरवाज़ा खुल गया

मिसाल के तौर पर आप दफ़्तर या दुकान जाने के लिए घर से निकले। अब आप सवारी के इन्तिज़ार में खड़े हैं और सवारी नहीं मिल रही है। बस में सवार होना चाहते हैं लेकिन बस नहीं आ रही है। या टैक्सी करना चाहते हैं लेकिन कोई टैक्सी नहीं मिल रही है। इसका मतलब यह है कि रुकावट है और अब यह दरवाज़ा बन्द है। फिर अचानक बस आ गई या टैक्सी मिल गई तो इसका मतलब यह है कि दरवाज़ा खुल गया और जो रुकावट थी वह दूर हो गई। या जैसे आप किसी काम के लिए सरकारी दफ़्तर गए वहाँ जाकर देखा कि लम्बी लाईन लगी हुई है, आप भी लाईन में खड़े हो गए और अपनी बारी का इन्तिज़ार करने लगे, मगर आपका नम्बर ही नहीं आ रहा है। इसका मतलब यह है कि दरवाज़ा बन्द है और कोई रुकावट है लेकिन अचानक यह हुआ कि आगे के लोग जल्दी-जल्दी निबट गए और आपका नम्बर जल्दी आ गया।

इसका मतलब यह है कि वह रुकावट दूर हो गई और जो दरवाज़ा बन्द था वह खुल गया। दुनिया के और आख़िरत के हर काम में आपको यह सिलसिला नज़र आएगा।

दरवाज़ा खुल जाना "फ़तह" है

कभी-कभी यह रुकावट इतनी लम्बी हो जाती है कि इनसान अपना मक़सद हासिल नहीं कर पाता और कभी-कभी रुकावट जल्दी दूर हो जाती है और इनसान अपने मक़सद को जल्दी हासिल कर लेता है। यह जो रुकावट दूर हो रही है और दरवाज़े खुल रहे हैं, इसका नाम "फ़तह" है। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दिन के शुरू में यह दुआ फ़रमा रहे हैं किः

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़ल् यौमि व फ़त्हहू।

यानी ऐ अल्लाह! आपने ज़िन्दगी का एक नया दिन अ़ता फ़रमा दिया है। अब इस दिन मैं अपने ज़िन्दगी के कारोबार में दाख़िल हूँगा वहाँ क़दम-क़दम पर रुकावटें आएँगी। ऐ अल्लाह! मैं आपसे यह सवाल करता हूँ कि रुकावटें दाईमी (हमेशा की) न हों बल्कि वे रुकावटें दूर हो जाएँ और आपकी तरफ़ से दरवाज़े खुल जाएँ।

ज़िन्दगी "लगातार मेहनत" का नाम है

अगर हर शख़्स सुबह से लेकर शाम तक अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेकर देखे तो उसको यह नज़र आएगा कि यह सारी ज़िन्दगी इस तरह गुज़र रही है कि रुकावटें आती हैं, कभी वे रुकावटें जल्दी ख़त्म हो जाती हैं और कभी देर से ख़त्म होती हैं, और कभी बाक़ी रहती हैं, कभी इनसान कामयाब हो जाता है और कभी नाकाम हो जाता है। अगर कोई शख़्स यह चाहे कि मेरे कामों में कोई रुकावट पैदा न हुआ करे बल्कि मैं जो चाहूँ वह काम हो जाया करे, तो यह बात इस दुनिया के अन्दर तो मुम्किन नहीं है। यह हालत तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला जन्नत में हासिल होगी। वहाँ पर आदमी जो चाहेगा वह होगा। जो माँगेगा वह मिलेगा। लेकिन इस दुनिया में बड़े से बड़े बादशाह बड़े से बड़े ओ़हदेदार और बड़े

से बड़े दौलतमन्द को भी यह बात नसीब नहीं कि जो वह चाहे वह हो जाए और जो माँगे वह मिल जाए। बल्कि यह दुनिया की ज़िन्दगी तो मुस्तक़िल जद्दोजहद का नाम है। यह ज़िन्दगी मुसलसल भाग-दौड़ है, इसमें रुकावटें आती भी हैं और दूर भी होती हैं। यहाँ दरवाज़े बन्द भी होते हैं और खुलते भी हैं।

बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह के शुरू में दुआ फ़रमा रहे हैं: ऐ अल्लाह! मैं ज़िन्दगी के मामलात और कारोबार में दाख़िल होने वाला हूँ। ज़िन्दगी की लड़ाई में उतरने वाला हूँ। यहाँ क़दम-क़दम पर रुकावटें आएँगी, ऐ अल्लाह! मेरे लिए दरवाज़े खोल दीजिए ताकि वे रुकावटें दाईमी और हमेशा के लिए न हों।

"बीमारी" एक रुकावट है

देखिए! बीमारी आ गई तो यह बीमारी एक रुकावट है। इसलिए कि उसकी वजह से इनसान ज़िन्दगी के अपने मामूलात अदा करने से क़ासिर (असमर्थ) रहता है। अब बीमारी को दूर करने के लिए दवा खाई तो अब वह दवा असर ही नहीं कर रही है, और दवा से कोई फ़ायदा नहीं हो रहा है। यह रुकावट है, लेकिन अचानक बाद में दवा से फायदा होना शुरू हो गया तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से दरवाज़ा खुल गया, इसका नाम "फ़तह" है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! जब मैं सुबह के वक़्त ज़िन्दगी की शुरुआत करूँ और ज़िन्दगी के कारोबार में उतरूँ तो उस वक़्त आपकी तरफ़ से दरवाज़े खुले हुए हों और जो रुकावटें आएँ आप उनको दूर फ़रमा दें।

नमाज़ में सुस्ती एक रुकावट है

आप अन्दाज़ा करें कि अगर किसी बन्दे को सिर्फ़ यह बात हासिल हो जाए कि उसके लिए दरवाज़े खुले हुए हों, दुनिया के मामलात में भी और दीन के मामलात में भी दरवाज़े खुले हुए हों तो उसको और क्या चाहिये। ये मिसालें तो मैंने दुनिया के मामलात में बताईं। आख़िरत की

मिसाल यह है कि जैसे एक शख़्स कोई नेक काम करना चाहता है और इबादत करना चाहता है और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील करना चाहता है लेकिन दरमियान में रुकावट आ जाती है जैसे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के लिए जागना चाहता है लेकिन नींद का ग़लबा है तो यह एक रुकावट है जो उसको नमाज़ से रोक रही है और दरवाज़ा बन्द है, लेकिन उस वक़्त उसके दिल में यह ख़्याल आ गया कि यह नमाज़ पढ़ना तो अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, इसको ज़रूर पढ़ना चाहिये। इस ख़्याल के आते ही तबीयत में हिम्मत पैदा हो गई और उठकर नमाज़ के लिए चल पड़ा तो अब यह उसके लिए दरवाज़ा खुल गया और रुकावट दूर हो गई।

गुनाहों के जज़्बे और तक़ाज़े रुकावट हैं

या जैसे आप किसी काम से घर से बाहर निकले लेकिन बाहर आँखों को पनाह मिलनी मुश्किल है। चारों तरफ़ फ़ितने फैले हुए हैं। नफ़्सानी ख़्वाहिशें उसको इस बात पर उभार रही हैं कि वह उसको ग़लत इस्तेमाल करके लज़्ज़त हासिल करे। यह अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करने में रुकावट है, दरवाज़ा बन्द है और नफ़्स का तक़ाज़ा इतना शदीद है कि आदमी मग़लूब हो रहा है। नफ़्स व शैतान का बहकाना इतना शदीद है कि इनसान हथियार डाले जा रहा है, लेकन जब उसने अल्लाह तआ़ला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस नफ़्स व शैतान ने मुझे मग़लूब कर रखा है। ऐ अल्लाह! मुझे इस बात की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे कि मैं इस गुनाह से बच जाऊँ। चुनाँचे इस दुआ के नतीजे में तौफ़ीक़ मिल गई और उस गुनाह से बचने की हिम्मत हो गई और दरवाज़ा खुल गया। बहरहाल! दुनिया के कामों में भी और आख़िरत के कामों में भी दरवाज़ा खुलने की ज़रूरत है, और हम इस बात में अल्लाह तआ़ला के मोहताज हैं कि उसकी तरफ़ से दरवाज़ा खुल जाए इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दिन के शुरू में ही यह दुआ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! इस दिन की भलाई अ़ता फ़रमा और इस दिन की "फ़तह" अ़ता फ़रमा ताकि रुकावटें दूर हों और दरवाज़े खुल जाएँ।

लफ़्ज़ "नस्रहू" की तशरीह

इसके बाद तीसरा लफ़्ज़ "नस्रहू" इरशाद फ़रमाया। "नस्र" के मायने हैं मदद। यानी ऐ अल्लाह! मैं आपसे इस दिन की मदद माँगता हूँ। इसलिए कि इनसान सुबह से शाम तक की ज़िन्दगी में जितने काम अन्जाम देता है, उनमें से कोई काम ऐसा नहीं है जिसमें अल्लाह तआ़ला की मदद की ज़रूरत न हो, क्योंकि अगर अल्लाह तआ़ला की मदद न हो तो फिर इनसान कोई भी काम इस दुनिया में अन्जाम नहीं दे सकता। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दिन के शुरू में अल्लाह तआ़ला से यह इल्तिजा और दरख़्वास्त फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! आपकी मदद मेरे शामिले हाल रहे और मैं जब भी कोई काम करने जाऊँ तो आपकी तरफ़ से मेरी मदद हो, चाहे वह दुनिया का काम हो या आख़िरत का काम हो।

इनसान का काम सिर्फ़ असबाब जमा करना है

देखिए! इनसान के इख़्तियार में बस इतना है कि वह किसी काम के असबाब (साधन) मुहैया कर ले, लेकिन उन असबाब का कारगर होना, उनसे फ़ायदा हासिल होना और उनसे मक़सद का हासिल हो जाना इनसान के इख़्तियार में नहीं। जैसे एक शख़्स ने पैसे जमा किये, दुकान बनाई, उस दुकान में सामान रखा और उस दुकान में जाकर बैठ गया। ये काम तो उसके इख़्तियार में थे जो उसने अन्जाम दे दिये लेकिन उस दुकान पर ग्राहक का आना और सामान को पसन्द करना और उस सामान की जो क़ीमत तलब की जा रही है उस क़ीमत के अदा करने को तैयार हो जाना, यह काम इनसान के बस में नहीं। वह कौन ज़ात है जो उसकी दुकान पर ग्राहक को भेज रहा है। वह कौन ज़ात है जो इस ग्राहक के दिल में यह डाल रहा है कि इस दुकान में फ़लाँ चीज़ रखी है तुम पसन्द कर लो। उस ग्राहक के दिल में यह बात डाल रहा है कि इस चीज़ को इतनी क़ीमत पर ख़रीद लो। कितने लोग ऐसे हैं कि वे दुकान खोलकर माल सजाकर बैठे हैं लेकिन ग्राहक नहीं आता। या ग्राहक आता है लेकिन

चीज़ पसन्द नहीं करता। या चीज़ पसन्द करता है लेकिन जो उसकी मुनासिब कीमत है वह देने पर तैयार नहीं होता। नतीजा यह है कि वह दुकानदार दुकान खोले बैठा है लेकिन फ़ायदा हासिल नहीं हो रहा है। अब ज़ाहिरी असबाब तो उसने जमा कर लिए हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद और नुस्रत नहीं, जिसके नतीजे में ये सारे असबाब (साधन) बेकार हो गए।

सेहत हासिल होना इख़्तियार में नहीं

या जैसे इनसान के इख़्तियार में इतना ही है कि अगर वह बीमार हो जाए तो वह किसी अच्छे डाक्टर से रुजू करे और वह डाक्टर उसको दवा लिख दे। फिर वह शख़्स बाज़ार जाकर वह दवा ख़रीद कर ले आए और उस दवा को खा ले, लेकिन दवा को खा लेने के बाद वह दवा कारगर होकर फ़ायदा पहुँचाए और बीमारी को दूर करे और उसके नतीजे में शिफ़ा हासिल हो जाए यह इनसान के बस का काम नहीं। जब तक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद और नुस्रत न हो।

नौकरी मिल जाना इख़्तियार में नहीं

या जैसे इनसान के इख़्तियार में इतना ही है कि अपने रोज़गार और मुलाज़मत के लिए दरख़्वास्त दे दे लेकिन वह दरख़्वास्त मन्ज़ूर हो जाए और मुलाज़मत (नौकरी) मिल जाए और उसके बाद दोनों के दरमियान मुनासबत (ताल्लुक़) भी क़ायम हो जाए और उस काम के नतीजे में तन्ख़्वाह मिल जाए यह इनसान के इख़्तियार में नहीं, बल्कि इसके लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद और नुस्रत की ज़रूरत है। ये तो दुनिया के काम हुए।

ख़ुशू व ख़ुज़ू इख़्तियार में नहीं

दूसरी तरफ़ आख़िरत के कामों में भी यह उसूल है जैसे इनसान के इख़्तियार में सिर्फ़ इतना है कि मस्जिद में जाकर नमाज़ की नीयत बाँध ले लेकिन उसका दिल और उसका दिमाग़ और उसकी तवज्जोह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ हो जाए और उसकी नमाज़ में ख़ुशू और ख़ुज़ू

(आजिज़ी और अल्लाह का डर) पैदा हो जाए यह उसके इख़्तियार में नहीं, जब तक अल्लाह तआ़ला की मदद शामिले हाल न हो। बहरहाल! दुनिया और आख़िरत का कोई भी काम ऐसा नहीं है जिसमें अल्लाह तआ़ला की मदद की ज़रूरत न हो।

दिन के शुरू में "मदद" तलब कर लो

इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दिन के शुरू ही में यह दुआ़ माँग रहे हैं और गोया अल्लाह तआ़ला से यह फ़रमा रहे हैं ऐ अल्लाह! यह दिन शुरू हो रहा है। मैं ज़िन्दगी के कारोबार और मामलात में दाख़िल होने वाला हूँ। ज़िन्दगी की लड़ाई पेश आने वाली है, न जाने कैसे हालात पेश आएँ। न जाने क्या वाक़िआ़त सामने आएँ, इसलिए मुझे हर-हर क़दम पर आपकी नुस्रत (मदद) दरकार है। मैं आपसे आपकी नुस्रत माँगता हूँ।

लफ़्ज़ "नूरहू" की तशरीह

आगे चौथा लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया "व नूरहू" यानी मैं आपसे इस दिन का नूर माँगता हूँ। अब सवाल यह पैदा होता है कि दिन तो होता ही नूर है। इसलिए कि "नूर" के मायने हैं "रोशनी" और दिन के अन्दर रोशनी ही होती है। जब सूरज निकलता है तो सारी कायनात मुनव्वर व रोशन हो जाती है। मोमिन और काफ़िर, बदकार और गुनाहगार हर एक को अल्लाह तआ़ला दिन की रोशनी अ़ता फ़रमाते हैं, फिर इस दुआ़ का क्या मतलब है कि ऐ अल्लाह! मुझे इस दिन का नूर अ़ता फ़रमा?

नूर से दिल का नूर मुराद है

बात दर असल यह है कि इस दुआ़ में नूर से मुराद यह ज़ाहिरी रोशनी नहीं बल्कि यह दुआ़ की जा रही है कि ऐ अल्लाह! ज़ाहिरी रोशनी तो आपने इस दिन के ज़रिये सबको अ़ता फ़रमा दी, मोमिन को भी और काफ़िर को भी, नेक को भी और बदकार को भी, बच्चे को भी और बूढ़े को भी, मर्द को भी औरत को भी। लेकिन ऐ अल्लाह! मेरे लिए तन्हा यह ज़ाहिरी रोशनी काफ़ी नहीं जब तक आप मुझे मेरे दिल का नूर अ़ता न

फ़रमाएँ। जैसा कि अ़ल्लामा इक़बाल ने कहा है किः

दिले बीना भी कर ख़ुदा से तलब
आँख का नूर दिल का नूर नहीं

इसलिए सिर्फ़ आँखों का नूर काफ़ी नहीं बल्कि बातिन के नूर और दिल के नूर की ज़रूरत है।

अपनी रिज़ा वाले कामों की तौफ़ीक़ दे

इसलिए यह दुआ़ की जा रही है कि ऐ अल्लाह! आपने जो यह ज़ाहिरी रोशनी पैदा फ़रमाई है यह इसलिए पैदा फ़रमाई है ताकि लोग इस रोशनी से फ़ायदा हासिल करते हुए अपने काम अन्जाम दें। क्योंकि अगर अन्धेरा होता और सूरज न निकलता तो कोई आदमी अपना काम अन्जाम नहीं दे सकता था। चुनाँचे कुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

तर्जुमाः हमने तुम्हें यह दिन इसलिए दिया है ताकि इस दिन की रोशनी में अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल तलाश करो। (सूरः रूम आयत 23)

इसलिए यह तो हमारी जिस्मानी ज़रूरत है कि हमें यह रोशनी मिले। लेकिन मैं यह दुआ़ करता हूँ कि ऐ अल्लाह! दिन की यह रोशनी उस वक़्त कारगर होगी जब मैं इस रोशनी में काम भी नूर वाले करूँ, अन्धकार वाले काम न करूँ। और नूर वाले काम वे हैं जिनके करने से आप राज़ी होते हैं। और जिन कामों के करने से आप राज़ी नहीं, वे काम चाहे कितने ही चमकदार और रोशन नज़र आते हों लेकिन हक़ीक़त में वे ज़ुलमत और अन्धेरे हैं, इसलिए मैं आपसे इस दिन का नूर माँगता हूँ।

काम के अन्धेरे से दिल में घुटन होती है

यह "नूर" का लफ़्ज़ बड़ा जामे (मुकम्मल और व्यापक) है। कुरआन व हदीस में "नूर" एक ख़ास कैफ़ियत का नाम है। आप दुनिया के अन्दर बहुत से काम अन्जाम देते हैं लेकिन कुछ काम ऐसे होते हैं कि उनको अन्जाम देने के बाद तबीयत में बहुत ताज़गी और सुरूर होता है। ख़ुशी, इत्मीनान और सुकून हासिल होता है। और कुछ काम ऐसे करते हैं कि उनको अन्जाम देने के बाद तबीयत में परेशानी हो जाती है, घुटन और

उलझन हो जाती है। इत्मीनान और सुकून नहीं होता। इसलिए अगर किसी काम के करने में बड़ा लुत्फ़ और मज़ा आया लेकिन उसके करने के बाद तबीयत में घुटन और एक उलझन पैदा हो गयी तो यह घुटन और उलझन उस काम की ज़ुलमत (अन्धेरा) है, और उस अन्धेरे ने दिल को घेरा हुआ है।

काम के नूर से दिल का सुरूर

कभी-कभी एक काम अन्जाम देने से तबीयत के अन्दर खुशी पैदा हो गई, इत्मीनान और सुकून हासिल हो गया, तबीयत में तसल्ली हो गई। यह दर हक़ीक़त उस काम का नूर है जो अल्लाह तआला ने उस काम के ज़रिये अता फ़रमाया। सुबह से शाम तक की ज़िन्दगी का जायज़ा लेकर देखें। हर इनसान को यह हालत पेश आती है। कोई इनसान इससे बचा हुआ नहीं होगा। इसलिए दिन के शुरू ही में अल्लाह तआला से दुआ कर लें कि ऐ अल्लाह! वह काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइये जिसके नतीजे में दिल का नूर हासिल हो और जिससे दिल को सुकून और इत्मीनान नसीब हो।

लफ़्ज़ "ब-र-क-तहू" की तशरीह

इसके बाद पाँचवाँ लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया "व ब-र-क-तहू"। ऐ अल्लाह! मैं आपसे इस दिन की बरकत माँगता हूँ। यह "बरकत" बड़ी अजीब चीज़ है। उर्दू में या दुनिया की दूसरी ज़बान में इसका एक लफ़्ज़ के ज़रिये तर्जुमा करना मुम्किन नहीं। हम लोग "बरकत" का लफ़्ज़ हर वक़्त बोलते रहते हैं और इसी बरकत से लफ़्ज़ "मुबारक" निकला है। किसी का निकाह हो गया तो कहते हैं: निकाह मुबारक हो, शादी मुबारक हो। मकान बन गया मुबारक हो। गाड़ी मुबारक हो। कारोबार मुबारक हो। मुलाज़मत (नौकरी) मुबारक हो। दिन-रात "मुबारक" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते रहते हैं, लेकिन इस लफ़्ज़ का मतलब बहुत कम लोग समझते हैं।

बरकत का मतलब

"बरकत" का मतलब यह है कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से

किसी चीज़ का हक़ीक़ी और असली फ़ायदा इनसान को अ़ता फ़रमा दे और थोड़ी मेहनत और मशक़्क़त से और थोड़े पैसे से ज़्यादा फ़ायदा हासिल हो जाए। इस काम का नाम "बरकत" है। यह "बरकत" ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की अ़ता है। इनसान पैसे से चीज़ ख़रीद सकता है लेकिन उसकी "बरकत" पैसे से नहीं ख़रीद सकता, और न मेहनत से हासिल कर सकता है। बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की अ़ता है, उन्हीं की तरफ़ से नसीब होती है। जिस पर उनका फ़ज़्ल होता है उसी को यह बरकत अ़ता होती है।

बैडरूम की बरकत नहीं मिली

जैसे आपने एक बड़ा आ़लीशान मकान बना लिया। उस मकान पर करोड़ों रुपया ख़र्च कर दिया। उसको ख़ूब सजा-बजा लिया। दुनिया की तमाम ज़रूरतें उस मकान के अन्दर जमा कर लीं। उस मकान का बैडरूम बड़ा शानदार बनाया। उसके अन्दर शानदार क़िस्म का बैड लगाया। उस पर आ़लीशान गद्दा लगाया, उस बैड के चारों तरफ़ का माहौल बड़ा ख़ूबसूरत बनाया। उसके अन्दर ख़ूशबू छिड़की। यह सब कुछ कर लिया लेकिन जब रात को आकर उस बैड पर लेटे तो सारी रात नींद नहीं आई, करवटें बदलते-बदलते रात गुज़र गई। बताइये वह बैडरूम जो लाखों रुपयों में तैयार किया और उसके अन्दर सारे असबाब (साधन) जमा किये, लेकिन जब उसमें नींद नहीं आई तो क्या वह बैडरूम किसी काम का है? उस बैडरूम से कोई फ़ायदा हासिल नहीं हुआ। अब डाक्टर के पास जा रहे है और नींद की गोलियाँ खा रहे हैं। उसके नतीजे में कभी नींद आती है और कभी नहीं आती। इसलिए बैडरूम तो हासिल हो गया लेकिन उसकी बरकत नहीं मिली।

घर मिला लेकिन बरकत नहीं मिली

इसी तरह घर ख़रीदा लेकिन उस घर में रोज़ाना कोई न कोई मसला खड़ा हुआ है। कभी यह चीज़ टूट गयी और कभी वह चीज़ टूट गयी। कभी इस चीज़ की मरम्मत करा रहे हैं और कभी दूसरी चीज़ की मरम्मत

करा रहे हैं। कभी इस चीज़ पर हज़ारों रुपये ख़र्च हो रहे हैं और कभी दूसरी चीज़ पर ख़र्च हो रहे हैं। इसलिए घर तो मिला लेकिन घर की बरकत न मिली। अब बताइये! क्या बरकत बाज़ार से ख़रीद कर ला सकते हैं? लाखों रुपये ख़र्च करके घर तो बना सकते हैं लेकिन उस घर की बरकत पैसों से नहीं ख़रीद सकते।

गाड़ी मिली लेकिन बरकत न मिली

या जैसे आपने पैसे ख़र्च करके गाड़ी तो ख़रीद ली लेकिन वह गाड़ी कभी स्टार्ट होने से इनकार कर रही है और उसको धक्का लगाना पड़ रहा है और कभी वह मिस्त्री के पास खड़ी है। ये सब परेशानियाँ हो रही हैं। जिसका मतलब यह है कि गाड़ी तो मिली लेकिन गाड़ी की बरकत न मिली।

झोंपड़ा मिला और बरकत भी मिली

दूसरी तरफ़ वह शख़्स है जिसने हलाल कमाई से झोंपड़ा बनाया और घर वालों के साथ उसमें आराम से रहता है। रात को इशा की नमाज़ के बाद घर में आता है और बिस्तर के तकिये पर सर रखते ही नींद की गोद में चला जाता है और आठ घन्टे की भरपूर नींद करके सुबह उठता है। इसका मतलब यह है कि उस शख़्स को झोंपड़ा भी मिला और झोंपड़े की बरकत भी मिली और उसकी राहत भी मिली।

ये सब राहत के सामान हैं

आज की दुनिया ने राहत के असबाब (सामानों और साधनों) का नाम राहत रखा हुआ है। माल व दौलत का नाम, मकान का नाम, गाड़ी का नाम राहत रखा हुआ है। उसको यह मालूम नहीं कि ये सब चीज़ें राहत के असबाब तो हैं लेकन असली राहत नहीं। असली राहत तो कहीं और से अ़ता होती है। वह अगर देना चाहे तो झोंपड़े में राहत व आराम अ़ता फ़रमा दे और अगर वह राहत छीनना चाहे तो बड़े-बड़े महलों के रहने वालों से छीन ले। इसलिए "बरकत" अल्लाह तआ़ला की उस अ़ता का नाम है जो अपने बन्दों को इस तरह अ़ता फ़रमाते हैं कि थोड़ी चीज़

से बहुत सारे काम बन जाते हैं।

"मुबारक हो" का मतलब

इसलिए हम जो दूसरों को यह दुआ देते हैं कि "मुबारक हो" इसके असल मायने यह हैं कि ऐ अल्लाह! आपने उसको राहत का सबब तो अता फ़रमाया, अब उस सबब को कारगर भी बना दीजिए और इसके ज़रिये उसको राहत भी अता फ़रमा दीजिए।

आज हर शख़्स परेशान है

आज हर शख़्स को यह शिकायत है कि इस आमदनी में गुज़ारा नहीं होता। जो शख़्स तीन हज़ार रुपये माहवार कमा रहा है, उसको भी यही शिकायत है। जो शख़्स दस हज़ार रुपये कमा रहा है उसको भी यही शिकायत है, और जो माहाना तीस हज़ार रुपये कमा रहा है वह भी यही शिकायत करता है। मैं आपसे सच कहता हूँ कि जो शख़्स माहाना एक लाख रुपये कमा रहा है वह भी यही कहता है कि गुज़ारा नहीं होता। जब महीने की आख़िरी तारीख़ें आती हैं तो जेबें ख़ाली हो जाती हैं। जो परेशानी तीन हज़ार रुपये कमाने वाले को है वही परेशानी एक लाख रुपये कमाने वाले को भी है।

तीन लाख रुपये माहाना आमदनी वाले का हाल

एक शख़्स की आमदनी तीन लाख रुपये माहाना थी। मैंने अपने कानों से उनकी ज़बान से भी यही सुना कि गुज़ारा नहीं होता। बात असल यही थी कि तीन लाख तो मिल रहे हैं लेकिन तीन लाख की बरकत नहीं मिल रही है। वह बरकत अल्लाह तआला ने छीन ली है, और इसलिए छीन ली है कि अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों में ज़िन्दगी गुज़ारी जा रही है, अब बरकत कहाँ से आए?

वक़्त न होने का सबको शिकवा है

हर शख़्स की ज़बान पर यह शिकायत है कि वक़्त नहीं मिलता। किसी से कहा जाए कि फ़लाँ काम कर लिया करो तो फ़ौरन जवाब में कहेंगे कि वक़्त ही नहीं मिलता, क्या करें फ़ुरसत ही नहीं है। आज ज़रूरी

कामों के लिए वक़्त नहीं मिलता। क्यों वक़्त नहीं मिलता? हालाँकि सबको दिन-रात में 24 घन्टे का वक़्त दिया गया है, चाहे वह फ़क़ीर हो या अमीर हो, ग़रीब हो या सरमायेदार हो, आ़लिम हो या जाहिल हो, मज़दूर हो या किसान हो, या अफ़सर हो, चौबीस घन्टे का वक़्त तो सबको दिया गया है, फिर वक़्त क्यों नहीं मिलता? इसकी वजह यह है कि वक़्त तो सबके पास है लेकिन इस वक़्त की बरकत नहीं है। पता नहीं चलता कि कब दिन शुरू हुआ और कब ख़त्म हो गया। क्योंकि वक़्त की क़द्र दिलों में नहीं है। यह नहीं समझते कि जब यह वक़्त बरबाद कर दिया तो कितनी बड़ी दौलत बरबाद कर दी, इसलिए वक़्त के अन्दर बे-बरकती है।

दिन के शुरू में बरकत की दुआ कर लो

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुआ़ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! दिन शुरू हो रहा है इसलिए मैं आपसे इस दिन की बरकत भी माँगता हूँ ताकि थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम हो जाए। यह बरकत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के अ़ता करने से हासिल होती है।

वक़्त बचाने के असबाब

आज के इस नये दौर में वक़्त बचाने के इतने असबाब (साधन) पैदा हो गये हैं जिसका शुमार नहीं कर सकते। चुनाँचे जो सफ़र पहले घोड़ों और ऊँटों पर महीनों में हुआ करता था आज वह सफ़र एक घन्टे में हवाई जहाज़ के ज़रिये हो जाता है। पहले ज़माने में यह था कि अगर खाना पकाना है तो पहले जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाओ, उनको सुखाओ, फिर उनको सुलगाओ, सिर्फ़ चूल्हा जलाने के लिए एक घन्टा दरकार होता था। उसके बाद खाना पकाने में जो वक़्त लगता था वह इसके अ़लावा होता था। एक चाय भी पकानी है तो एक घन्टा कम से कम लगता था, लेकिन आज यह सूरत है कि अगर तुम्हें चाय पकानी है तो तुमने माचिस जलाई और चूल्हे का कान मरोड़ा और दो मिनट में चाय तैयार कर ली। अब सवाल यह है कि आज तुम्हारे चाय पकाने में जो अट्ठावन मिनट बच गए वे अट्ठावन मिनट कहाँ चले गये?

जो वक़्त बचा वह कहाँ गया?

पहले ज़माने में रोटी पकाने के लिए औरतें पहले चक्की के ज़रिये गेहूँ पीसती थीं। फिर उसका आटा बनाकर उसको गूँधतीं, फिर रोटी पकातीं। सालन बनाना होता तो पहले तमाम मसाले पीसतीं और फिर हाँडी चढ़ातीं। सुबह से लेकर दोपहर तक सारा वक़्त खाना पकाने में ख़र्च हो जाता था। आज वह खाना एक घन्टे में तैयार हो जाता है। जो काम पहले पाँच घन्टे में होता था वह अब एक घन्टे में होने लगा और इसके नतीजे में चार घन्टे बचे। ये चार घन्टे कहाँ गए? लेकिन फिर भी यह शिकायत है कि वक़्त नहीं मिलता, क्यों? यह सब इसलिए कि आज वक़्त तो है लेकिन वक़्त की बरकत उठ गयी है।

गुनाह बरकत को ख़त्म कर देते हैं

और यह दर असल गुनाहों की वजह है। ये गुनाह बरकत को ख़त्म कर देते हैं। पैसों की बरकत भी, समय की बरकत भी और कामों की बरकत भी उठा देते हैं। इसलिए इन गुनाहों के नतीजे में न पैसों की बरकत रही न वक़्त में बरकत रही और न कामों में बरकत रही। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दिन के शुरू ही में यह दुआ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! दिन शुरू होने वाला है, अब मैं ज़िन्दगी के मामलात और कारोबार में दाख़िल होने वाला हूँ ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से मुझे बरकत अ़ता फ़रमा दीजिए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वक़्त में बरकत की मिसाल

हज्जतुल्-विदा (नबी करीम के आख़िरी हज) के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने 10 ज़िलहिज्जा की सुबह मुज़्दलिफ़ा में फ़ज्र की नमाज़ अदा की। फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने से कुछ पहले तक वहाँ पर ठहरे रहे और दुआएँ फ़रमाईं। फिर ऊँट पर सवार होकर "मिना" तशरीफ़ लाए। फिर "मिना" में 'जमरा-ए-अ़क़बा' की 'रमी' फ़रमाई। (शैतान को पत्थर मारे) उसके बाद आपने सौ ऊँटों की

क़ुरबानी फ़रमाई जिसमें से 63 ऊँट ख़ुद अपने हाथ मुबारक से क़ुरबान फ़रमाए।

फिर हर ऊँट के गोश्त में से एक-एक पारचा काटा गया और फिर उन तमाम गोश्त के पारचों से शोरबा तैयार किया गया ताकि तमाम ऊँटों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बरकत नसीब हो जाए। और फ़िर आपने हर पारचे में से थोड़ा-थोड़ा खाया। उसके बाद आपने अपने सर का हलक़ फ़रमाया, (यानी बाल कटाये)। उसके बाद मक्का तशरीफ़ ले गये और वहाँ पर तवाफ़े ज़ियारत फ़रमाया। तवाफ़े ज़ियारत के बाद वापस "मिना" तशरीफ़ लाए और ज़ोहर की नमाज़ "मिना" में अदा फ़रमाई।

आज अगर हमें एक ऊँट ज़िबह करना हो तो हमें उसके लिए पूरा दिन चाहिये, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने 63 ऊँट ज़िबह करने के साथ इतने सारे काम अन्जाम दिये। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सहाबा किराम ने भी ये सब काम अन्जाम दिये। यह दर असल वक़्त की बरकत थी। जो शख़्स जितना अल्लाह तआ़ला के क़रीब होगा और जिसको अल्लाह तआ़ला इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँगे और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँगे, उसके वक़्तों में इतनी ही बरकत होगी। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दिन के शुरू ही में बरकत का सवाल कर लिया।

लफ़्ज़ "हुदाहु" की तशरीह

इस दुआ़ में आख़िरी लफ़्ज़ यह इरशाद फ़रमाया "व हुदाहु" यानी ऐ अल्लाह! मुझे इस दिन में हिदायत अ़ता फ़रमा। "हिदायत" के लफ़्ज़ी मायने हैं सीधा और सही रास्ता पा लेना। जैसे एक शख़्स किसी मन्ज़िल की तरफ़ जा रहा है। अगर उसका रास्ता सही नहीं है तो इसका नतीजा यह होगा कि वह मेहनत करेगा, उसको थकन भी होगी, वक़्त भी ख़र्च होगा लेकिन फ़ायदा कुछ हासिल नहीं होगा। क्योंकि इनसान को अपनी ज़िन्दगी के हर लम्हे में मन्ज़िल तक पहुँचने के लिए सही रास्ता दरकार है। अगर रास्ता ग़लत हो तो इनसान अपनी मन्ज़िल तक नहीं पहुँच

सकता। इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दिन के शुरू में ही यह दुआ़ माँग ली कि मैं जो काम भी करूँ वह सही रास्ते से करूँ, ग़लत रास्ते पर न पड़ूँ और हिदायत से न भटक जाऊँ बल्कि आपकी तरफ़ से हिदायत मेरे शामिले हाल रहे।

दुनिया व आख़िरत के कामों में हिदायत की ज़रूरत

अब दुनिया के कामों के लिए भी हिदायत दरकार है और आख़िरत के कामों के लिए भी हिदायत दरकार है। जैसे कोई शख़्स रोज़ी कमाने के लिए घर से निकले तो इसमें भी हिदायत दरकार है ताकि वह शख़्स ऐसा रास्ता इख़्तियार करे जो उसको रोज़ी उपलब्ध होने का सही ज़रिया हो। अगर वह रोज़ी कमाने के लिए ग़लत रास्ते पर चल पड़े तो मेहनत बेकार जाएगी और रोज़ी भी हासिल नहीं होगी। जैसे एक आदमी बेरोज़गार है और वह नौकरी की तलाश में है। अब वह कभी एक जगह दरख़्वास्त दे रहा है, कभी दूसरी जगह दरख़्वास्त दे रहा है, कभी किसी शख़्स से फ़रमाईश कर रहा है कि मुझे नौकर रख लो, कभी दूसरे से फ़रमाईश कर रहा है। चुनाँचे उसने नौकर के लिए दस जगहों पर दरख़्वास्तें दीं लेकिन वह तमाम जगहों पर नाकाम हो गया और कुछ भी हासिल न हुआ। इसलिए उसकी मेहनत भी बेकार गई और वक़्त भी बरबाद हुआ, और मक़सद भी हासिल न हुआ।

हिदायत हासिल हो जाए तो काम बन जाए

लेकिन अगर अल्लाह तआ़ला उसके दिल में वह जगह डाल दे जहाँ उसके लिए अल्लाह तआ़ला ने नौकरी मुक़द्दर (रखी और तय) फ़रमाई है तो उसका नतीजा यह होगा कि वह पहली ही बार दरख़्वास्त देगा तो उसकी दरख़्वास्त क़बूल हो जाएगी और नौकरी पर बुला लिया जाएगा। इसलिए अल्लाह तआ़ला से पहले ही यह दुआ़ कर लेनी चाहिये कि ऐ अल्लाह! आपने जिस काम में मेरे लिए ख़ैर रखी है उसका सुराग़ मुझे पहली बार ही में मिल जाए ताकि मुझे इधर-उधर भटकना न पड़े।

जब अल्लाह तआ़ला दिलों को जोड़ते हैं तब हिदायत हासिल होती है

और नफ़ा हासिल होता है- जैसे नौकरी तलाश करने वाले के दिल में अल्लाह तआला ने यह बात डाली कि तुम फ़लाँ जगह दरख़्वास्त दो, और दूसरी तरफ़ नौकर रखने वाले के दिल में यह बात डाली कि तुम इसको नौकरी पर रख लो। न उसकी बस में यह बात थी कि वह उस पर ज़ोर डालता कि मुझे ज़रूर नौकरी पर रख लो, और न उसके क़ब्ज़े में यह बात थी कि सही नौकर तलाश कर ले। यह दुनिया तो अल्लाह की कुदरत का कारख़ाना है कि हर एक के फ़ायदे को दूसरे से वाबस्ता कर (जोड़) रखा है, और इसके नतीजे में इनसानों को रोज़ी हासिल होती है।

"इत्तिफ़ाक़" कोई चीज़ नहीं

वैसे तो इनसान के साथ दिन-रात वाक़िआत पेश आते रहते हैं लेकिन कभी-कभी इनसान ग़फ़लत की वजह से उन वाक़िआत को इत्तिफ़ाक़ का नतीजा समझता है और दूसरों से कहता है कि "इत्तिफ़ाक़ से ऐसा हो गया"। जैसे वह कहता है कि मैं घर से बाहर निकला तो इत्तिफ़ाक़ से एक आदमी मिल गया और उसने कहा कि मुझे एक मुलाज़िम की तलाश है। मैंने कहा कि मैं ख़ाली हूँ। चुनाँचे मुझे उसने मुलाज़िम (नौकर) रख लिया। इसका नाम उसने "इत्तिफ़ाक़" रख दिया हालाँकि इस कायनात में कोई काम इत्तिफ़ाक़ से नहीं होता बल्कि यह तो एक 'हकीमे मुतलक़' (यानी अल्लाह तआला) की हिक्मत का कारख़ाना है, उसकी योजना के तहत सब कुछ अन्जाम पा रहा है। यह कोई इत्तिफ़ाक़ नहीं था कि तुम घर से निकले और तुम्हारी उस आदमी से मुलाक़ात हो गई बल्कि वह किसी का भेजा हुआ आया था और तुम भी किसी के भेजे हुए गए थे। दोनों का आपस में मिलाप हो गया और बात बन गई। यह अल्लाह तआला की हिक्मत है।

मेरा एक वाक़िआ

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने कुरआन करीम की तफ़सीर उर्दू ज़बान में लिखी है जो "मआरिफ़ुल कुरआन" के नाम से मशहूर है। लोग उससे फ़ायदा उठा

रहे हैं। हम उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा करना चाहते थे। एक साहिब ने उसका तर्जुमा करना शुरू किया। अल्लाह तआला का करना ऐसा हुआ कि अभी वह सूरः ब-क़रह् का ही तर्जुमा कर रहे थे, जब सूरः ब-क़रह् की इस आयत की तफ़सीर पर पहुँचे:

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

तो उनका इन्तिक़ाल हो गया। वह बहुत अच्छा तर्जुमा करने वाले थे। उनके इन्तिक़ाल के बाद काफ़ी अर्से तक तलाश करता रहा कि कोई अच्छा तर्जुमा करने वाला मिल जाए लेकिन कोई नहीं मिल रहा था। उस दौरान एक बार मेरी हाज़िरी मक्का मुकर्रमा में हुई। मैंने वहाँ जाकर "मुल्तज़म" पर और दुआओं के साथ एक दुआ यह भी की कि ऐ अल्लाह! आपके कलामे पाक की तफ़सीर का तर्जुमा करने का काम है, कोई मुनासिब आदमी नहीं मिल रहा है, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से अच्छा आदमी अ़ता फ़रमा दे जो इस काम को पूरा कर दे।

यह दुआ करके वापस जब पहुँचा तो मेरे दफ़्तर में मुझे ख़बर मिली कि एक साहिब आपसे मिलना चाहते हैं। आपकी ग़ैर-मौजूदगी (अनुपस्थिति) में वह आए थे और आपसे मुलाक़ात करना चाहते थे। मैंने कहा उनको बुला लें। अगले दिन वह मुलाक़ात के लिए आ गए और आकर उन्होंने बताया कि अमेरिका में मेरे बेटे रहते हैं। मैं भी वहाँ गया हुआ था और जब मैं वहाँ से वापस आ रहा था तो रास्ते में उमरा करने के इरादे से सऊदी अ़रब चला गया। उमरा अदा करने के बाद मैंने "मुल्तज़म" पर जाकर यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरी बाक़ी ज़िन्दगी क़ुरआन शरीफ़ में ख़र्च करा दे। मैंने सुना है कि आपके वालिद साहिब की जो तफ़सीर है "मआरिफ़ुल क़ुरआन" आप उसका अंग्रेज़ी में तर्जुमा कराना चाहते हैं। इस काम के लिए मैं अपनी ख़िदमात (सेवाएँ) पेश करता हूँ। मैंने उनसे कहा कि आप "मुल्तज़म" पर यह दुआ करके आ रहे हैं कि मुझे क़ुरआन करीम की ख़िदमत अ़ता फ़रमा दीजिए और मैं यह दुआ करके आ रहा हूँ कि क़ुरआन करीम की ख़िदमत करने वाला अ़ता फ़रमा दीजिए। दोनों की दुआएँ मिल गई हैं इसलिए आप ख़ुद से

यहाँ नहीं आए हैं बल्कि किसी के भेजे हुए आए हैं।

चुनाँचे वह अल्लाह के बन्दे किसी मुआवज़े के बग़ैर और किसी दुनियावी लालच के बग़ैर ख़ालिस अल्लाह के लिए सालों से यह काम कर रहे हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! पाँच जिल्दें उसकी छप चुकी हैं। (लेकिन अफ़सोस कि चन्द रोज़ पहले उनका भी इन्तिक़ाल हो गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन) अब देखने वाले समझ रहे होंगे कि वह इत्तिफ़ाक़न यहाँ पहुँच गए। लेकिन याद रखिए कि इस कायनात में कोई काम "इत्तिफ़ाक़" से नहीं होता बल्कि हर काम अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए 'निज़ामे हिक्मत' (एक पहले से तयशुदा व्यवस्था) के तहत होता है।

अलबत्ता कभी-कभी जब हमें किसी काम का ज़ाहिरी सबब आँखों से नज़र नहीं आता तो हम अपनी हिमाक़त से कह देते हैं कि इत्तिफ़ाक़ से ऐसा हो गया। हक़ीक़त में इत्तिफ़ाक़ कोई चीज़ नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई हिक्मत होती है।

दिन के शुरू में हिदायत माँग लें

इसलिए जब हम दिन के शुरू में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिदायत के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मुझे आज के दिन में हिदायत अ़ता फ़रमाइये। दुनिया के कामों में भी और आख़िरत के कामों में भी। इसका मतलब यह है कि या अल्लाह! आज के दिन मेरी कोशिशें बेकार न जाएँ बल्कि मैं आज के दिन वही काम करूँ जिनमें आपने मेरे लिए ख़ैर मुक़र्रर फ़रमाई है। इसलिए जब इनसान की ज़िन्दगी में कश्मकश के मौक़े आते हैं कि यह काम करूँ या यह करूँ? यहाँ जाऊँ या वहाँ जाऊँ? तो उन सब मौक़ों पर हमें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हिदायत दरकार है। इसलिए यह दुआ़ करनी चाहिये कि ऐ अल्लाह! वह रास्ता अपनाने की तौफ़ीक़ दीजिए जो आपके नज़दीक मेरे लिए दुनिया व आख़िरत के एतिबार से बेहतर है।

यह बड़ी जामे और मुकम्मल दुआ़ है

बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस दुआ़ को देख

लीजिए कि किसी भी इनसान की दुनिया की, आख़िरत की, रोज़गार की, आख़िरत की कोई हाजत ऐसी है जो इस दुआ में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तलब न फ़रमाई हो? यह बड़ी जामे और मुकम्मल दुआ है। अगर किसी को अ़रबी में दुआ याद न हो तो उर्दू (यानी जो भाषा जानता हो उस) में माँग ले कि ऐ अल्लाह! मैं इस दिन की ख़ैर माँगता हूँ और इस दिन की फ़तह माँगता हूँ ताकि कोई रुकावट न आए। अगर कोई रुकावट आए तो वह खुल जाए। और इस दिन में आपकी मदद माँगता हूँ और इस दिन का नूर माँगता हूँ और इस दिन की बरकत माँगता हूँ और इस दिन की हिदायत माँगता हूँ। इसलिए मैं कहा करता हूँ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिखाई हुई अगर एक दुआ भी क़बूल हो जाए तो इनसान के दिलद्दर दूर हो जाएँ और उसका बेड़ा पार हो जाए। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सुबह के वक़्त की एक और दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ .

(سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले दो जुमों से एक दुआ की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) का बयान चल रहा है जो दुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह के वक़्त माँगा करते थे। उसके अलावा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह के वक़्त एक और दुआ माँगा करते थे कि:

अल्लाहुम्मजअल् अव्व-ल हाज़न्नहारि सलाहन् व औस-तहू फ़लाहन् व आख़ि-रहू नजाहन्

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस दिन के शुरू के हिस्से को मेरे लिए नेकी का ज़रिया बना दीजिए। यानी जब यह दिन शुरू हो तो मेरे किसी नेक अमल से शुरू हो और दिन के शुरू के हिस्से में नेकी करूँ। और ऐ अल्लाह!

दिन के दरमियानी हिस्से को मेरे लिए फ़लाह (बेहतराई और अच्छाई) बना दीजिए और ऐ अल्लाह! दिन के आख़िरी हिस्से को मेरे लिए कामयाबी बना दीजिए।

दिन का आग़ाज़ अच्छे काम से करो

इस दुआ के अन्दर आपने दिन को तीन हिस्सों में बाँट दिया। यानी ऐ अल्लाह! दिन के शुरू के हिस्से में मुझे अच्छे और नेक अमल करने की तौफ़ीक़ हो। इसके ज़रिये आपने उम्मत को यह तालीम दे दी कि अगर तुम दिन को अच्छा गुज़ारना चाहते हो और बेहतर परिणाम हासिल करना चाहते हो तो दिन के अव्वल हिस्से को नेक कामों में लगाओ। और आप इसकी दुआ भी कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मुझे इसकी तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं दिन के अव्वल हिस्से को नेक काम में लगाऊँ क्योंकि मुझे मालूम है कि आपकी सुन्नत यह है कि जो बन्दा दिन के अव्वल हिस्से को नेक कामों में लगाएगा तो आप उसका दिन अच्छा गुज़रवाएँगे।

सुबह उठकर यह काम करो

इसी वजह से बिस्तर से उठने के बाद पहला फ़रीज़ा अल्लाह तआ़ला ने यह ज़रूरी किया कि फ़ज्र की नमाज़ के लिए आ जाओ। यह तो फ़र्ज़ है, इसके बाद फ़रमाया कि जब सूरज निकलकर थोड़ा-सा बुलन्द हो जाए तो उस वक़्त इशराक़ की दो रकअ़त अदा कर लो। यह फ़र्ज़ नहीं, वाजिब नहीं, सुन्नते मुअक्कदा भी नहीं बल्कि नफ़्ली नमाज़ है। लेकिन इस नफ़्ली नमाज़ के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे से फ़रमाते हैं कि:

तर्जुमाः ऐ आदम के बेटे! तू दिन के शुरू के हिस्से में मेरे लिए दो रकअ़तें पढ़ लिया कर तो मैं तेरे लिए दिन के आख़िर तक हामी और मददगार हूँगा।

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मेरे दिन के आग़ाज़ (शुरू) को नेक अ़मल का हिस्सा बना दीजिए कि मुझे इसमें नेक अ़मल की तौफ़ीक़ हो जाए ताकि सारा दिन

अल्लाह तआ़ला की हिमायत और मदद मेरे साथ रहे।

दिन की शुरुआत अल्लाह की तरफ़ रुजू से

इस दुआ़ के ज़रिये अपनी उम्मत को यह तरग़ीब दे दी कि दिन के अव्वल हिस्से को अल्लाह की तरफ़ रुजू में ख़र्च करो। फ़ज्र की नमाज़ तो पढ़नी ही है लेकिन उसके बाद कुछ इश्राक़ की नफ़्लें पढ़ लो, कुछ क़ुरआन करीम की तिलावत कर लो और कुछ ज़िक्र कर लो, तस्बीहें पढ़ लो, दुआएँ कर लो। यूँ तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र जिस वक़्त भी किया जाए फ़ज़ीलत की चीज़ है लेकिन सुबह के वक़्त के ज़िक्र में अल्लाह तआ़ला ने बड़ी ख़ुसूसियत रखी है।

सुबह के वक़्त नई ज़िन्दगी का मिलना

हमारे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल-हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि अल्लाह तआ़ला ने सुबह के वक़्त को ऐसा बनाया है कि उस वक़्त कायनात की हर चीज़ में नई ज़िन्दगी आती है। सोए हुए लोग बेदार होते (जागते) हैं, कलियाँ चटकती हैं, गुनचे खिलते हैं, फूल खिलते हैं, परिन्दे जागते हैं और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते हैं। यह वक़्त नई ज़िन्दगी अ़ता करने वाला है। अगर इस नई ज़िन्दगी के वक़्त को अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में गुज़ारोगे तो तुम्हारे दिल के अन्दर रुजू-इलल्लाह (अल्लाह की तरफ़ रुजू करने) का नूर पैदा होगा, इतना नूर दूसरे वक़्तों में ज़िक्र करने से हासिल नहीं होगा।

एक ज़माना वह था कि अगर फ़ज्र के वक़्त मुसलमानों की बस्ती से गुज़र जाओ तो हर घर से क़ुरआन पाक पढ़ने की आवाज़ आया करती थी, चाहे वह किसी आ़लिम का घर हो, या जाहिल का हो, या पढ़े-लिखे का घर हो या अनपढ़ का हो। मुझे बचपन का वह दौर याद है कि जब सारे घरों से सुबह के वक़्त तिलावत की आवाज़ें बुलन्द होती थीं और उसके नतीजे में मुआ़शरे (समाज और माहौल) के अन्दर एक नूरानियत महसूस होती थी। लेकिन अब अफ़सोस यह है कि अगर मुसलमानों की बस्तियों से गुज़रें तो तिलावत (क़ुरआन पाक पढ़ने) की आवाज़ आने के

बजाए फ़िल्मी गानों की आवाज़ें आती हैं।

सुबह के वक़्त हमारा हाल

एक शायर गुज़रे हैं "मजीद लाहौरी मरहूम" यह दैनिक अख़बार जंग में दिल्लगी से भरी नज़्में लिखा करते थे। उन्होंने अपने ज़माने की तस्वीर खींचते हुए कहा था कि:

पहले के लोग सवेरे उठते थे
और उठकर क़ुरआन पढ़ा करते थे
ये सोकर नौ बजे उठते हैं
और उठकर डॉन पढ़ते हैं

जब दिन का पहला हिस्सा ही ऐसे काम में लगा दिया जो गुनाह का काम है या बेकार काम है और अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो गए तो फिर सारे दिन के कामों में नूर कहाँ से आएगा? बहरहाल! अल्लाह तआला ने सुबह के वक़्त में बड़ी बरकत रखी है और बड़ा नूर रखा है। अगर इनसान इस वक़्त को अल्लाह के ज़िक्र में और तिलावत में और तस्बीहों में ख़र्च कर ले तो इन्शा-अल्लाह तआला उसका नूर हासिल होगा।

सुबह के वक़्त में बरकत है

एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के लिए सुबह सवेरे के वक़्त में बरकत रखी है।

और यह बात आपने सिर्फ़ ज़िक्र और इबादत की हद तक बयान नहीं फ़रमाई बल्कि एक शख़्स जो ताजिर थे, उनसे आपने यह जुमला इरशाद फ़रमाया कि तुम सुबह सवेरे अपनी तिजारत के काम अन्जाम दिया करो। वह सहाबी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इरशाद सुनने के बाद मैंने इस पर अमल किया और सुबह ही अव्वल वक़्त में तिजारत का अमल (काम) शुरू कर दिया करता था तो

अल्लाह तआ़ला ने मुझे इसकी बरकत से इतना माल अ़ता फ़रमाया कि लोग मुझपर रश्क (ईर्ष्या) करने लगे।

कारोबार मन्दा क्यों न हो?

अब हमारे यहाँ सारे मामलात उलट गये हैं। दिन के ग्यारह बजे तक बाज़ार बन्द रहता है। ग्यारह बजे के बाद कारोबार शुरू होता है। ग्यारह बजे का मतलब है दोपहर। दिन का एक पहर तो बेकार नींद और ग़फ़लत की हालत में और गुनाहों में गुज़र गया, इस तरह आधा दिन तो गंवा दिया। फिर हर शख़्स की ज़बान पर यह रोना है कि कारोबार मन्दा है, चलता नहीं है। लेकिन कोई यह नहीं देखता कि जिस ज़ात के क़ब्ज़े में कारोबार की तरक़्क़ी और ज़वाल (पतन) है उसके साथ कैसा ताल्लुक़ क़ायम किया हुआ है। हालाँकि कारोबार में तरक़्क़ी का तरीक़ा यह है कि जिसके क़ब्ज़े व इख़्तियार में सारे मामलात हैं उसके साथ ताल्लुक़ात क़ायम करो, उसकी बात मानो और उसकी दी हुई बरकत से फ़ायदा उठाओ। उस ज़ात के साथ ताल्लुक़ ख़राब कर रखा है और फिर यह रोना रो रहे हो कि कारोबार मन्दा है।

यह कामयाबी की सीढ़ी है

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे दिन के अव्वल हिस्से को "सलाह" बना दीजिए यानी नेकी वाले आमाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाइये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन कलिमात के ज़रिये दुआ़ भी फ़रमा दी और उम्मत को सबक़ और पैग़ाम भी दे दिया कि ऐ मेरी उम्मत! तुम अगर कामयाबी चाहते हो तो दिन के अव्वल हिस्से को "सलाह" बनाओ।

दिन के दरमियानी और आख़िरी हिस्से के लिए दुआ़एँ

आगे फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! इस दिन के बीच के हिस्से को "फ़लाह" बना दीजिए। यानी मैं इस दिन में वे काम करूँ जो मेरी फ़लाह (बेहतराई और कामयाबी) के हैं। और ऐ अल्लाह! इस दिन के आख़िरी हिस्से को मेरे लिए "नजाह" यानी कामयाबी बना दीजिए। यानी जब मैं

दिन की जद्दोजहद के बाद शाम के समय घर में दाख़िल हूँ तो मैं पूरी तरह कामयाब होकर जाऊँ और मुत्मईन होकर जाऊँ कि आज का दिन मैंने सही जगह लगाया है और इसका सही नतीजा मुझे हासिल हुआ है। अगर यह दुआ क़बूल हो जाए तो सब कुछ हासिल हो जाए। अल्लाह तआला हम सबको ये दुआएँ करने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ये दुआएं क़बूल भी फ़रमाए। आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

घर से निकलने और बाज़ार जाने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَo (سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़े

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले कुछ जुमों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मस्नून दुआ़ओं की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) का बयान चल रहा है। जब सुबह के समय इनसान अपनी इब्तिदाई (यानी पेशाब-पाख़ाने और नाश्ते वग़ैरह की) ज़रूरतें पूरी करके घर से निकलता है तो घर से बाहर क़दम निकालते वक़्त यह दुआ़ पढ़े:

बिस्मिल्लाहि वअ़्तसम्तु बिल्लाहि व तवक्कल्तु अ़लल्लाहि व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम।

इस दुआ़ में दो कलिमे तो ऐसे हैं जो हर मुसलमान को याद होते हैं- एक पहला कलिमा "बिस्मिल्लाहि" और आख़िरी कलिमा "व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम" दरमियान में दो कलिमे और हैं- एक कलिमा है "वअ़्तसम्तु बिल्लाहि" और दूसरा है "व तवक्कल्तु अ़लल्लाहि" ये दोनों भी छोटे-छोटे कलिमे हैं। इनका याद करना भी कुछ मुश्किल नहीं। .

अल्लाह का सहारा ले लो

इस दुआ़ के मायने यह हैं कि मैं अल्लाह तआ़ला के नाम पर इस घर से क़दम निकाल रहा हूँ और मैं अल्लाह तआ़ला का सहारा लेता हूँ और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करता हूँ। जब इनसान घर से निकलता है तो किसी न किसी मक़सद से निकलता है। किसी का मक़सद दूसरे से मिलना होता है, किसी का मक़सद बाज़ार से ख़रीदारी होता है, किसी का मक़सद बेचना होता है, कोई नौकरी की ग़रज़ से कोई तिजारत की ग़रज़ से, कोई खेती-बाड़ी की ग़रज़ से निकलता है, लेकिन उस मक़सद में कामयाबी होगी या नहीं होगी, इसका किसी को पता नहीं। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह तालीम फ़रमाई कि जब तुम किसी काम के लिए निकलो तो अल्लाह का सहारा ले लो और यह कह दो कि जो मैं दूसरे सहारे अपने काम के लिए इख़्तियार करूँगा वे तो ज़ाहिरी असबाब (साधन और ज़रिये) हैं लेकिन असली और हक़ीक़ी सहारा तो ऐ अल्लाह! आप ही का है।

अल्लाह के सहारे पर भरोसा कर लो

मिसाल के तौर पर किसी जगह जाने के लिए वह ज़ाहिरी सहारा यह इख़्तियार करेगा कि किसी सवारी में सवार हो जाएगा ताकि वह सवारी उसको मन्ज़िल तक पहुँचा दे। लेकिन क्या मालूम कि सवारी मिले या न मिले। अगर वह सवारी मिल जाए तो मालूम नहीं कि कितनी दूर तक वह

सवारी साथ चले और सही मन्ज़िल पर पहुँचा सके या न पहुँचा सके। रास्ते में कोई हादसा न हो जाए या और कोई रुकावट खड़ी न हो जाए। ये सारी संभावनाएँ मौजूद हैं। इसलिए घर से निकलते समय इनसान यह कह दे कि मैं ज़ाहिरी सहारे इख़्तियार तो करूँगा लेकिन किसी सहारे पर भरोसा नहीं, भरोसा तो सिर्फ़ आपके सहारे पर है।

अब यह सफ़र इबादत बन गया

अब जो बन्दा घर से निकलते समय अपना मामला अल्लाह को सौंप दे और यह कह दे कि ऐ अल्लाह! मैं आप ही का सहारा पकड़ रहा हूँ और आप ही पर भरोसा कर रहा हूँ। इन ज़ाहिरी असबाब पर, इस सवारी पर और इन आलात (यंत्र और तन्त्रों) पर भरोसा नहीं, मेरा भरोसा तो ऐ अल्लाह! आप पर है। तो जो बन्दा अपना सब कुछ अल्लाह तआ़ला के हवाले कर रहा है, क्या अल्लाह तआ़ला उसकी मदद नहीं फ़रमाएँगे? और जब उनका सहारा पकड़ लिया तो अब यह सारा सफ़र इबादत बन गया।

सारी ताकतें अल्लाह तआ़ला की दी हुई हैं

आगे फ़रमायाः

व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम

तर्जुमाः किसी के अन्दर कोई ताक़त और कुव्वत नहीं मगर वह अल्लाह की दी हुई है।

यानी मैं जो चल रहा हूँ यह चलने की ताक़त भी अल्लाह की दी हुई है। अगर मैं किसी सवारी पर सवार हूँगा और वह सवारी चलेगी तो वह सवारी भी अल्लाह की दी हुई कुव्वत से चलेगी। और अगर उसके ज़रिये किसी मन्ज़िल पर पहुँचूँगा तो यह पहुँचना भी अल्लाह तआ़ला की अ़ता होगी क्योंकि अल्लाह के सिवा किसी के अन्दर कोई ताक़त नहीं है। इसलिए घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दिया ताकि तुम्हारा ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला के साथ क़ायम हो जाए और तुम्हारा घर से निकलना भी इबादत बन जाए।

इसके बाद अगर किसी सवारी पर सवार हों तो उस मौक़े की दुआ पिछले बयानों में भी अ़र्ज़ कर दी थी, वे दुआ़एँ सवार होते वक़्त पढ़ लें।

बाज़ार ना-पसन्दीदा जगहें हैं

उसके बाद आप किसी ज़रूरत की चीज़ ख़रीदने के लिए या अपनी दुकान खोलने के लिए बाज़ार की तरफ़ चले तो बाज़ार के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है:

तर्जुमाः इस रूए-ज़मीन पर जितनी जगहें हैं, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा जगह मस्जिदें हैं (जहाँ उसके बन्दे उसके सामने आकर सर सज्दे में रखते हैं और अपनी बन्दगी का इज़हार करते हैं) और सबसे ना-पसन्दीदा और बुरी जगह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बाज़ार हैं। इसलिए कि बाज़ार में गुनाह, नाफ़रमानी और बुराईयाँ व बदकारियाँ कसरत से पाई जाती हैं। (मुस्लिम शरीफ़, किताबुल् मसाजिद)

बाज़ार के अन्दर होने वाली बुराईयाँ

बाजार में व्यापारी लोग ग्राहक को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने के लिए गुनाह करते हैं। जैसे व्यापारी लोग ग्राहकों को मुतवज्जह करने के लिए गन्दी और अश्लील तस्वीरें लगाते हैं, जिसके नतीजे में लोगों के गन्दे जज़्बात उभार कर उनको अपनी तरफ़ मुतवज्जह (आकर्षित) कर रहे हैं। औरत को एक बिकाऊ माल क़रार देकर उसके एक-एक अंग को सरेबाज़ार रुस्वा किया जा रहा है, ताकि लोग आकर हमारी दुकान से माल ख़रीदें। इसके अ़लावा झूठ और धोखे का बाज़ार गर्म है। हक़ीक़त में जो सिफ़त और ख़ूबी सामान में मौजूद नहीं है उसका दावा किया जा रहा है। इसलिए धोखा, फ़रेब, झूठ, अश्लीलता, नंगापन और इनके अ़लावा अनगिनत बुराईयाँ बाज़ारों में पाई जाती हैं इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा ना-पसन्दीदा जगह बाज़ार हैं।

ऐसे ताजिर गुनाहगार बनाकर क़ियामत के दिन उठाए जाएँगे

अगर सही मायने में वह मुसलमानों का बाज़ार हो और सारे ताजिर और ख़रीदार इस्लाम के अहकाम की पाबन्दी करें तो फिर वह बाज़ार भी इबादत का स्थान बन जाता है, क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें "रह्बानीयत" की तालीम नहीं दी कि दुनिया को छोड़कर जंगल में बैठ जाओ, बल्कि हमें इस दुनिया के अन्दर रहते हुए इस्लामी अहकाम की पाबन्दी की तालीम फ़रमाई। ताजिरों के बारे में एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः ताजिर लोग आख़िरत में फ़ाजिर (गुनाहगार व बदकार) बनाकर उठाए जाएँगे। "फ़ाजिर" के मायने हैं "गुनाहगार" सिवाए उनके जो परहेज़गार हों और नेक काम करें और सच्चाई से काम लें। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

अमानतदार ताजिरों का हश्र नबियों के साथ होगा

दूसरी तरफ़ एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः अगर कोई ताजिर सच्चा और अमानतदार है तो क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआला उसका हश्र अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और सिद्दीक़ीन, शहीदों और नेक लोगों के साथ फ़रमाएँगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

चूँकि बाज़ार में इनसान इसलिए बैठता है कि लोगों से पैसे खींचे इसलिए उस मौक़े पर अक्सर नाजायज़ कामों का इर्तिकाब (जुर्म) हो जाता है। झूठ बोलकर और झूठी क़सम खाकर लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह किया जाता है। इसलिए आपने फ़रमाया कि बाज़ार सब से बुरी जगहें हैं।

बिना ज़रूरत बाज़ार मत जाओ

चूँकि ये बाज़ार सब से बुरी जगहें हैं इसलिए बिना ज़रूरत वहाँ मत जाओ। ज़रूरत हो तो बेशक जाओ। लेकिन वैसे ही घूमने की वजह से बाज़ार जाना ठीक नहीं। इसलिए कि वहाँ बुराई और गुनाह के हरकारे

फिर रहे हैं। गुनाहों के तक़ाज़े इनसान के सामने आते रहते हैं। कुछ पता नहीं कि वहाँ पर किस गुनाह के जाल में फंस जाओ। इसलिए बिना ज़रूरत मत जाओ।

बाज़ार जाते वक़्त यह दुआ पढ़ लें

हाँ! जब ज़रूरत की वजह से बाज़ार गये तो उस मौक़े के लिए हदीस शरीफ़ में आता है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ार तशरीफ़ ले जाते तो यह फ़रमाया करते थेः

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

तर्जुमाः यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा माबूद है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाहत उसी की है और तमाम तारीफ़ें उसी की हैं। वही ज़िन्दा करता है और वही मौत देता है, और वह हर चीज़ पर कुदरत (ताक़त और इख़्तियार) रखने वाला है।

बाज़ार पहुँचकर अल्लाह तआ़ला को मत भूलो

ये कलिमात बाज़ार पहुँचते समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अदा फ़रमाए। क्यों अदा फ़रमाए? इसलिए अदा फ़रमाए ताकि बन्दे को एहसास हो जाए कि मैं एक ऐसे ख़ालिक़ और मालिक का बन्दा हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं और इस कायनात में जो कुछ हो रहा है उसी के हुक्म और उसी की मर्ज़ी से हो रहा है। और बाज़ार में पहुँचने के बाद आ़म तौर पर इनसान को इस एहसास से ग़फ़लत हो जाती है। इसलिए कि बाज़ार में दुनिया की चमक-दमक इनसान को अपनी तरफ़ खींचती है जिससे यह अन्देशा होता है कि उस चमक-दमक को देखकर कहीं यह इनसान अपने ख़ालिक़ व मालिक को न भुला बैठे। इसलिए इस दुआ़ के ज़रिये बता दिया कि दुनिया की यह चमक-दमक अपनी जगह, लेकिन तुम अल्लाह तआ़ला के बन्दे हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम दुनिया की चमक-दमक से मरऊब होकर और इससे धोखा खाकर अपने मालिक के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम कर बैठो। इसलिए दुनिया को बरतो लेकिन

दुनिया के पैदा करने वाले को मत भूलो।

दुनिया की हकीकत यह है

यह दुनिया अल्लाह तआला ने अजीब चीज़ बनाई है। इस दुनिया के बिना गुज़ारा भी नहीं। अगर आदमी के पास पैसे न हों, खाने की कोई चीज़ मयस्सर न हो, पहनने को कपड़ा न हो, रहने को मकान न हो तो वह कैसे ज़िन्दा रहेगा? लेकिन अगर यही दुनिया इनसान के दिल व दिमाग़ पर छा जाए और अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल कर दे तो इससे ज़्यादा ख़तरनाक कोई चीज़ नहीं, और इससे ज़्यादा तबाह करने वाली कोई चीज़ नहीं। इसलिए एक मोमिन को इस दुनिया में बहुत फूँक-फूँक कर क़दम उठाते हुए रहना पड़ता है। उसको इस बात का ख़्याल रखना पड़ता है कि मैं इस दुनिया को बरतूँ ज़रूर लेकिन यह दुनिया मेरे दिल के अन्दर दाख़िल न हो जाए। इसकी मुहब्बत मेरे ऊपर ग़ालिब न आ जाए। यह दुनिया मुझे अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल करने का ज़रिये न बने। एक मोमिन को यह एहतियात करनी पड़ती है।

सहाबा किराम और दुनिया

हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरबियत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी शान से फ़रमाई थी कि दुनिया उनके क़दमों में ढेर हुई। क़ैसर व किसरा (ईरान और रूम बादशाहों) के ख़ज़ाने उनके ऊपर निछावर किये गये और रूम और ईरान की आलीशान सभ्यताओं को उन्होंने फ़तह किया और उन सभ्यताओं के बाज़ारों में भी पहुँचे और उन सभ्यताओं की चमक-दमक को भी देखा, लेकिन वह चमक-दमक और उन बाज़ारों की रौनक़ उनको धोखा न दे सकी।

एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ किताबों में आता है कि उन्होंने रूम के एक शहर का घेराव किया हुआ था और रूमी लोग क़िले में बन्द होकर लड़ रहे थे। जब घेराव लम्बा हो गया तो शहर वालों ने एक चाल चली। यह फ़ैसला किया कि इन मुसलमानों के

लिए शहर का दरवाज़ा खोल दिया जाए और इनको अन्दर दाख़िल होने दिया जाए और चाल यह चली कि वह दरवाज़ा खोला जो शहर के रौनक़दार बाज़ार से गुज़रता था। जिसके दोनों तरफ़ आलीशान दुकानें थीं और हर दुकान पर सजी-संवरी एक औरत को बैठा दिया। उनकी सोच यह थी कि अ़रब के जंगल और बयाबानों के रहने वाले लोग हैं और मुद्दतों से अपने घरों से दूर हैं। ग़रीब लोग हैं। जब ये अचानक बाज़ार में दाख़िल होंगे और वहाँ सजी-धजी दुकानें देखेंगे और उन दुकानों में हसीन व ख़ूबसूरत औ़रतों को बैठा हुआ देखेंगे तो इसके नतीजे में ये उन दुकानों की तरफ़ और उन औ़रतों की तरफ़ मुतवज्जह हो जाएँगे और हम पीछे से उनपर हमला करेंगे, उनपर फ़तह पा लेंगे। दूसरी तरफ़ औ़रतों को भी यह ताकीद कर दी गई थी कि अगर कोई तुम से छेड़छाड़ करे तो इनकार मत करना।

चुनाँचे शहर के अमीर ने अचानक हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नाम पैग़ाम भेजा कि हम अपने शहर का दरवाज़ा खोल रहे हैं, आप अपने लश्कर को लेकर अन्दर आ जाएँ। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह पैग़ाम सुना तो अपने लश्कर से कहा कि तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया गया है, तुम उसके अन्दर दाख़िल हो जाओ। लेकिन मैं तुम्हारे सामने क़ुरआन करीम की एक आयत पढ़ता हूँ इस आयत को अपने ज़ेहन में रखना और इस आयत पर अ़मल करते हुए दाख़िल होना। वह आयत यह है:

तर्जुमाः यानी आप मोमिनों से कह दीजिए कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। (सूरः नूर आयत 30)

इतिहासकारों ने लिखा है कि हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लश्कर शहर में दाख़िल हुआ और पूरे बाज़ार से गुज़र गया लेकिन किसी एक शख़्स ने दाएँ-बाएँ नज़र उठाकर भी नहीं देखा कि वहाँ क्या है, यहाँ तक कि महल पर क़ब्ज़ा कर लिया।

जब शहर वालों ने यह मन्ज़र देखा कि यह ऐसी क़ौम है जो फ़ातेह (विजीय) बनकर शहर में दाख़िल हुई और रास्ते के दोनों तरफ़ जो सजी

हुई और भरी-पुरी दुकानें थीं और जो हसीन व ख़ूबसूरत औरतें थीं उनकी तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देखा और सीधे महल पर पहुँच गये तो उनको देखकर यह यक़ीन हो गया कि ये ज़रूर अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे हैं और सिर्फ़ यह मन्ज़र देखकर शहर के अक्सर लोग मुसलमान हो गये और कलिमा "ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि" पढ़ लिया।

दुनिया में रहकर अल्लाह तआला को न भूलो

अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरबियत इस तरह फ़रमाई थी कि:

शान आँखों में न जचती थी जहाँदारों की

चाहे कितने बड़े-बड़े जहाँदार (दुनिया रखने वाले/मालदार) आ जाएँ या दुनिया की रौनकें आ जाएँ लेकिन उनका दिल हर वक़्त अल्लाह तआला के साथ लगा हुआ था और आख़िरत के साथ लगा हुआ था। इसलिए दुनिया उनको धोखा नहीं दे सकती थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मुसलमान से यह चाहते हैं कि तुम बेशक दुनिया में रहो, बाज़ार जाओ, दुनिया को बरतो, लेकिन अल्लाह तआला को न भूलो। मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी ने ख़ूब कहा है कि:

तुम शौक़ से कालिज में पलो, पार्क में फूलो
चाहे गुब्बारे में उड़ो, चर्ख़ पर झूलो
पर एक सुख़न बन्दा-ए-आजिज़ की रहे याद
अल्लाह को और अपनी हक़ीक़त को न भूलो

कहीं भी चले जाओ लेकिन अल्लाह तआला को और अपनी हक़ीक़त को फ़रामोश न करो। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाज़ार जाते हुए हर मुसलमान को यह दुआ पढ़ने की तालीम फ़रमाई। जो बन्दा बाज़ार जाते हुए ये कलिमात पढ़ लेगा तो इन्शा-अल्लाह बाज़ार की रंगीनियाँ और बाज़ार की रौनकें उसको अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल न कर पाएँगी।

ख़रीद व बेच के वक़्त की दुआ

फिर जब बाज़ार में पहुँच गये और वहाँ कुछ ख़रीदारी करनी है या सामान बेचना है तो उस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ पढ़ा करते थेः

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन् सफ़्क़तिन् ख़ासि-रतिन् व यमीनिन् फ़ाजि-रतिन्

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं किसी घाटे के सौदे से पनाह माँगता हूँ और झूठी क़सम से पनाह माँगता हूँ।

जब इनसान सौदा करता है तो कभी फ़ायदा हो जाता है और कभी नुक़सान हो जाता है, और कभी झूठी क़सम खानी पड़ती है। इसलिए दुआ़ कर ली कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे घाटे के सौदे से पनाह माँगता हूँ ताकि घाटे का सौदा भी न हो और कहीं झूठी क़सम खाने की ज़रूरत भी पेश न आए।

ऐसा बन्दा नाकाम नहीं होगा

अब जो बन्दा घर से निकलते वक़्त अल्लाह का नाम ले रहा है और अल्लाह का सहारा लेकर और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करके निकल रहा है और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और क़ुव्वत का एतिराफ़ (इक़रार) करके निकल रहा है, और फिर जब बाज़ार में आ रहा है तो अल्लाह तआ़ला की तौहीद (यानी उसके अकेला माबूद होने) का इक़रार कर रहा है और अपनी हाजत अल्लाह तआ़ला से माँग रहा है तो ऐसे बन्दे को अल्लाह तआ़ला कभी नाकाम और नामुराद नहीं फ़रमाएँगे। बहरहाल! ये वे दुआ़एँ थीं जो बाज़ार से मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तलक़ीन (सिखाई और तालीम) फ़रमाईं। अल्लाह तआ़ला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ और इनकी हक़ीक़त समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

घर में दाख़िल होने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ.

(سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

पिछले चन्द जुमों से मस्नून दुआओं की तशरीह (ख़ुलासे और व्याख्या) का सिलसिला चल रहा है। आख़िर में सुबह के वक़्त जो दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम माँगा करते थे, उनकी थोड़ी-सी तशरीह अ़र्ज़ की थी। फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो उस मौक़े के लिए जो दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल की गयी है वह यह है:

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ैरल्-मौलजि व ख़ैरल्-मख़्रजि बिस्मिल्लाहि वलज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बना तवक्कल्ना।

दाख़िल होने की भलाई माँगता हूँ

यह मुख़्तसर-सी दुआ है लेकिन इस दुआ में मायने की एक दुनिया पोशीदा है। इस दुआ में क्या-क्या चीज़ें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँग लीं। इस दुआ के पहले जुमले का तर्जुमा यह है कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे अपने दाख़िल होने की भलाई माँगता हूँ। यानी दाख़िले के बाद मुझे अच्छे हालात से साबक़ा पड़े क्योंकि मैं कुछ देर तक घर से बाहर रहा, मुझे नहीं मालूम कि मेरे पीछे घर में क्या वाक़िआत पेश आए। ऐ अल्लाह! अब जबकि मैं घर में दाख़िल हो रहा हूँ तो वहाँ पर मैं इत्मीनान का, ख़ुशी का और भलाई का मन्ज़र देखूँ और आफ़ियत का मन्ज़र देखूँ।

मेरा दाख़िल होना अच्छा हो जाए

कितनी बार इनसान के साथ ये वाक़िआत पेश आते हैं कि अच्छी हालत में घर से निकला और कुछ देर घर से बाहर रहा लेकिन जब दोबारा घर में दाख़िल हुआ तो मन्ज़र बड़ा तश्वीशनाक (चिन्ताजनक) नज़र आया- जैसे किसी को बीमार देखा, किसी को हादसे का शिकार देखा या किसी को कोई और परेशानी पेश आ गई। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में दाख़िल होने से पहले यह दुआ माँगने की तालीम फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे घर में दाख़िल होने की भलाई चाहता हूँ ताकि दाख़िल होने के बाद मुझे आफ़ियत (चैन-सुकून) का मन्ज़र नज़र आए। घर वाले आफ़ियत से हों, कोई परेशानी की बात नज़र न आए। कोई नाफ़रमानी और गुनाह की बात पेश न आए। ऐ अल्लाह! मेरा दाख़िल होना अच्छा हो।

निकलने की भलाई माँगता हूँ

दूसरा जुमला यह इरशाद फ़रमायाः

व ख़ैरल्-मख़्रजि

यानी ऐ अल्लाह! मैं आपसे घर से निकलने की भी भलाई माँगता हूँ कि मेरा घर से निकलना भी बेहतर हो। मतलब यह है कि घर में दाख़िल होने के बाद मैं काफ़ी देर तक घर में रहूँगा। लेकिन हमेशा तो घर में

रहना नहीं होगा, बल्कि किसी मौक़े पर दोबारा घर से निकलना होगा। इसलिए जब दोबारा निकलूँ तो उस निकलने के समय भी मेरे लिए ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा दीजिए और उस समय भी भलाई ही भलाई हो और आ़फ़ियत ही आ़फ़ियत (अमन-चैन) हो। इस जुमले के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दोनों किनारों का इहाता (घेराव) फ़रमा दिया कि मेरा दाख़िल होना भी बेहतर हो और जब निकलूँ तो मेरा निकलना भी बेहतर हो। गोया कि जब तक मैं घर में रहूँ अमन-चैन से और इत्मीनान से रहूँ, कोई तकलीफ़ पेश न आए और कोई परेशानी सामने न आए।

"भलाई" बहुत जामे लफ़्ज़ है

इस दुआ़ में आपने "ख़ैर" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया जिसके मायने हैं "भलाई" यानी दाख़िल होने के समय भी भलाई हो और निकलने के समय भी भलाई हो। यह "भलाई" ऐसा जामे (मुकम्मल और व्यापक) लफ़्ज़ है कि इसमें दीन व दुनिया की सारी हाजतें जमा हैं। दुनिया की भलाई यह है कि आदमी को चैन-सुकून मयस्सर हो। सेहत मयस्सर हो, कोई बीमारी न हो, कोई तकलीफ़ और परेशानी न हो, घर के सब अफ़राद ख़ैर व आ़फ़ियत से हों, कोई आर्थिक तंगदस्ती न हो। और आख़िरत की भलाई भी इस दुआ़ में शामिल है कि ऐ अल्लाह! जब तक मैं घर में रहूँ मुझे आख़िरत के एतिबार से भी भलाई नसीब हो। यानी गुनाह और नाफ़रमानी का काम न करूँ। आपको नाराज़ करने वाला कोई अ़मल मुझसे न हो, और अपने बीवी-बच्चों को गुनाहों से महफ़ूज़ पाऊँ।

जब इनसान यह दुआ़ माँगते हुए घर में दाख़िल हो रहा है तो इसका नतीजा यह निकला कि घर की पूरी ज़िन्दगी इस दुआ़ के अन्दर दाख़िल हो गई और दुनिया व आख़िरत की सारी भलाईयाँ इस दुआ़ के अन्दर आ गईं।

अगर भलाई मिल जाए तो बेड़ा पार है

अगर हर मुसलमान रोज़ाना घर में दाख़िल होते समय यह दुआ़ माँगे

और ज़रा ध्यान से माँगे और माँगने के अन्दाज़ में माँगे, तवज्जोह करके माँगे, चाहे किसी भी भाषा में माँगे कि ऐ अल्लाह! मैं दाख़िले की भी भलाई चाहता हूँ और निकलने की भी भलाई चाहता हूँ। अगर यह एक दुआ पूरी तरह अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल हो जाए तो सारे दिलद्दर दूर हो जाएँ और घर की सारी ज़िन्दगी जन्नत की ज़िन्दगी बन जाए और घर की ज़िन्दगी दुनिया व आख़िरत की नेमतों से मालामाल हो जाए।

अल्लाह तआला के नाम से दाख़िल होते हैं

आगे यह जुमला इरशाद फ़रमायाः

बिस्मिल्लाहि वलजूना

तर्जुमाः हम अल्लाह तआला का नाम लेकर दाख़िल होते हैं।

मतलब यह है कि ऐ अल्लाह! मैंने तो दुआ माँग ली कि मेरे हालात दुरुस्त हों, लेकिन हालात को मैं ख़ुद दुरुस्त करने पर क़ादिर नहीं हूँ। मेरे बस में यह बात नहीं है कि घर में जाकर जो मन्ज़र देखूँ वह मेरे इत्मीनान और ख़ुशी वाला हो। जब तक आपकी मर्ज़ी और फ़ैसला शामिले हाल नहीं होगा उस समय तक यह बात नहीं हो सकती। इसलिए मैं आपका नाम लेकर दाख़िल होता हूँ।

अल्लाह तआला के नाम से निकलते हैं

आगे फ़रमायाः

व बिस्मिल्लाहि ख़रजूना

तर्जुमाः और अल्लाह ही का नाम लेकर हम निकलते हैं।

जब दाख़िल हों तो अल्लाह का नाम लेकर दाख़िल हों, और जिस वक़्त घर से बाहर निकलें तो उस वक़्त भी अल्लाह का नाम लेकर निकलें। इस दुआ के ज़रिये हम अल्लाह से फ़रियाद करते हैं कि ऐ अल्लाह! हमारा दाख़िल होना और बाहर निकलना दोनों दुरुस्त फ़रमा दे।

अल्लाह तआला पर भरोसा करते हैं

आख़िर में यह जुमला इरशाद फ़रमायाः

व अ़लल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना

तर्जुमाः और अल्लाह ही पर जो हमारा परवर्दिगार है, हम भरोसा करते हैं।

मतलब यह है कि ऐ अल्लाह! हमने दुआ़ तो कर ली और आप से माँग लिया कि ख़ैर ही ख़ैर हो, कोई बुराई पेश न आए लेकिन अगर फ़र्ज़ करो कि इस दुआ़ के माँगने के बाद कोई ऐसा वाक़िआ़ पेश आया जो बज़ाहिर देखने में ख़ैर नहीं लग रहा है तो ऐ अल्लाह! हम आप पर भरोसा करते हैं कि आपने जो फ़ैसला फ़रमाया वही हमारे हक़ में अच्छा और बेहतर है।

जब तक अल्लाह तआ़ला से माँगा नही था, उस समय तक तो कुछ भी हो सकता था। बड़े से बड़ा शर (बुराई और परेशानी) पैदा हो जाता, लेकिन ऐ अल्लाह! जब हमने मामला आपके हवाले कर दिया और आप से ख़ैर माँग ली और इस यक़ीन के साथ माँग ली कि आप ज़रूर अ़ता फ़रमाएँगे। फिर अगर इत्तिफ़ाक़न कोई ऐसा वाक़िआ़ पेश आ गया जो बज़ाहिर देखने में ख़ैर नहीं मालूम हो रहा है बल्कि बुरा लग रहा है तो भी हमें आप पर यक़ीन और भरोसा है कि जो वाक़िआ़ बज़ाहिर शर (बुरा और नागवार) नज़र आ रहा है और देखने में यह नागवार मालूम हो रहा है लेकिन आपके फ़ैसले के अनुसार हमारे हक़ में वही बेहतर है।

हमेशा अमन-सुकून माँगो

दर हक़ीक़त एक मोमिन का यही काम है कि वह अल्लाह तआ़ला से हमेशा ख़ैर ही माँगे और आ़फ़ियत (अमन-सुकून) ही माँगे। कभी मुसीबत न माँगे। लेकिन इसके बावजूद अगर कोई नागवार वाक़िआ़ पेश आ जाता है तो फिर अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखो कि यह नागवार वाक़िआ़ भी हमारे लिए बेहतर और ख़ैर होगा, क्योंकि हमने अपना मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया है।

जैसे बेटा अपने को बाप के हवाले कर दे

इसकी एक मिसाल यह हो सकती है कि जैसे एक बेटा अपना

मामला बाप के हवाले कर देता है कि आप मेरी तरबियत कीजिए और मेरे दुनिया व आख़िरत के फ़ायदों और भलाई की निगरानी कीजिए। अब बाप उसकी बेहतराई के लिए क़दम उठाता है। उसकी निगरानी के नतीजे में कभी-कभी बाप कोई ऐसी बात भी कर गुज़रता है जो बेटे को बज़ाहिर नागवार मालूम होती है। बेटे का दिल नहीं चाह रहा था कि यह बात होती लेकिन बाप जानता है कि मुझे इस बेटे की तरबियत करनी है और इस तरबियत के दृष्टिकोण से यह बात ज़रूरी है।

जैसे बेटा किसी जगह तफ़रीह के लिए जाना चाहता है और बाप जानता है कि उसका वहाँ जाना फ़ायदेमन्द न होगा इसलिए बाप बेटे को तफ़रीह के लिए जाने की इजाज़त नहीं देता। अब बेटे को सदमा और रंज हो रहा है कि मेरा दिल तफ़रीह को चाह रहा था लेकिन बाप ने मुझे रोक दिया। अब बज़ाहिर बाप का तफ़रीह को जाने से रोक देना बेटे के लिए नागवार है लेकिन चूँकि मामला बाप के हवाले कर दिया गया था, वही उसकी बेहतरी जानता है। इसलिए अगर वह बेटा फ़रमाँबरदार और नेकबख़्त है तो उसे यह यक़ीन होना चाहिये कि अगरचे तफ़रीह की इजाज़त न देना मुझे नागवार हुआ लेकिन फ़ैसला मेरे बाप ही का बेहतर है, मेरा फ़ायदा इसी में है।

दुआ करके अपना मामला अल्लाह के हवाले कर दिया

इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तालीम फ़रमाई कि जब तुम अल्लाह तआला से कोई दुआ करते हो तो उस दुआ करने के मायने यह होते हैं कि तुमने अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। जैसे आपने अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे फ़लाँ बीमारी हो रही है, मेरी इस बीमारी को दूर फ़रमा। लेकिन दुआ माँगने के बावजूद वह बीमारी नहीं जा रही है। ऐसा बहुत होता रहता है कि वह बीमारी लम्बी हो गई और बहुत समय के बाद वह बीमारी दूर हुई।

अब बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि जो दुआ माँगी थी वह क़बूल न हुई लेकिन सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह तालीम फ़रमा रहे हैं कि दुआ माँगने के मायने यह हैं कि तुमने अपना मामला

अपने अल्लाह के हवाले कर दिया और यह कह दिया कि मेरी ख़्वाहिश यह है कि मेरी यह बीमारी दूर हो जाए। अब अगर अल्लाह तआ़ला ने उस बीमारी को और चन्द दिन जारी रखा तो इसका मतलब यह है कि उस बीमारी का जारी रहना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है, क्योंकि तुमने अपना मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया था। अगर तुमने अल्लाह के हवाले न किया होता और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा न किया होता तो फिर यह बीमारी तुम्हारे हक़ में अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है। लेकिन जब अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया तो अब यह बीमारी तुम्हारे हक़ में बेहतर है।

बीमारी के ज़रिये तुम्हारी सफ़ाई मक़सूद है

वह बीमारी तुम्हारे हक़ में कैसे बेहतर है? वह इस तरह बेहतर है कि हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब भी कोई बन्दा बीमार होता है तो बीमारी के दौरान उसको जितनी तकलीफ़ें पहुँचती हैं वे सब उसके हक़ में बुराईयों का कफ़्फ़ारा (बदला और मिटाने वाली) होती हैं। अल्लाह तआ़ला यह नहीं चाहते कि तुम इस हालत में उनके पास जाओ कि तुम्हारे आमालनामे में गुनाह मौजूद हों, इसी लिए इसी दुनिया में मामला साफ़ करके तुम्हें अपने पास बुलाना चाहते हैं। इसलिए यह बीमारी तुम्हारे हक़ में ख़ैर है, लेकिन अल्लाह तआ़ला से हमेशा आ़फ़ियत (अमन और चैन-सुकून) ही माँगनी चाहिये, बीमारी नहीं माँगनी चाहिये।

यही मामला यहाँ पर है कि घर में दाख़िल होते समय यह दुआ़ कर ली कि ऐ अल्लाह! मैं घर में दाख़िल हो रहा हूँ। घर में अच्छा मन्ज़र देखूँ और दुनिया व आख़िरत की भलाई माँगता हूँ। निकलने के समय भी और दाख़िल होने के समय भी, और घर में रहने के दौरान भी भलाई माँगता हूँ लेकिन हमें अल्लाह तआ़ला पर जो हमारा परवर्दिगार है, उस पर भरोसा है।

अपने परवर्दिगार पर भरोसा है

देखिये! यहाँ सिर्फ़ यह नहीं कहा किः

व अ़लल्लाहि तवक्कल्ना

बल्कि **"रब्बना"** का लफ़्ज़ बढ़ाकर यह फ़रमायाः

व अ़लल्लाहि रब्बना तवक्कल्ना

यानी हमें उस अल्लाह पर भरोसा है जो हमारा परवर्दिगार है और हमारा पालने वाला है। जब वह हमारा परवर्दिगार है तो वह जो फ़ैसला हमारे हक़ में करेगा, वही फ़ैसला हमारे हक़ में बेहतर होगा। वही जानता है कि उसके निज़ाम के तहत कौनसी चीज़ मेरे हक़ में बेहतर और फ़ायदेमन्द है। इसलिए हम उसी पर भरोसा करते हैं। हम अपनी अ़क़्ल नहीं चलाते कि हमारे हक़ में क्या बेहतर है, बल्कि अपना मामला उसके हवाले करते हैं और उसी के भरोसे पर हम घर में दाख़िल हो रहे हैं।

अमन-चैन की ज़िन्दगी हासिल होगी

आप अन्दाज़ा लगाएँ कि जो बन्दा घर में दाख़िल होते समय अल्लाह तआ़ला से ख़ैर माँग रहा है और यह कह रहा है कि ऐ अल्लाह! मैं आप ही के नाम से दाख़िल हो रहा हूँ और जब निकलूँगा तो आप ही के नाम से निकलूँगा। और जो बन्दा यह कह रहा है कि ऐ अल्लाह! मैंने सारा भरोसा आपकी ज़ात पर कर लिया। ऐ अल्लाह! मैं इस बात को मानता हूँ कि आप मेरे परवर्दिगार हैं। आप जो फ़ैसला करेंगे वह मेरे हक़ में बेहतर होगा। तो जो बन्दा ये सब दुआ़एँ करके घर में दाख़िल हो रहा है, क्या अल्लाह तआ़ला उसको नामुराद फ़रमा देंगे? क्या अल्लाह तआ़ला उसको मेहरूम फ़रमा देंगे? नहीं! बल्कि अल्लाह तआ़ला उसके घर की ज़िन्दगी को आ़फ़ियत (अमन-चैन) की ज़िन्दगी बनाएँगे, दुनिया के एतिबार से भी और आख़िरत के एतिबार से भी।

ख़ुलासा

बहरहाल! यह वह दुआ़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने घर में दाख़िले के समय तालीम फ़रमाई, इसको याद कर लें। जब तक

अलफ़ाज़ याद न हों तो उस समय तक अपनी भाषा ही में दुआ कर लिया करें कि ऐ अल्लाह! घर में दाख़िले की भलाई भी चाहता हूँ और घर से निकलने की भलाई भी चाहता हूँ। आपके नाम से दाख़िल होता हूँ और आप पर भरोसा करता हूँ। और इस बात की आदत डाल लो कि जब भी घर में दाख़िल हों तो उस समय अल्लाह तआला से यह दुआ कर लो, इन्शा-अल्लाह तआला इस दुआ के अनवार व बरकतें खुली आँखों से दिखाई देंगे। अल्लाह तआला मुझे और आप सबको इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

खाना सामने आने पर दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ.

(سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِکَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

खाना सामने आने पर दुआ

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब खाने की कोई चीज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आती तो आप उस समय ये कलिमात फ़रमाया करते थेः

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी र-ज़-कनीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्-मिन्नी
व ला कुव्वतिन्

इसके मायने यह हैं कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह तआला की हैं जिसने मुझे मेरी कुदरत और ताक़त के बग़ैर यह रिज़्क़ अता फ़रमाया। इस दुआ के अन्दर इस बात का एतिराफ़ (इक़रार) है कि मेरे अन्दर न कुदरत थी और न ताक़त थी कि मैं यह रिज़्क़ अपने लिए मुहैया कर

सकता, बल्कि अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से मेरी ताक़त और क़ुदरत के बग़ैर यह रिज़्क़ मुझे अ़ता फ़रमाया। इसलिए सुन्नत यह है कि जब किसी के सामने कोई खाने की चीज़ आए तो वह ये कलिमात कहे।

मुसलमान को काफ़िर से अलग करने वाला जुमला

अगर हक़ीक़त पर ग़ौर करें तो यह जुमला एक मुसलमान को काफ़िर से और एक अल्लाह के बन्दे को ग़ाफ़िल से मुमताज़ (अलग और नुमायाँ) करता है। इसलिए कि वह मुसलमान खाना सामने आने के बाद इस बात का एतिराफ़ करता है कि यह खाना मेरे बाज़ू की क़ुव्वत का करिश्मा नहीं है बल्कि यह खाना अल्लाह तआ़ला की अ़ता है जो मेरी किसी क़ुदरत और ताक़त के बग़ैर मुझे दिया गया है। जबकि एक ग़ैर-मुस्लिम और एक काफ़िर यह सोचता है कि यह खाना मेरे ख़ून-पसीने की मेहनत से हासिल हुआ है। मैंने मेहनत की, मैंने नौकरी की, मैंने तिजारत की, मैंने खेती की, उसके नतीजे में मुझे पैसे मिले और उन पैसों के ज़रिये मैं बाज़ार से खाना ख़रीदकर लाया। इसमें अल्लाह तआ़ला का कहाँ दख़ल आ गया? "अल्लाह की पनाह"।

क़ारून का दावा

क़ुरआन करीम में क़ारून का ज़िक्र आता है कि वह बहुत बड़ा सरमायेदार और बहुत बड़ा दौलतमन्द था। उसके ख़ज़ाने इतने ज़्यादा थे कि उन ख़ज़ानों की सिर्फ़ चाबियाँ उठाने के लिए लोगों की एक ताक़तवर बड़ी जमाअ़त दरकार होती थी। सिर्फ़ एक आदमी उन चाबियों को नहीं उठा सकता था। उसको अल्लाह तआ़ला ने इतना माल अ़ता फ़रमाया था। लेकिन जब माल की वजह से उसके दिमाग़ में तकब्बुर आ गया और वह यह समझने लगा कि मैं दुनिया का सबसे ज़्यादा दौलतमन्द शख़्स हूँ और मैं बड़ा आदमी हूँ। चुनाँचे जब उससे कहा गया कि यह दौलत अल्लाह तआ़ला की दी हुई है इसलिए तुम ग़रीबों का भी ख़्याल करो और उनको इस माल में से कुछ दो, तो जवाब में उसने कहा किः

इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला इल्मिन् इन्दी (सूरः क़सस् आयत 78)

यानी जो कुछ मेरे पास माल और सरमाया है, यह मेरे इल्म का करिश्मा है। मैंने यह इल्म हासिल किया कि रुपया कैसे कमाया जाए और इस इल्म के बाद मैंने मेहनत की, उस मेहनत के नतीजे में यह ख़ज़ाना जमा हो गया, इसलिए यह तो मेरे इल्म का करिश्मा है, किसी की अ़ता नहीं है। यह क़ारून की ज़ेहनियत थी, एक काफ़िर सरमायेदार की और एक काफ़िर दौलतमन्द की यह ज़ेहनियत थी।

क़ारून का अन्जाम

तो उसका नतीजा यह हुआ कि एक बार जब वह अपने तमाम ख़ज़ानों और लश्कर के साथ निकला तो जिन लोगों की निगाह ज़ाहिरी माल-दौलत पर थी, उन्होंने उसकी दौलत को देखकर कहा:

तर्जुमाः काश! हमें भी ऐसी ही दौलत मिली होती जैसी क़ारून को मिली है। यह तो बड़ा ख़ुशनसीब (भाग्यशाली) आदमी है।

(सूरः क़सस् आयत 79)

लेकिन कुछ देर के बाद अल्लाह तआ़ला ने उस पर अ़ज़ाब नाज़िल किया। उस अ़ज़ाब के नतीजे में ज़लज़ला आया और उसका सारा ख़ज़ाना ज़मीन में धंस गया और वह खुद भी ज़मीन में धंसकर हलाक हो गया।

सिर्फ़ असबाब जमा करना इनसान का काम है

बहरहाल! एक काफ़िर और एक ग़ैर-मुस्लिम की ज़ेहनियत (मानसिकता) और सोच यह है कि जो कुछ मुझे मिल रहा है, यह मेरी क़ुव्वते बाज़ू का करिश्मा है। मेरी मेहनत का सिला है, मेरे इल्म व हुनर का फल है। लेकिन एक मुसलमान का कहना यह है कि मुझे जो कुछ मिला है ऐ अल्लाह! आपकी अ़ता है और मेरी किसी क़ुदरत और ताक़त के बग़ैर हासिल हुआ है। इसलिए अगर इनसान ज़रा-सा ग़ौर करे तो उसको यह नज़र आएगा कि इनसान का काम बस इतना है कि वह असबाब (साधनों) को जमा करने की कोशिश कर ले। इनसान का काम ज़्यादा से ज़्यादा इतना है कि वह दुकान खोलकर बैठ जाए लेकिन अगर वह दुकान खोलकर बैठ जाए और कोई ग्राहक न आए तो वह क्या कर

लेगा। और इस दुकान को भी अपने उसी हाथ से और जिस्म की उसी ताक़त के ज़रिये खोल रहा है जो उसी की अ़ता की (दी) हुई है। वह जब चाहे इस ताक़त को छीन लेगा। दुकान में इसीलिए बैठा था कि सेहतमन्द था, हाथ-पाँव ठीक टाक काम कर रहे थे। अगर बीमार हो गया होता या हाथ-पाँव टूट गए होते और चलने-फिरने से माज़ूर हो गया होता तो ऐसी हालत में उसकी मजाल थी कि वह दुकान खोलकर बैठ जाता?

ग्राहक कौन भेज रहा है?

अगर मान भी लिया जाए कि दुकान खोलकर बैठना उसका अपना अ़मल है, लेकिन इसमें ज़रा ग़ौर करो कि उस दुकान पर ग्राहक कौन भेज रहा है? कौन ग्राहक के दिल में यह डाल रहा है कि उस दुकान से जाकर सौदा ख़रीदो। और फिर उस ग्राहक के ज़रिये जो पैसे हासिल हो रहे हैं वह पैसे तो अपने आप में ऐसी चीज़ नहीं है कि इनसान उसको खाकर अपनी भूख मिटा ले या उसको पीकर अपनी प्यास बुझा ले, बल्कि पैसे के ज़रिये से अपनी ज़रूरत की चीज़ें हासिल की जाती हैं और ज़रूरत की चीज़ें आम तौर पर बाज़ार में मिलती हैं। तो ज़रा ग़ौर करो कि वह कौन ज़ात है जिसने यह बाज़ार क़ायम किया है और कौन वह ज़ात है कि जो किसी के दिल में यह ख़्याल डाल रहा है कि फ़लाँ जगह जाकर रोटी की दुकान खोल लो और किसी के दिल में यह ख़्याल डाल रहा है कि तुम गोश्त की दुकान खोल लो, तुम चीनी की दुकान खोल लो, तुम गेहूँ की दुकान खोल लो, तुम कपड़े की दुकान खोल लो, तुम जाकर जूते की दुकान खोल लो। और किसने यह दुनिया का निज़ाम (सिस्टम) बनाया है? क्या कोई आ़लमी (विश्वव्यापी) कान्फ़्रेंस हुई थी कि जिसमें यह तय किया गया था कि फ़लाँ शख़्स आटा बेचेगा, फ़लाँ शख़्स चीनी बेचेगा, फ़लाँ शख़्स घी की तिजारत करेगा और फ़लाँ शख़्स तेल की तिजारत करेगा।

पैसा सब कुछ नहीं

बल्कि अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था और सिस्टम) इस तरह बनाया कि एक शख़्स के दिल में यह डाल दिया कि

तुम तेल की तिजारत करो। दूसरे शख़्स के दिल में यह ख़्याल डाल दिया कि तुम चीनी की तिजारत करो। तीसरे शख़्स के दिल में यह ख़्याल डाला कि तुम फल की तिजारत करो। इस निज़ाम का नतीजा यह है कि जब आदमी पैसे लेकर बाज़ार जाता है तो उसको ज़रूरत की हर चीज़ बाज़ार में मिल जाती है। अगर अल्लाह तआला का बनाया हुआ यह निज़ाम न होता तो आदमी पैसे लिये फिरता रहता लेकिन उसको ज़रूरत की चीज़ न मिलती।

एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ

मेरे एक दोस्त वाक़िआ सुना रहे थे कि मैं एक बार रमज़ान मुबारक में उमरा अदा करने जा रहा था। मेरे साथ एक और साहिब भी सफ़र कर रहे थे जो बहुत बड़े मालदार थे। साथ में बैठकर बातें शुरू हो गईं। मैंने उनसे कहा कि रमज़ान का मौसम है, रमज़ान में लोगों का हुजूम ज़्यादा होता है इसलिए पहले से इस बात का एहतिमाम कर लीजियेगा कि ठहरने के लिए मुनासिब जगह मिल जाए। खाने पीने का मुनासिब इन्तिज़ाम हो जाए ताकि समय पर हरम शरीफ़ में हाज़िरी हो जाए। वह साहिब अपनी दौलत के घमण्ड और तकब्बुर में मुब्तला थे। इसलिए मेरी बातों के जवाब में कहने लगे कि पैसों से सब कुछ हो जाता है। बस पैसा होना चाहिये। अगर पैसा है तो सब कुछ है। इसलिए आप हमारी फ़िक्र न करें, हमारे पास पैसा बहुत है। मैंने कहा ठीक है।

दो दिन के बाद फिर उन मालदार साहिब से इस हालत में मुलाक़ात हुई कि वह हरम शरीफ़ की सीढ़ियों पर अपना सर पकड़े बैठे थे। मैंने उनसे पूछा कि भाई साहिब! ख़ैरियत तो है? क्या बात है? कहने लगे कि आज सेहरी खाने को नहीं मिली। मैंने उनसे कहा कि सेहरी क्यों नहीं मिली? आपके पास पैसे तो बहुत थे। वह कहने लगे कि पैसे तो मेरे पास थे। जब मैं पैसे लेकर अपने ठिकाने से सेहरी के लिए निकला तो वहाँ इतनी लम्बी लाईन लगी हुई थी कि जब हमारा नम्बर आया तो सेहरी का समय ख़त्म हो चुका था, इसलिए सेहरी न मिल सकी।

फिर वह साहिब कहने लगे कि मैं जो आपसे यह कह रहा था कि पैसे से सब कुछ ख़रीदा जा सकता है, आज अल्लाह तआ़ला ने मुझे दिखा दिया कि पैसे से हर काम नहीं हो सकता। जब तक हम न चाहें और जब तक हमारी तरफ़ से तौफ़ीक़ न हो और हमारी तरफ़ से हालात साज़गार और मुवाफ़िक़ न किये जाएँ तो उस समय तक पैसे से कुछ नहीं हो सकता। यह नहीं हो सकता कि पैसे से आप दुनिया की हर राहत ख़रीद लें। यह पैसा तो हमने राहत का एक ज़रिया बना दिया है, लेकिन यह पैसा अपनी ज़ात के एतिबार से राहत की चीज़ नहीं है। इसलिए यह सोचना कि हम पैसे से सब कुछ ख़रीद लेंगे, यह शैतान का बहुत बड़ा धोखा है। अगर तुमने पैसा कमा भी लिया लेकिन कमाने के बाद उसके ज़रिये से मुनासिब रिज़्क़ का हासिल हो जाना भी अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए निज़ाम के ताबे (अधीन) है। इनसान की ताक़त में यह नहीं है कि वह उस रिज़्क़ को मुहैया कर सके।

हर चीज़ अल्लाह की दी हुई है

बहरहाल! हमारे और आपके सामने जब खाना सामने आता है तो हम ग़फ़लत के आ़लम में फ़ौरन खाना शुरू कर देते हैं। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दूरगामी निगाहें खाना सामने आने के बाद यह देख रही हैं कि यह खाना मेरी कुव्वते बाज़ू का करिश्मा नहीं है बल्कि किसी देने वाले की अ़ता है। मेरे जिस्म में कुव्वत और सेहत भी उसी ने दी है और उस कुव्वत के ज़रिये मैंने रोज़ी कमाई और रोज़ी कमाने के असबाब इख़्तियार किए (साधन अपनाए), दुकान खोली, नौकरी की, खेती की, यह कुव्वत भी उसी की अ़ता है। और फिर इन असबाब (साधनों) को अ़ता करने के बाद इन असबाब को प्रभावकारी बनाना भी उसी ज़ात का काम है। उसी ज़ात ने ग्राहकों को तैयार किया कि वे मेरी दुकान पर आएँ। मेरे अफ़सर को इस पर आमादा किया कि मुझे मुलाज़िम रख ले, वरना यह होता है कि आदमी बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हाथ में लेकर फिरता है मगर मुलाज़मत नहीं मिलती। बेरोज़गारी का आ़लम है। इसलिए मुलाज़मत देना भी उसी का काम है। फिर मुलाज़मत (नौकरी) देने के बाद जो काम

सौंपा गया है उस काम को ठीक-ठीक अन्जाम देने की ताक़त अता करना भी उसी का काम है। और फिर आख़िर में मुलाज़िम रखने वाले के दिल में यह ख़्याल डालना कि इसको इतनी तन्ख़्वाह दो, यह भी उसी का काम है। और तन्ख़्वाह (वेतन) मिलने के बाद जब हाथ में पैसे आ गए तो उन पैसों के ज़रिये मेरी राहत और ज़रूरत की चीज़ें अता करना भी उसी का काम है। इसलिए अव्वल से लेकर सारे काम उसी की तरफ़ से हो रहे हैं, मैं तो बस एक बहाना हूँ। यही मायने हैं इस दुआ के:

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्-मिन्नी व ला क़ुव्वतिन्

यानी तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह तआला की हैं जिसने मुझे मेरी किसी क़ुदरत और ताक़त के बग़ैर यह रिज़्क़ अता फ़रमाया। बहरहाल! खाना सामने आने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक तो यह दुआ फ़रमाते थे:

अल्लाहुम्-म बारिक् ली फ़ीहि व अत्‌इम्नी ख़ैरम्-मिन्हु

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस खाने में मेरे लिए बरकत अता फ़रमा और आईन्दा मुझे इससे भी अच्छा खाना अता फ़रमाइये।

इस दुआ में आपने दो जुमले इरशाद फ़रमाए। पहला जुमला यह इरशाद फ़रमाया कि मेरे लिए इस खाने में बरकत अता फ़रमाइये। इसका मतलब यह है कि ऐ अल्लाह! यह रिज़्क़ आपकी अता तो है लेकिन जब तक आपकी तरफ़ से इसमें बरकत नहीं डाली जाएगी उस समय तक यह रिज़्क़ मेरे हक़ में फ़ायदेमन्द नहीं होगा। इसलिए कि अगर इस रिज़्क़ में बरकत न हुई तो इससे मेरी भूख नहीं मिटेगी।

बरकत के मायने

क्योंकि बरकत के मायने हैं कि आदमी के पास चीज़ थोड़ी हो लेकिन उससे फ़ायदा ज़्यादा हासिल हो जाए। इसलिए बरकत की दुआ फ़रमा रहे हैं कि यह खाना जो मेरे सामने आया है, यह खना मेरे लिए और मेरे घर वालों के लिए काफ़ी हो जाए और इससे सब की भूख मिट जाए। अगर बरकत न हो तो खाना ज़्यादा होने के बावजूद भूख नहीं मिटती।

बरकत के एक मायने तो यह हुए।

बरकत के दूसरे मायने

बरकत के दूसरे मायने यह हैं कि जब यह खाना मेरे जिस्म के अन्दर पहुँचे तो सेहत और ताक़त का ज़रिया बने, बीमारी और तकलीफ़ का ज़रिया न बने। वरना यह भी हो सकता है कि खाना सामने आया और मज़ेदार मालूम हुआ तो लज़्ज़त के शौक़ में ज़्यादा खा गए। इसके नतीजे में बदहज़मी हो गयी, अब दस्त आने शुरू हो गए, उलटियाँ शुरू हो गईं और एक वक़्त के खाने ने तीन दिन तक बिस्तर पर डाले रखा। जिसका मतलब यह है कि खाना अच्छा भी था, मज़ेदार भी था और सेहतमन्द (स्वस्थ) भी था। लेकिन उस खाने में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बरकत नहीं थी। इसलिए खाना सामने आने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मैं जानता हूँ कि यह खाना आपकी अ़ता (दी हुई नेमत) है और यह बड़ी अ़ज़ीम नेमत है, लेकिन यह नेमत उसी समय फ़ायदेमन्द होगी जब आप इसमें बरकत डालेंगे। इसलिए मैं आप से यह सवाल करता हूँ और मोहताज बनकर माँगता हूँ कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए इस खाने में बरकत डाल दीजिए।

बरकत तलाश करो

बहुत-सी हदीसों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी ताकीद फ़रमाई कि खाने में बरकत तलाश करो। इसलिए जब खाना शुरू करो तो यह कहो:

बिस्मिल्लाहि व अ़ला बरकतिल्लाहि

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से शुरू कर रहा हूँ और अल्लाह की बरकत का तलबगार हूँ।

इसी तरह अगर खाना खाते वक़्त उंगलियों पर खाना लग जाए तो खाने से फ़ारिग़ होने के बाद उंगलियों को खुद चाट ले या दूसरे किसी को चटा दे। इसका एक फ़ायदा तो यह है कि इसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला के रिज़्क़ की नाक़द्री न होगी, क्योंकि अगर इन उंगलियों पर कुछ

खाना लगा रह गया और तुमने जाकर हाथ धो लिये तो खाने के कुछ हिस्से पानी के साथ गटर में चले जाएँगे और इसके नतीजे में रिज़्क़ की बेक़द्री हो जाएगी।

उंगलियाँ चाटने में बरकत का हासिल होना

उंगलियाँ चाटने का दूसरा फ़ायदा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बयान फ़रमाया कि तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे खाने के कौनसे हिस्से में बरकत है। हो सकता है जो खाना तुमने खाया उसमें बरकत न हो और जो हिस्सा तुम्हारी उंगलियों पर लगा रह गया उसमें अल्लाह तआला ने बरकत रखी हो। इसलिए फ़रमाया कि इन उंगलियों को चाट लो।

तीन उंगलियों से खाना

अलबत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह खाना नहीं खाते थे कि पाँचों उंगलियाँ खाने में भर जाएँ बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन उंगलियों से खाना तनावुल फ़रमाया करते थे और छोटे निवाले लेते थे, और उस ज़माने में आम तौर पर खाने में सूखी चीज़ें होती थीं। बहरहाल! जब खाना सामने आता तो एक तो आप बरकत की दुआ फ़रमाते।

इससे अच्छा अता फ़रमाइये

दूसरा जुमला यह इरशाद फ़रमाया कि:

व अत्इम्नी ख़ैरम् मिन्हु

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे आईन्दा इससे भी अच्छा खाना अता फ़रमाइये।

क्योंकि हम आपकी अता और बख़्शिश से कभी बेनियाज़ नहीं हो सकते। जब आपकी अता हो तो उसको आपसे मोहताज बनकर माँगेंगे और बन्दगी का तक़ाज़ा भी यही है कि इनसान अल्लाह तआला से मोहताज बनकर माँगे।

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का वाकिआ

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का वाकिआ आता है कि आप एक बार नहा रहे थे। उसी दौरान आसमान से आपके ऊपर सोने की तितलियाँ गिरनी शुरू हो गईं। अब हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने नहाना छोड़कर सोने की तितलियाँ जमा करनी शुरू कर दीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ अय्यूब! क्या हमने पहले ही से तुम्हें बहुत सारी नेमतें नहीं दे रखी हैं? इसके बावजूद अब तुम सोने के पीछे भाग रहे हो? जवाब में हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! बेशक आपने मुझे बेशुमार नेमतें अ़ता फ़रमाई हैं, मैं उनका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता। लेकिन जब आप और ज़्यादा अ़ता फ़रमा रहे हैं तो ऐ अल्लाह! मैं आपकी भेजी हुई बरकत से बेनियाज़ (बेपरवाह और ग़ैर-मोहताज) नहीं हो सकता। जब आप दे रहे हैं तो मेरा काम यह है कि मैं मोहताज बनकर उसको वसूल करूँ।

कहीं दिमाग़ ख़राब न हो जाए

इसलिए ऐसा न हो कि जब आदमी के सामने अच्छा खाना आ जाए तो उसका दिमाग़ ख़राब हो जाए और यह सोचे कि मुझे तो बेहतरीन से बेहतरीन खाना मिल गया है, अब मैं दूसरे खाने से बेनियाज़ हूँ। इस जुमले ने इस सोच और ख़्याल को ख़त्म कर दिया कि बेशक आपने जो कुछ अ़ता फ़रमाया है, यह आपका बहुत बड़ा इनाम है जिस पर मैं शुक्र अदा नहीं कर सकता, लेकिन मैं अब भी आपकी अ़ता का मोहताज हूँ और मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मुझे और अच्छा अ़ता फ़रमाइये।

ख़ुलासा

आप अन्दाज़ा करें कि जो इनसान खाना सामने आने के बाद खाना शुरू करने से पहले ही यह तस्लीम कर रहा है कि ऐ अल्लाह! यह खाना आपकी अ़ता है। इस पर मैं आपका शुक्र अदा करता हूँ। आपकी तारीफ़ करता हूँ। मेरी कुव्वत और मेरी कुदरत का इसमें कोई दख़ल नहीं है। और यह कहता है कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे इस खाने की बरकत माँगता

हूँ और आईन्दा इससे बेहतर रिज़्क़ अता फ़रमाइये। तो क्या अल्लाह तआला उसके खाने में बरकत नहीं डालेंगे? क्या अल्लाह तआला खाने के ज़रिये उसके अन्दर नूर पैदा नहीं करेंगे? यकीनन ऐसे इनसान के खाने में पीने में अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़रूर बरकत होगी। अल्लाह तआला हम सबको इस दुआ के पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

खाने से पहले और बाद की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (سورة المؤمن آيت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

खाना शुरू करने से पहले की दुआ

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर जो दुआएँ तालीम फ़रमाई हैं, उनका बयान एक अ़र्से से चल रहा है। इससे पहले उस दुआ़ की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) बयान की थी जो दुआ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खाना सामने आने के वक़्त पढ़ा करते थे। जब आप खाना शुरू फ़रमाते तो उस समय आप यह दुआ़ पढ़ते:

बिस्मिल्लाहि व अ़ला बरकतिल्लाहि

बिस्मिल्लाह पढ़ने की हिक्मत

यह वही "बिस्मिल्लाह" है जिसका फ़ल्सफ़ा (हिक्मत और हक़ीक़त) मैं पहले ही अ़र्ज़ कर चुका हूँ कि हर काम को शुरू करने से पहले

अल्लाह तआ़ला का नाम लेना। यह दर हक़ीक़त बन्दे की तरफ़ से इस बात को मानना है कि ऐ अल्लाह! यह जो कुछ मैं खाना शुरू करने वाला हूँ, यह सब आपकी अ़ता है और आपका इनाम व एहसान है। और अब मैं आप ही के नाम से इसको खाना शुरू करता हूँ।

"बिस्मिल्लाह" भूल जाने पर बीच में पढ़ने की दुआ़

हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर कोई शख़्स खाने के शुरू में "बिस्मिल्लाह" पढ़ना भूल जाए तो खाने के दौरान जिस समय याद आ जाए उसी समय यह दुआ़ कर ले कि:

बिस्मिल्लाहि अव्व-लहू व आख़ि-रहू

यानी मैं अल्लाह के नाम के साथ खा रहा हूँ। अव्वल में भी अल्लाह का नाम और आख़िर में भी अल्लाह का नाम।

इसलिए यह मत सोचो कि अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गये तो बात ख़त्म हो गई और मौक़ा हाथ से निकल गया। नहीं! बल्कि जब याद आ जाए तो उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला का नाम ले लो।

मुसलमान और काफ़िर के खाने में फ़र्क़

एक मुसलमान के खाने में और एक काफ़िर के खाने में यही फ़र्क़ है। एक अल्लाह की बन्दगी का एहसास रखने वाले के खाने में और एक ग़ाफ़िल इनसान के खाने में यही फ़र्क़ है। खाना मुसलमान भी खाता है और खाना काफ़िर भी खाता है। लेकिन वह काफ़िर ग़फ़लत के आ़लम में खाता है। वह अपने परवर्दिगार को भूला हुआ है, सिर्फ़ खाने की लज़्ज़त हासिल करना और अपनी भूख मिटाना उसके पेशेनज़र है। इसलिए वह खाना खाना एक दुनियावी काम होकर रह गया है। लेकिन एक मुसलमान और अल्लाह तआ़ला की याद रखने वाला इनसान जब खाना खाता है तो चूँकि वह खाने का अ़मल अल्लाह तआ़ला की याद में बसा हुआ है, इसलिए वह खाना खाना भी उसके लिए इबादत बन जाता है।

खाने के बाद की दुआ़

जब खाने से फ़ारिग़ हो गये तो उस मौक़े के लिए नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि यह कहो:

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अ-मना व सक़ाना व कफ़ाना व आवाना व अर्वाना व ज-अ-लना मिनल् मुस्लिमीन।

यानी तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया। देखिये! जिस वक़्त खाना सामने आया था उस वक़्त यह दुआ की थी कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें यह रिज़्क़ दिया और यहाँ यह दुआ की जा रही है कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें खिलाया। इससे मालूम हुआ कि ये दोनों नेमतें अलग-अलग हैं। रिज़्क़ देना अलग नेमत है और खिलाना अलग नेमत है।

रिज़्क़ अलग नेमत है और खिलाना एक अलग नेमत

यह हो सकता है कि खाना अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हो लेकिन इनसान उसको न खा सके। जैसे एक इनसान के पास तरह-तरह की नेमतें मौजूद हैं, तरह-तरह के खाने मौजूद हैं, आला से आला फल मौजूद हैं, लज़्ज़त वाली चीज़ें सब मौजूद हैं, लेकिन मेदा (पेट और हाज़मा) ख़राब है जिसकी वजह से डाक्टर ने खाने से मना कर दिया है कि ख़बरदार! किसी चीज़ को हाथ मत लगाना, सिर्फ़ सूप पीने की इजाज़त है और किसी चीज़ के खाने की इजाज़त नहीं। जिसका मतलब यह है कि "र-ज़-क़ना" तो पाया गया लेकिन "अत्अ-मना" नहीं पाया गया। रिज़्क़ तो हासिल है लेकिन खाने की तौफ़ीक़ हासिल नहीं।

एक नवाब साहिब का क़िस्सा

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने लखनऊ के एक बड़े नवाब साहिब को देखा कि अल्लाह तआला ने उनको दुनिया की सारी नेमतें दी हुई थीं। रुपया-पैसा, कोठियाँ, बंगले, कारें, नौकर-चाकर, सब कुछ था लेकिन बीमारी की वजह से डाक्टर साहिब ने उनको हर चीज़ खाने से मना कर दिया था। सिर्फ़ इसकी इजाज़त थी कि एक पाव क़ीमा लेकर उसको पकाएँ, फिर उस क़ीमे को मलमल के कपड़े में छान लें, उस क़ीमे का जूस आप पी सकते हैं। इसके अलावा किसी चीज़ के

खाने की इजाज़त नहीं। इसका मतलब यह है कि "र-ज़-क़ना" तो पाया गया लेकिन "अत्‌अ़-मना" नहीं पाया गया।

बहरहाल! अगर अल्लाह तआ़ला ने रिज़्क़ भी दिया है और उसके साथ-साथ उस रिज़्क़ को खाने की भी तौफ़ीक़ दी है और सेहत भी दी है तो इसका मतलब यह है कि ये दो नेमतें मुस्तक़िल नेमतें हैं। रिज़्क़ देना एक मुस्तक़िल नेमत है और उसको खाने की तौफ़ीक़ देना एक मुस्तक़िल नेमत है। इसलिए इस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिये कि ऐ अल्लाह! इस बात पर भी शुक्र है कि आपने रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया, और इस बात पर भी शुक्र है कि आपने खिलाया।

पानी की नेमत पर शुक्र

आगे इरशाद फ़रमाया "व सक़ाना" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें पिलाया। अगर खाने के लिए खाना मौजूद होता लेकिन पीने के लिए पानी न होता तो वह खाना अ़ज़ाब बन जाता। इसलिए ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने खाना भी दिया और पीने को भी दिया।

खाना काफ़ी होने की नेमत पर शुक्र

तीसरा जुमला अजीब इरशाद फ़रमाया "व कफ़ाना" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने इस खाने को हमारे लिए काफ़ी बना दिया। उर्दू में "काफ़ी बना देने" का मतलब इतना जामे नहीं। अ़रबी ज़बान में काफ़ी बना देने का मतलब बहुत वसीअ़ (विस्तृत) है। एक मतलब तो यह है कि खाना इतना था कि वह हमारे लिए काफ़ी हो गया और उसके ज़रिये हमारी भूख मिट गई। दूसरा मतलब यह है कि इसके खाने से हमें कोई परेशानी नहीं हुई। अगर मान लिया खाना तो ख़ूब मिल जाता लेकिन खाने के दौरान कोई बुरी ख़बर आ जाती- जैसे किसी रिश्तेदार या दोस्त के इन्तिक़ाल की ख़बर आ जाती तो इसका नतीजा यह होता कि खाने का सारा मज़ा ख़त्म हो जाता और उसकी वजह से वह खाना काफ़ी न होता।

रिहाईश की नेमत पर शुक्र

चौथा जुमला इरशाद फ़रमाया "व आवाना" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र

है कि आपने हमें ठिकाना दिया। क्योंकि अगर खाने को भी मिल जाता और पीने को भी मिल जाता लेकिन सर छुपाने को घर न होता तो यह खाना बेकार हो जाता। ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें सर छुपाने को घर भी अ़ता फ़रमाया जिसमें हम आराम कर सकें।

तमाम नेमतों के एकत्र होने पर शुक्र

पाँचवाँ जुमला इरशाद फ़रमाया "व अर्वाना" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें सैराब कर दिया। सैराब करने का मतलब यह है कि खाने और पीने से मुताल्लिक़ जितनी नेमतें हो सकती थीं, वे सब आपने हमारे लिए जमा (एकत्र और मुहैया) फ़रमा दीं।

इस्लाम की दौलत पर शुक्र

फिर आख़िरी जुमला इरशाद फ़रमाया "व ज-अ़-लना मिनल् मुस्लिमीन" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें मुसलमानों में से कर दिया। यह नेमत तमाम नेमतों से बढ़कर है। क्योंकि मान लो अगर हमें खाना तो अच्छा मयस्सर होता और पेट भरकर ख़ुशगवार हालात में खाना खाते, पीने को पानी भी मयस्सर होता, सर छुपाने को घर भी मयस्सर होता लेकिन ईमान की दौलत न होती तो ये सब नेमतें बेकार थीं। इसलिए कि ईमान के बग़ैर इन नेमतों का अन्जाम जहन्नम की सज़ा की शक्ल में हमें भुगतना पड़ता। इसलिए ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें ये नेमतें भी अ़ता फ़रमाईं और फिर हमें मुसलमानों में से बनाया और हमें इस्लाम की और ईमान की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

मायने की एक दुनिया छुपी हुई है

आप देखें कि इस दुआ़ के अलफ़ाज़ चन्द सैकन्ड में ज़बान से अदा हो जाते हैं लेकिन इन अलफ़ाज़ में मायने की एक दुनिया छुपी है। जो अल्लाह का बन्दा हर खाने के बाद अल्लाह तआ़ला के सामने यह दरख़्वास्त पेश करता हो और इस तरह शुक्र अदा करता हो, क्या अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेमतों से मेहरूम फ़रमाएँगे? क्या उसकी दुनिया और आख़िरत बेहतर नहीं हो जाएगी? यक़ीनन हो जाएगी। इसी वजह से

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फ़रमाई।

खुलासा

यह मुख़्तसर-सी दुआ है। अगर हर मुसलमान इसके पढ़ने का एहतिमाम (पाबन्दी और ध्यान) कर ले और ज़रा ध्यान करके पढ़े कि ये नेमतें अल्लाह तआ़ला की अ़ता हैं, उनकी दी हुई हैं और अल्लाह तआ़ला ने इसमें मेरे लिए बरकत अ़ता फ़रमाई है, और यह सोचकर दुआ करे तो उसका रुवाँ-रुवाँ अल्लाह तआ़ला का शुक्रगुज़ार होगा और शुक्र करने पर अल्लाह तआ़ला का वायदा है कि:

ल-इन् शकर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम्

तर्जुमाः अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़्यादा दूँगा।

(सूरः इब्राहीम आयत 7)

अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से हम सबको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस तालीम पर और आपकी तमाम तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सफ़र की मुख़्तलिफ़ दुआएँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ o (سورة البقرة آيت ١٨٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले चन्द जुमों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मस्नून दुआ़ओं की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) का सिलसिला चल रहा है। बहुत-सी दुआ़ओं के बारे में तफ़सीली बयान हो चुका। जब सुबह को इनसान अपनी इब्तिदाई ज़रूरतें पूरी करने के बाद घर से निकलता है और अपनी अ़मली ज़िन्दगी में दाख़िल होता है तो उस समय उसके सामने अनगिनत ज़रूरतें होती हैं। कभी उन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए घर से निकलना पड़ता है और एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करना पड़ता है। इसके लिए उसको सवारी की ज़रूरत होती है और जिस मक़सद के लिए जा रहा है उसमें कामयाबी चाहता है।

इसलिए जब आदमी घर से निकले तो उस वक़्त यह दुआ कर ले कि ऐ अल्लाह! जिस मक़सद के लिए मैं जा रहा हूँ उस मक़सद में मुझे कामयाबी अ़ता फ़रमाइये और उस मक़सद को मेरे लिए आसान कर दीजिए। यह दुआ करने के बाद घर से निकले।

सवारी पर बैठने की दुआ

उसके बाद जब सवारी पर बैठे तो यह दुआ पढ़े:

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून। (सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 13 से 14)

क़ुरआन करीम में इस दुआ का ज़िक्र घोड़ों और ऊँटों की सवारी के तहत में आया है कि जब घोड़ों और ऊँटों पर सवारी करो तो यह दुआ पढ़ो। अब चूँकि घोड़ों और ऊँटों का ज़माना नहीं है बल्कि उसकी जगह अल्लाह तआ़ला ने दूसरी सवारियाँ पैदा फ़रमा दी हैं, इसलिए जब इन सवारियों पर सवार हों तो उस समय यह दुआ पढ़ें।

इन जानवरों को तुम्हारे ताबे बना दिया है

इस दुआ का तर्जुमा यह है कि पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे और क़ाबू में) कर दिया यानी राम कर दिया और हमारे अन्दर अपनी ज़ात में वह ताक़त नहीं थी कि इस सवारी को अपने लिए राम कर लेते और हम सबको लौटकर अपने रब के पास जाना है।

यह दुआ उस समय बताई गई थी जब घोड़ों और ऊँटों पर सफ़र होते थे। इसलिए इस दुआ के ज़रिये इस तरफ़ तवज्जोह दिलाई जा रही है कि जब तुम घोड़े पर सवारी कर रहे हो, ज़रा इस बात पर ग़ौर करो कि तुम ज़्यादा ताक़तवर हो या घोड़ा ज़्यादा ताक़तवर है? अगर ताक़त के एतिबार से तुलना करो तो तुम्हारा घोड़े से कोई मुक़ाबला नहीं, घोड़ा तुम से कहीं ज़्यादा ताक़त वाला है। आजकल तो इंजनों की ताक़त को घोड़े की ताक़त से नापते हैं कि यह इंजन इतने "हार्स पावर" का है और यह इंजन इतने "हार्स पावर" का है। बहरहाल! यह घोड़ा इनसान से कई गुना

ज़्यादा ताक़तवर है। लेकिन इतना ताक़तवर जानवर तुम्हारे हाथ में ऐसा राम हो गया है कि एक छोटा-सा बच्चा भी उसके मुँह में लगाम डालकर उसको जहाँ चाहता है, ले जाता है। कभी घोड़े ने पलटकर यह नहीं कहा कि तुम मुझ पर क्यों सवारी करते हो? तुम कमज़ोर हो मैं ज़्यादा ताक़तवर हूँ। इसलिए मैं तुम्हारे ऊपर सवारी क्यों न करूँ? तुम मुझसे ख़िदमत क्यों ले रहे हो? तुम मेरी ख़िदमत क्यों न करो? अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से इन जानवरों को तुम्हारे हुक्म के ताबे बना दिया है, तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है, तुम्हारे हाथ में राम कर दिया है।

ऊँट तुम्हारे ताबे है

यह सिर्फ़ घोड़े की विशेषता नहीं बल्कि और जितने जानवर हैं जिनसे इनसान काम लेता है, उन सबका यही हाल है। ऊँट घोड़े से भी ज़्यादा ताक़त वाला है। खुद अल्लाह तआ़ला ने कुरआन करीम में ऊँट के बारे में फ़रमायाः

अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल् इब्लि कै-फ़ ख़ुलिक़त्

(सूरः ग़ाशियह् आयत 17)

तर्जुमाः क्या वे लोग ऊँट को नहीं देखते कि किस तरह पैदा किया गया है।

यह ऊँट अल्लाह तआ़ला की कुदरत का एक अ़जूबा है। इसी तरह गाय है, तुम रोज़ाना उसका दूध निकाल कर पीते हो, उस गाय ने कभी इनकार नहीं किया। न कभी यह कहा कि मैं तुम्हारी ख़िदमत क्यों करूँ? तुम मेरी ख़िदमत क्यों न करो? इन सारी मख़्लूक़ात को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे ताबे कर दिया और तुम्हारे काम पर लगा दिया। यह अल्लाह तआ़ला की तख़्लीक़ और अल्लाह तआ़ला की कुदरत है और अल्लाह तआ़ला की हिक्मत है।

इनसान इस मौक़े पर अल्लाह को याद करे

जब तुम इन सब मख़्लूक़ात के मख़दूम (ख़िदमत लेने वाले) बने फिरते हो तो आख़िर तुम्हारा भी तो कोई फ़र्ज़ है या नहीं? तुम इन सबसे

काम ले रहे हो। इसलिए जब तुम इनसे काम लो और सवारी करो तो ज़बान से यह कह दो किः

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून। (सूरः जुख़रूफ़ आयत 13 से 14)

अगर अल्लाह ने इन जानवरों के दिल में यह बात न डाली होती कि इनसानों की ख़िदमत करो बल्कि खुद इनसान को अपने तौर पर इन जानवरों को राम करना पड़ता तो यह बात इनसान के बस में नहीं थी।

मौजूदा दौर की सवारियों का कुरआन में ज़िक्र

कुछ लोग यह समझते हैं कि इस दुआ का मौक़ा उस समय था जब घोड़ों और ऊँटों पर सवारी होती थी और इन जानवरों को इनसानों के लिए मुसख़्ख़र (ताबे और अधीन) कर दिया गया था। और अब चूँकि घोड़ों और ऊँटों पर सवारी नहीं होती, इसलिए इस दुआ के पढ़ने की ज़रूरत नहीं। यह बात ठीक नहीं। बल्कि जितनी सवारियाँ पैदा होने वाली थीं और जो सवारियाँ क़ियामत तक पैदा होंगी, अल्लाह तआला ने उन सबका ज़िक्र कुरआन करीम में पहले ही फ़रमा दिया है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लि-तर्कबूहा व ज़ी-नतन्, व यख़्लुकु मा ला तअ्लमून।

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए घोड़े, गधे और ख़च्चर पैदा किये ताकि तुम उन पर सवारी करो और तुम्हारे लिए यह ज़ीनत (सजावट) का भी सामान हैं। और अल्लाह तआला वे चीज़ें पैदा करेंगे जो तुम अभी नहीं जानते। (सूरः नह्ल आयत 8)

इसलिए इसके अन्दर मोटर भी आ गई, इसमें रेल भी आ गई, हवाई जहाज़ भी आ गया और क़ियामत तक जितनी सवारियाँ पैदा होने वाली हैं, वे सब इसमें आ गईं।

कुरआन करीम में हवाई जहाज़ का ज़िक्र

सूरः यासीन में एक जगह कश्ती का ज़िक्र फ़रमाया कि हमने समन्दर

में सफ़र के लिए कश्ती पैदा की, उसके बाद फ़रमायाः

व ख़लक़्ना लहुम् मिम्मिस्लिही मा यर्कबून।

तर्जुमाः तुम्हारे लिए कश्ती जैसी एक और सवारी पैदा की है जिसमें आईन्दा तुम सवारी करोगे। (सूरः यासीन आयत 42)

बहुत से आ़लिमों ने फ़रमाया कि इससे हवाई जहाज़ की तरफ़ इशारा फ़रमाया है। इसलिए जितनी सवारियाँ हैं वे सब अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई हैं। इनसान ने उनको बेशक अपने दिमाग़ और अ़क़्ल से ईजाद किया है लेकिन यह अ़क़्ल और समझ किसकी दी हुई थी? किसने वह समझ और अ़क़्ल बख़्शी? किस ज़ात ने इल्म अ़ता किया जिसके ज़रिये वे इन सवारियों को ईजाद कर सके? इसलिए वह हुक्म जो घोड़ों और ऊँटों के लिए था, वह आजकी तमाम सवारियों के लिए है, चाहे वह साईकिल हो, चाहे मोटर साईकिल हो, मोटर कार हो, बस हो, रिक्शा हो, रेल हो, जहाज़ हो, इन सब पर यह हुक्म लागू होता है क्योंकि ये सवारियाँ भी अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे) फ़रमा दी हैं।

मौजूदा दौर की सवारियाँ भी ताबे कर दी गईं

इसलिए इस मुसख़्ख़र (ताबे) करने का ध्यान करके यह दुआ पढ़ लो कि पाक है वह ज़ात जिसने यह सवारी हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे) फ़रमा दी। क्योंकि कभी-कभी ये सवारियाँ भी ख़राब हो जाती हैं। चलकर नहीं देतीं बल्कि परेशान करती हैं। लेकिन इस समय जब मैं इन पर सवार हो रहा हूँ तो अल्लाह तआ़ला ने इसको मेरे लिए ताबे कर दिया है। मैं इससे फ़ायदा उठा रहा हूँ। जब एक बार तुम इस बात का एहसास और इदारक कर लोगे तो एक तरफ़ तो तुम्हारा राब्ता अल्लाह तआ़ला से जुड़ गया और दूसरी तरफ़ तुम्हारा यह सवार होना और यह सफ़र करना पूरा का पूरा इबादत बन गया इसलिए कि तुमने यह सफ़र अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर और उसके इनाम पर शुक्र अदा करने के बाद शुरू किया है, और शुक्र बड़ी अ़ज़ीम इबादत है।

इस सफ़र में असल सफ़र को याद करो

फिर आख़िर में एक जुमला इरशाद फ़रमाया कि "व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून" यानी हम एक दिन अपने परवर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं। यानी हम जो सफ़र कर रहे हैं यह तो एक छोटा-सा सफ़र है जिसमें एक जगह से दूसरी जगह चले गये। यह भी दुनिया है वह भी दुनिया है। लेकिन असल सफ़र एक आने वाला है जो दुनिया से आख़िरत की तरफ़ होगा। इस आ़लम से उस आ़लम की तरफ़ होगा। इस फ़ानी जहान से हमेशा और दाईमी जहान की तरफ़ होगा। इसलिए इस आख़िरी जुमले में इस तरफ़ तवज्जोह दिला दी कि यह सफ़र तो मामूली है। अगर इस सफ़र में कामयाब हों तो कोई बहुत बड़ा फ़ायदा नहीं और अगर नाकामी हो तो कोई बहुत बड़ा नुक़सान नहीं। लेकिन वह सफ़र जिसमें इनसान आख़िरकार अल्लाह तआ़ला की तरफ़ लौटकर जाएगा, वह सफ़र बड़ा अज़ीमुश्शान है। उसकी फ़िक्र करनी चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि दुनिया के इस मामूली सफ़र की भलाई की ख़ातिर हम उस बड़े सफ़र को क़ुरबान कर दें और उसको भूल जाएँ। बल्कि हमें इस मौक़े पर उस बड़े सफ़र को भी याद रखना चाहिये। इसलिए यह कहो:

व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून।

तर्जुमाः और हम अपने परवर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं।

कहीं यह सफ़र आख़िरत को तबाह न कर दे

इसलिए जिस काम के लिए जा रहे हो, उस काम को करते समय इस बात को सामने रखो कि वह काम कहीं आख़िरत के सफ़र में रुकावट न बन जाए और आख़िरत के सफ़र को ख़राब न कर दे, और हमारा अन्जाम बुरा न हो जाए।

बहरहाल! यह दुआ़ तीन जुमलों पर आधारित है:

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा, व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून। (सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 13 से 14)

अगर आदमी ज़रा-सा इनको समझकर पढ़े कि अल्लाह तआ़ला ने

मुझे सवारी की यह नेमत अ़ता फ़रमाई है जिसको क़ाबू करना मेरे बस में नहीं था। और एक दिन बड़ा सफ़र पेश आने वाला है जो या तो आख़िरकार हमारे लिए हमेशा के अ़ज़ाब का ज़रिया होगा या हमेशा की नेमतों का ज़रिया होगा। कहीं ऐसा न हो कि इस छोटे से सफ़र में हम कोई ऐसा काम कर गुज़रें जो हमारी आख़िरत को तबाह करने वाला हो।

लम्बे सफ़र पर जाते वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल

यह तो वह दुआ़ थी जो हर तरह की सवारी के लिए पढ़ी जाती है, चाहे वह सफ़र छोटा हो या बड़ा हो, क़रीबी फ़ासले पर जाना हो या दूर के फ़ासले पर जाना हो। लेकिन अगर कोई शख़्स लम्बे सफ़र पर और अपने शहर से बाहर दूसरे शहर की तरफ़ जा रहा हो तो उस मौक़े के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने और अहम और अ़ज़ीम दुआ़एँ तालीम फ़रमायी हैं। ये ऐसी दुआ़एँ हैं कि कोई इनसान इस तरह माँगने का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल (अ़मल और तरीक़ा) यह था कि जब आप मदीना मुनव्वरा से बाहर किसी सफ़र पर रवाना होने का इरादा फ़रमाते तो सबसे पहले तीन बार तकबीर फ़रमातेः

अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर।

इसके बाद जब सवारी पर सवार होते तो यह दुआ़ पढ़तेः

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून। (सूरः ज़ुख़्रुफ़ आयत 13 से 14)

इसके बाद एक अ़जीब दुआ़ यह फ़रमातेः

अल्लाहुम्-म अन्तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल्ख़लीफ़तु फ़िल्-अह्लि अल्लाहुम्-म हव्विन् अ़लैना हाज़स्स-फ़-र वत्वि अ़न्ना बुअ्दहू।

सफ़र में अल्लाह तआ़ला को साथी बना लें

इस दुआ़ में पहला जुमला यह इरशाद फ़रमायाः

अल्लाहुम्-म अन्तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि

यानी ऐ अल्लाह! हम आपको सफ़र में अपना साथी बनाते हैं कि आप सफ़र में हमारे साथी हैं।

क्योंकि हर इनसान को सफ़र में एक साथी की ज़रूरत होती है और जब सफ़र में कोई मुश्किल पेश आ जाए तो वह साथी काम देता है। नबी कीरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह! हम सफ़र पर रवाना हो रहे हैं। इस सफ़र में हम आपको अपना साथी बनाते हैं। आप हमारे साथ रहियेगा। बताइये! जब सफ़र में अल्लाह तआ़ला साथ हो जाएँ तो कहाँ मुश्किल पेश आ सकती है? कहाँ परेशानी आ सकती है? अगर यह दुआ क़बूल हो जाए और अल्लाह तआ़ला वाक़ई हमारे साथी बन जाएँ तो फिर हर काम आसान हो जाए।

अल्लाह तआ़ला को घर वालों के लिए निगरानी करने वाला बना लें

दूसरा जुमला इरशाद फ़रमायाः

वल्ख़लीफ़तु फ़िल्-अह्लि

इस जुमले में अ़जीब बात इरशाद फ़रमाई। वह यह कि आप सफ़र में हमारे साथी भी हों और हमारे पीछे हमारे घर वालों के निगहबान भी हों। क्योंकि अगर कोई शख़्स हमारे साथ होगा तो फिर घर में वह निगहबान बनकर नहीं रहेगा। लेकिन ऐ अल्लाह! आप ऐसे हैं कि हर जगह मौजूद हैं इसलिए आप हमारे साथ [illegible] में भी हों और हमारे पीछे हमारे घर वालों के निगराँ और निगहबान भी बन जाएँ और उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाएँ।

दोनों मुश्किलें हल हो गईं

इनसान जब किसी सफ़र पर रवाना होता है तो उसके सामने दो बड़ी फ़िक्रें होती हैं- एक फ़िक्र यह होती है कि मेरा सफ़र आसान हो जाए। उसमें कोई मुश्किल पेश न आए और मैं अपने सफ़र के मक़सद में कामयाब हो जाऊँ। दूसरी फ़िक्र यह होती है कि मैं घर से बाहर जा रहा हूँ, मेरे पीछे मेरे घर वालों का क्या होगा? वे कहीं किसी मुश्किल का

शिकार न हो जाएँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुआ में मुसाफ़िर की दोनों मुश्किलों को हल फ़रमा दिया कि इन दोनों को अल्लाह तआला के हवाले कर दो, अपने सफ़र को भी अल्लाह तआला के हवाले कर दो और अपने पीछे रहने वालों को भी अल्लाह तआला के हवाले कर दो। अगर मुसाफ़िर की ये दोनों दुआएँ क़बूल हो जाएँ तो फिर मुसाफ़िर की कोई मुश्किल बाक़ी रहीं रहेगी।

ऐ अल्लाह! सफ़र आसान फ़रमा दे

फिर तीसरा जुमला यह इरशाद फ़रमायाः

अल्लाहुम्-म हव्विन् अलैना हाज़स्स-फ़-र वत्वि अन्ना बुअ्दहू।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को आसान कर दीजिए और इसकी दूरी और फ़ासले को लपेट दीजिए।

जब मुसाफ़िर लम्बे सफ़र पर रवाना होता है तो वह दूरी बड़ी लम्बी होती है जिसका इरादा करता है। इसलिए सफ़र पर रवाना होने से पहले यह दुआ करनी चाहिये ताकि यह सफ़र आसान हो जाए और उस सफ़र की लम्बी दूरी सिमट जाए यानी हमें पता भी न चले और हम मन्ज़िल तक पहुँच जाएँ।

सफ़र की मशक़्क़तों से पनाह माँग लें

इसके बाद एक दूसरी दुआ फ़रमातेः

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिंव्वअ्साइस्स-फ़रि व काबतिल्-मन्ज़रि व सूइल्-मुन्क़-लबि फ़िल्-अह्लि वल्मालि वल्व-लदि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की मशक़्क़त से आपकी पनाह माँगता हूँ। यानी मैं इस बात से पनाह माँगता हूँ कि मुझे सफ़र में मशक़्क़तें और मुसीबतें पेश आएँ। और ऐ अल्लाह! मैं इस बात से पनाह माँगता हूँ कि मेरे सामने कोई दुख देने वाला मन्ज़र आ जाए।

यानी इस बात से पनाह माँगता हूँ कि हादसा या ऐक्सिडैन्ट हो जाए या कोई भिड़ंत हो जाए। इसलिए ऐसा मन्ज़र जो बुरा हो और तकलीफ़ देने वाला हो ऐ अल्लाह! मैं उससे भी आपकी पनाह माँगता हूँ।

वापसी पर घर वालों की ख़ैरियत की ख़बर मिले

फिर फ़रमायाः

व सूइल् मुन्क़-लबि फ़िल्-अह़्लि वल्मालि वल्व-लदि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इस बात से पनाह माँगता हूँ कि जब मैं वापस लौटकर अपने घर आऊँ तो वहाँ आकर कोई बुरा मन्ज़र देखूँ।

जब इनसान सफ़र में होता है तो उसको इस बात की भी फ़िक्र लगी रहती है कि जब मैं वापस घर जाऊँ तो मेरे घर वाले ख़ुश हों और ख़ैरियत से हों। उनको अच्छी हालत में देखूँ। वह बीमार न हों, किसी हादसे का शिकार न हों और उनको इत्मीनान की हालत में पाऊँ। इसलिए दुआ़ कर ली कि ऐ अल्लाह! मैं इस बात से पनाह माँगता हूँ कि मैं घर वालों को बुरे हाल में पाऊँ या अपने माल को बुरे हाल में पाऊँ या अपनी औलाद को बुरे हाल में पाऊँ। ऐ अल्लाह! जब मैं वापस आऊँ तो ये सब मुझे अच्छी हालत में दिखाई दें।

इस दुआ़ की कामिलिय्यत

बताइये! क्या कोई शख़्स ऐसी दुआ़एँ माँगेगा? किसी के ख़्याल में यह बात आ सकती है कि वह मुसाफ़िर होने की हालत में अल्लाह तआ़ला से ये दुआ़एँ माँगे? मुसाफ़िर की जितनी ज़रूरतें हो सकती हैं वे सब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन दुआओं में जमा फ़रमा दीं। "अल्लाहु अकबर" के ज़रिये सफ़र की शुरुआ़त की। जब सवारी पर बैठे तोः

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून।

वाली दुआ़ पढ़ी और अपने आपको और अपने घर वालों को अल्लाह के हवाले कर दिया और यह दुआ़ कर ली कि ऐ अल्लाह! हर तरह की मशक़्क़त और मुसीबत से बचाइयेगा और ख़ैर व आ़फ़ियत से वापस लाइयेगा। ये दुआ़एँ करने के बाद सफ़र शुरू किया जिसका मतलब यह है कि उसने अपने आपको अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया।

नई बस्ती से गुज़रते वक़्त की दुआ

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब आप सफ़र के दौरान किसी नई बस्ती से गुज़रते तो उस मौक़े पर यह दुआ फ़रमातेः

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़िहिल् कर्-यति व ख़ै-र अह्लिहा व ख़ै-र मा फ़ीहा। व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि अह्लिहा व शर्रि मा फ़ीहा।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जिस बस्ती से मैं गुज़र रहा हूँ इस बस्ती की भलाईयाँ अ़ता फ़रमाइये और इस बस्ती के जो अच्छे लोग हों उनसे वास्ता डालिये और इस बस्ती में जितनी अच्छाईयाँ हैं उनसे मेरा वास्ता पड़े। और ऐ अल्लाह! मैं इस बस्ती के शर (बुराई) से पनाह माँगता हूँ और इस बस्ती में रहने वाले बुरे लोगों से और इस बस्ती में जो बुराईयाँ हैं, उनसे पनाह माँगता हूँ, उनसे मुझे बचाइयेगा।

यह दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस समय पढ़ते जब किसी नई बस्ती से गुज़रते, वहाँ ठहरने का इरादा हो या न हो।

किसी बस्ती में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

और अगर किसी बस्ती में ठहरने का इरादा हो तो उस बस्ती में दाख़िल होने से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमातेः

अल्लाहुम्-म हब्बिब्ना इला अह्लिहा व हब्बिब् सालिही-अह्लिहा इलैना।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमें इन बस्ती वालों की नज़र में महबूब बना दीजिए। यानी ऐसा बना दीजिए कि ये हमसे मुहब्बत करें और इस बस्ती के जो नेक लोग हैं उनकी मुहब्बत हमारे दिल में पैदा कर दीजिए।

पहले जुमले में तो यह फ़रमाया कि इस बस्ती के सारे बाशिन्दों (वासियों) के दिल में हमारी मुहब्बत पैदा कर दीजिए चाहे वे नेक हों या न हों। लेकिन दूसरे जुमले में यह फ़रमाया कि इस बस्ती के जो अच्छे और नेक लोग हों उनकी मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा कर दीजिए। क्योंकि जब आदमी किसी नई बस्ती में दाख़िल होता है तो वहाँ पर अपने

आपको अजनबी महसूस करता है कि मालूम नहीं कौनसा शख़्स मेरे साथ क्या मामला करे। इसलिए दुआ कर ली कि ऐ अल्लाह! हमारी मुहब्बत उनके दिलों में डाल दीजिए और उनके नेक लोगों की मुहब्बत हमारे दिल में आ जाए। यह दुआ करने के बाद बस्ती में दाख़िल होते और वहाँ ठहरते। अल्लाह तआ़ला इन दुआओं की बरकत से उनके हर सफ़र को कामयाब बना देते थे।

ख़ुलासा

बहरहाल! ये चन्द दुआएँ हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सफ़र की हालत में माँगा करते थे। हर मुसलमान को इनके पढ़ने की आ़दत डाल लेनी चाहिये और यह दर हक़ीक़त मुसलमान और काफ़िर में एक बहुत बड़ा फ़र्क़ है कि काफ़िर भी सवार होता है और मोमिन भी सवार होता है, लेकिन काफ़िर ग़फ़लत की हालत में सवार होता है और उसका ध्यान अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की तरफ़ नहीं होता, जबकि मोमिन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान के साथ, उसके ज़िक्र के साथ, उसके शुक्र के साथ और उसकी नेमतों के एतिराफ़ (तस्लीम करने और इक़रार) के साथ सवार होता है। इसके नतीजे में उसका पूरा सफ़र इबादत बन जाता है। अल्लाह तआ़ला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

क़ुरबानी के वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

(سورة الانعام آيت ١٦٢)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

दो बड़ी इबादतें

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! अल्लाह तआ़ला का बड़ा इनाम व करम है कि पिछले हफ़्ते मुसलमान दो अज़ीम (बड़ी और अहम) इबादतों की अदायगी से फ़ारिग़ हुए। एक हज की इबादत से जिसमें लाखों मुसलमानों ने हिस्सा लिया और दूसरी कुरबानी की इबादत से। अल्लाह का शुक्र है कि लाखों मुसलमानों ने यह इबादत अन्जाम दी। ये दोनों इबादतें ऐसी हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों को इन्हीं दिनों के साथ ख़ास (विशेष) कर दिया है। इन दिनों के अ़लावा दूसरे दिनों में ये इबादतें अन्जाम नहीं दी जा सकतीं। इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला यह बतलाना

चाहते हैं कि किसी भी अ़मल में अपनी ज़ात में कोई शर्फ़ और फ़ज़ीलत (बड़ाई और सम्मान) नहीं बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का हुक्म है जो किसी अ़मल को पसन्दीदा और अज्र व सवाब का सबब बना देता है।

कुरबानी के वक़्त यह दुआ पढ़ें

रिवायत में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब कुरबानी की इबादत अन्जाम देते तो यह दुआ फ़रमाते:

इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन। अल्लाहुम्-म मिन्-क व ल-क।

कुरबानी के वक़्त जो कलिमात आपने इरशाद फ़रमाए उनमें बड़ा अ़ज़ीम सबक़ है। इन कलिमात का तर्जुमा यह है कि "मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी व इबादात और मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है जो रब्बुल-आ़लमीन (तमाम जहानों के पालनहार) हैं। ऐ अल्लाह! यह कुरबानी जो मैं आपकी बारगाह में पेश कर रहा हूँ यह जानवर भी आप ही ने मुझे अ़ता फ़रमाया था और इस जानवर को आप ही की बारगाह में मुझे पेश करने की सआ़दत (सौभाग्य) हासिल हो रही है।"

इन कलिमात के ज़रिये यह बतलाना मक़सूद है कि कोई भी इबादत हो, चाहे वह नमाज़ हो चाहे वह रोज़ा हो, चाहे वह सदक़ा व ख़ैरात हो, चाहे वह हज हो और चाहे वह कुरबानी हो, जब तक उस इबादत से मक़सूद (उद्देश्य) अल्लाह तआ़ला को राज़ी करना नहीं है उस समय तक उस इबादत की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं। अगर कोई आदमी इबादत करे लेकिन उसका मक़सद अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के बजाए मख़्लूक़ को राज़ी करना हो, दिखावा या नाम-नमूद और शोहरत मक़सूद हो तो फिर उस इबादत की कोई क़द्र व क़ीमत बाक़ी नहीं रहती। आमाल के अन्दर जो वज़न पैदा होता है वह इख़्लास से होता है। जितना ज़्यादा इख़्लास होगा वह अ़मल अल्लाह तआ़ला के यहाँ उतना ही मक़बूल होगा और उस पर अज्र व सवाब होगा।

लफ़्ज़ "नुसुक" की कामिलिय्यत

इस दुआ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "नुसुक" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है। यह शब्द अ़रबी ज़बान में तीन मायनों के लिए आता है। नुसुक के एक मायने कुरबानी के हैं और हज के अरकान को भी नुसुक कहा जाता है, यह दूसरे मायने हैं। और लफ़्ज़ नुसुक हर तरह की इबादत पर भी बोला जाता है, यह तीसरे मायने हैं। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया वह सिर्फ़ कुरबानी के लिए ख़ास नहीं बल्कि तमाम इबादतों के लिए जामे (जमा करने वाला और व्यापक) है।

मेरा जीना मरना अल्लाह तआ़ला के लिए है

यह बात तो हर मुसलमान को आसानी से समझ में आ जाती है कि जो भी इबादत हो वह अल्लाह तआ़ला के लिए होनी चाहिये। अगर कोई इबादत अल्लाह तआ़ला के लिए नहीं है तो उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसके साथ दो कलिमे और मिला दिये, वे यह हैं- "व मह़्या-य व मभाती" जिसके मायने यह हैं कि मेरा जीना और मरना भी अल्लाह तआ़ला ही के लिए है। अब सवाल यह है कि नमाज़ अल्लाह तआ़ला के लिए है, यह बात तो समझ में आ रही है, कुरबानी अल्लाह तआ़ला के लिए है, यह बात भी समझ में आ गई, और सारी इबादतें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, यह बात भी समझ में आ रही है, लेकिन "जीना" अल्लाह तआ़ला के लिए है और "मरना" अल्लाह तआ़ला के लिए है, इसका क्या मतलब है?

सब काम अल्लाह तआ़ला के लिए होने चाहियें

दर हक़ीक़त इसके ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक सबक़ दे दिया। वह यह कि एक मुसलमान की सुबह से लेकर शाम तक की ज़िन्दगी का हर काम हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ही के लिए होना चाहिये। चाहे वह देखने में दुनिया का काम नज़र आ रहा हो, चाहे वह देखने में अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों की तस्कीन का काम नज़र आ रहा

हो, लेकिन एक मोमिन के वे सब काम अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर होने चाहियें।

मोमिन और काफ़िर में फ़र्क़

और इसके ज़रिये यह बतला दिया कि एक मोमिन की ज़िन्दगी में और एक काफ़िर की ज़िन्दगी में बुनियादी फ़र्क़ यह है कि ये दोनों काम एक तरह के करते हैं। लेकिन मोमिन का मक़सद कुछ और है और काफ़िर का मक़सद कुछ और है। जैसे आदमी जब सुबह को उठता है, तो कुछ खाता पीता है और फिर रोज़ी कमाने के लिए बाहर निकलता है। अगर कोई मुलाज़िम है तो वह मुलाज़मत (नौकरी) पर जाता है। अगर कोई तिजारत करने वाला (व्यापारी) है तो वह तिजारत के लिए जाता है। अगर कोई काश्तकार है तो वह काश्तकारी के लिए जाता है। हर शख़्स अपने-अपने काम के लिए निकलता है। यही मोमिन भी करता है और यही काफ़िर भी करता है। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस जुमले के ज़रिये इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि एक मोमिन का काम काफ़िर के काम से अलग तरह का होना चाहिये। काफ़िर का मक़सद सिर्फ़ यह होता है कि पेट का जहन्नम भर दिया जाए। पेट में जो भूख की आग लगी हुई है, उसको बुझा दिया जाए और बस। इस मक़सद के लिए वह खा-पी रहा है और रोज़ी कमाने के तरीक़े अपना रहा है, इससे आगे उसका कोई मक़सद नहीं है।

मोमिन शुक्र अदा करके खाता है

और एक मोमिन भी ये सब काम करता है। लेकिन पहली बात तो यह है कि वह अल्लाह तआ़ला के इनाम व करम और उसकी नेमतों का ध्यान करके खाता है कि मैं यह जो खाना खा रहा हूँ यह मेरी कुव्वते बाज़ू का करिश्मा नहीं है बल्कि यह खाना किसी खाना देने वाले की दैन और उसकी अ़ता है। फिर उस ज़ात का शुक्र अदा करके ख़ाता है। दूसरी बात यह है कि वह जो कुछ खाता है उसमें हलाल व हराम का फ़र्क़ करता है। क्या चीज़ मेरे लिए हलाल है और क्या चीज़ हराम है? यह

नहीं कि जो चीज़ ज़बान को अच्छी लगी उसको खाना शुरू कर दिया।

ये बदन के अंग अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत हैं

तीसरी बात यह है कि वह खाना भी इसलिए खाता है कि यह जान भी मेरी अपनी नहीं है बल्कि यह जान किसी और ज़ात की मिल्कियत है, जिसने यह फ़रमा दिया है कि:

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि

तर्जुमाः ज़मीन व आसमान में पाई जाने वाली तमाम चीज़ों का मालिक अल्लाह तआ़ला है। (सूरः ब-क़रह् आयत 284)

इसलिए हमारी जान भी उसी की मिल्कियत है। हम जो यह समझ रहे हैं कि ये हाथ हमारे हैं, ये पाँव हमारे हैं, ये आँखें हमारी हैं, ये कान हमारे हैं, हक़ीक़त में ये हमारे नहीं हैं, बल्कि ये अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत हैं। अलबत्ता यह उसका करम है कि उसने ये अंग फ़ायदा उठाने के लिए हमें अ़ता फ़रमा रखे हैं। और जब यह जान उसकी मिल्कियत है और उसने हमें फ़ायदा उठाने के लिए अ़ता फ़रमाई है तो इसके कुछ हुक़ूक़ भी हम पर रखे हैं।

जान का भी तुम पर हक़ है

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ऐ बन्दे! मैं तुझे यह जन्म दे रहा हूँ। यह जान दे रहा हूँ। अब इस जिस्म और जान की हिफ़ाज़त करना भी तेरा फ़रीज़ा है। मेरी तरफ़ से तुझ पर यह फ़रीज़ा आ़यद किया गया है कि इस जिस्म और जान की हिफ़ाज़त करना और इस जिस्म और जान की हिफ़ाज़त का एक हिस्सा यह भी है कि इसको ग़िज़ा (ख़ुराक) दे। अगर तू इसको ग़िज़ा नहीं देगा तो यह जिस्म काम करना छोड़ देगा और बेकार हो जाएगा और हलाक हो जाएगा। इसलिए जिस्म को ग़िज़ा देना भी अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ऐन मुताबिक़ है। इस बात को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन अलफ़ाज़ में इरशाद फ़रमायाः

व इन्-न लि-नफ़्सि-क अ़लै-क हक़्क़न्

यानी तुम्हारी जान का भी तुम पर हक़ है। वह हक़ यह है कि इस

जान को सेहतमन्द (स्वस्थ) रखने की कोशिश करो। यही वजह है कि अगर कोई शख़्स बिल्कुल खाना-पीना छोड़ दे और जान-बूझकर भूखा रहे तो उसके लिए ऐसा करना शरई एतिबार से गुनाह है। इसलिए कि यह जान अल्लाह तआला की अ़ता है और इस जान का हक़ है कि इसको गिज़ा (खुराक) दी जाए। अगर बिल्कुल भूखा रहेगा तो वह हक़ अदा नहीं होगा और गुनाह होगा।

भूख हड़ताल करना जायज़ नहीं

यही वजह है कि आजकल लोग जो भूख हड़ताल करते हैं और यह कहते हैं कि हम कुछ नहीं खाएँगे और कुछ नहीं पियेंगे। इसके बारे में दीन के आ़लिमों ने फ़रमाया कि शरई एतिबार से यह हड़ताल जायज़ नहीं। इसलिए कि यह जान अपनी मिल्कियत नहीं कि इसके साथ जो चाहो सुलूक करो। चाहो तो इसको भूखा मार दो। बल्कि यह जान अल्लाह तआ़ला की अ़ता है, इसका हक़ है कि इसको वक़्त पर खाना खिलाओ।

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का मामूल

जब नया-नया इस्लाम आया तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में इबादत करने का बड़ा जज़्बा था। चुनाँचे हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपना यह मामूल (तरीक़ा और नियम) बना लिया कि दिन भर रोज़े से रहते थे और रात भर तहज्जुद पढ़ते थे। दिन में खाते नहीं थे और रात को सोते नहीं थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब मालूम हुआ तो आपने उनको तंबीह फ़रमाई कि यह ठीक नहीं। इस मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

तर्जुमाः तुम्हारे नफ़्स का भी तुम पर हक़ है, और तुम्हारी आँख का भी तुम पर हक़ है, और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है, और तुम्हारे पास आने वाले मेहमानों का भी तुम पर हक़ है। मोमिन सारे हुक़ूक़ को एक साथ अदा करता है। यह नहीं करता कि एक तरफ़ को झुक गया और दूसरों के हुक़ूक़ ज़ाया कर दिये। (अबू दाऊद शरीफ़)

इसलिए रोज़ाना पूरे साल रोज़ा रखना मक्रूह है, पसन्दीदा नहीं।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे मना फ़रमाया है, क्योंकि इसके नतीजे में नफ़्स का हक़ ख़त्म हो रहा है।

जान की हिफ़ाज़त हमारी ज़िम्मेदारी है

इसलिए एक मोमिन अगर खाना खाता है तो वह दर असल इसलिए खाता है कि अल्लाह तआला ने उसको हुक्म दिया है कि अपने इस नफ़्स की हिफ़ाज़त करो। अगर कोई शख़्स ऐसा काम करे जो साफ़ तौर पर सेहत के लिए नुक़सान देने वाला (हानिकारक) हो और जिसके नतीजे में बीमार पड़ने का ग़ालिब गुमान हो तो ऐसा करना शरअन भी जायज़ नहीं। इसलिए कि यह जान अपनी नहीं है बल्कि अल्लाह तआला की अता है। जब तक उसने यह जान हमें दी हुई है उस समय तक इसकी सुरक्षा हमारे ज़िम्मे ज़रूरी है।

मोमिन सब काम अल्लाह तआला के लिए करता है

इसलिए अगर मोमिन खाना खा रहा है तो वह हक़ीक़त में अपने नफ़्स का हक़ अदा करने के लिए खा रहा है। और अल्लाह तआला की नेमत का ध्यान करके शुक्र अदा करके खा रहा है और हलाल व हराम की तमीज़ करके खा रहा है। इन तीन बातों की वजह से इस मोमिन का खाना भी अल्लाह तआला के लिए है और इबादत है। अगर मोमिन रोज़ी कमाने के लिए जा रहा है तो वह बज़ाहिर दुनियादारी का काम है लेकिन एक मोमिन के रोज़ी कमाने में और एक काफ़िर के रोज़ी कमाने मे यही फ़र्क़ है। एक मोमिन जो रोज़ी कमाता है तो इस नीयत के साथ कमाता है कि अल्लाह तआला ने मेरे ज़िम्मे मेरे नफ़्स के हुक़ूक़ भी रखे हैं। मेरी बीवी के मेरे बच्चों के मेरे ज़िम्मे हुक़ूक़ रखे हैं। इन सब के हुक़ूक़ अदा करने के लिए मैं रोज़ी कमा रहा हूँ। और उसकी नीयत यह होती है कि हलाल व हराम की तमीज़ के साथ कमाऊँगा, जायज़ रोज़ी कमाऊँगा और नाजायज़ से परहेज़ करूँगा।

इस तरह एक मोमिन के सारे काम अल्लाह तआला के लिए हो सकते हैं और होने चाहियें। यहाँ तक कि अगर वह तफ़रीह कर रहा है

तो वह तफ़रीह भी अल्लाह तआला के लिए होनी चाहिये और यह नीयत करे कि मैं इसलिए तफ़रीह कर रहा हूँ ताकि मेरे जिस्म और ज़ेहन और दिल का हक़ अदा हो। इस नीयत से वह तफ़रीह भी अल्लाह तआला के लिए होगी। मोमिन का सोना भी अल्लाह तआला के लिए है। इसलिए कि वह सोते वक़्त यह नीयत करता है कि मैं इसलिए सो रहा हूँ कि यह मेरे नफ़्स का हक़ है और अल्लाह तआला का हुक्म है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है, और जायज़ तरीक़े से सो रहा हूँ। इस नीयत से यह सोना भी अल्लाह तआला के लिए हो गया।

यह एक नुस्ख़ा-ए-कीमिया है

बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कलिमा इरशाद फ़रमाया यह एक ऐसा नुस्ख़ा-ए-कीमिया है जो मोमिन की ज़िन्दगी के हर काम को ख़ालिस अल्लाह के लिए बनाने वाला है और इबादत क़रार देने वाला है। इसलिए फ़रमाया कि "मेरा जीना अल्लाह तआला के लिए है"।

मेरा मरना भी अल्लाह तआला के लिए है

आख़िर में फ़रमायाः

व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

तर्जुमाः मेरा मरना भी अल्लाह तआला के लिये है।

मरना अल्लाह तआला के लिए होने का मतलब यह है कि आदमी इस बात पर ईमान रखे कि जो वक़्त अल्लाह तआला ने मेरे लिए दुनिया से जाने का मुक़द्दर (तय) फ़रमा दिया है, वही वक़्त बर्हक़ है। मैं सही फ़ैसला नहीं कर सकता कि आज दुनिया से जाऊँ या कल जाऊँ या एक साल बाद जाऊँ या दस साल बाद जाऊँ। फ़ैसला उसी का है, उसी की मर्ज़ी है और उसी की हिक्मत है। और उस हिक्मत के तहत यह फ़ैसला होता है कि मुझे कब तक इस दुनिया में रहना है और कब इस दुनिया से जाना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाईः

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रखिये जब तक मेरा ज़िन्दा रहना आपके इल्म के मुताबिक़ मेरे हक़ में बेहतर हो। और जब

आपके इल्म के मुताबिक़ मेरा मरना बेहतर हो जाए तो मुझे मौत दे दीजिए।

आदमी अपनी तरफ़ से कोई फ़ैसला न करे।

खुदकुशी हराम क्यों है?

यही वजह है कि खुदकुशी करना हराम है, क्योंकि वह फ़ैसला जो अल्लाह तआ़ला को करना है कि तुम्हें कब इस दुनिया से जाना चाहिये, यह फ़ैसला तुम अपने हाथ में ले रहे हो। यह जान तुम्हारी अपनी मिल्कियत नहीं है कि इसके साथ जैसा चाहो सुलूक करो, बल्कि अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत है, जो उसने अ़ता की है। इसलिए इस जान की हिफ़ाज़त तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। यहाँ तक कि मौत की तमन्ना करना भी नाजायज़ है।

मौत की दुआ़ करना जायज़ नहीं

मौत की दुआ़ करना भी नाजायज़ है। चुनाँचे बहुत-से लोगों की ज़बान पर यह जुमला आ जाता है कि ऐ अल्लाह! मेरा हाल बहुत ख़राब है, मुझे मौत ही दे दे। अल्लाह अपनी पनाह में रखे। यह बड़ी ख़तरनाक बात है। अरे! तुम्हें क्या मालूम कि अगर इस समय तुम्हारी मौत आ जाए तो तुम्हारा क्या अन्जाम होगा? अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं कि तुम्हारे हक़ में कब तक ज़िन्दा रहना बेहतर है। अगर एक लम्हे के लिए या एक घन्टे के लिए मौत टल जाए तो क्या मालूम कि उस एक घन्टे में तुम्हें वह काम करने की तौफ़ीक़ हो जाए जो तुम्हारे सारे पिछले गुनाहों को धो दे और तुम्हारा बेड़ा पार कर दे। इसलिए मौत की तमन्ना मत करो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इससे मना फ़रमाया है।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बीमारी

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अ़न्हु मशहूर सहाबी हैं। वह एक बार सख़्त बीमार हो गये और इन्तिहाई शदीद तकलीफ़ में थे। कोई साहिब उनकी इयादत (बीमारी का हाल पूछने) के लिए गए तो हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनसे फ़रमाया कि आज मुझे

इतनी सख़्त तकलीफ़ है कि अगर मौत की तमन्ना करना जायज़ होता तो मैं मौत की तमन्ना करता। लेकिन चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत की तमन्ना करने से मना फ़रमाया है इसलिए मैं मौत की तमन्ना नहीं करता।

मौत की तमन्ना करना

मौत की तमन्ना करना इसलिए मना है कि तुम यह फ़ैसला करने वाले कौन हो कि तुम्हारे हक़ में जीना बेहतर है या मरना बेहतर है। यह अल्लाह तआला का फ़ैसला है। उसी के ऊपर यह फ़ैसला छोड़ दो और उसी से मदद माँगो। इस लिहाज़ से अगर देखा जाए तो मरना भी अल्लाह ही के लिए है। यह मायने हैं इस दुआ के कि:

इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती
लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

सुबह उठकर यह नीयत कर लो

इसलिए मेरे शेख़ हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहिब लोगों को यह नसीहत फ़रमाया करते थे कि देखो भाई! तुम्हें बड़ी काम की बात बताता हूँ कि सुबह को जब फ़ज्र की नमाज़ के लिए उठो तो फ़ज्र के बाद यह नीयत कर लो कि ऐ अल्लाह! आज सुबह से लेकर शाम तक की ज़िन्दगी में मैं जो काम करूँगा ऐ अल्लाह! आपके लिए करूँगा। खाऊँगा तो आपके लिए खाऊँगा, रोज़ी कमाऊँगा तो आपके लिए कमाऊँगा, सोऊँगा तो आपके लिए सोऊँगा, किसी से मुलाक़ात करूँगा तो आपके लिए करूँगा, किसी के साथ अच्छा सुलूक करूँगा तो आपके लिए करूँगा, इबादत करूँगा तो आपके लिए करूँगा। ऐ अल्लाह! मैं हर काम आपके लिए करूँगा और यह पढ़ो:

इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती
लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

सुबह के वक़्त अल्लाह तआला की बारगाह में यह गुज़ारिश पेश करो कि ऐ अल्लाह! मैं यह इरादा कर रहा हूँ कि जो कुछ काम करूँगा आपको

राज़ी करने के लिए करूँगा।

काम के शुरू में नीयत दुरुस्त कर लें

शरीअ़त का उसूल यह है कि जब आदमी किसी काम के शुरू में कोई नीयत कर लेता है तो काम के दौरान अगर ग़फ़लत हो जाए तो अल्लाह तआ़ला शुरू की नीयत को मोतबर मान लेते हैं। जैसे जब नमाज़ शुरू की तो उस वक़्त यह नीयत कर ली कि मैं यह नमाज़ अल्लाह तआ़ला के लिए पढ़ रहा हूँ और फिर "अल्लाहु अकबर" कहकर नीयत बाँध ली तो अब नमाज़ के दौरान इधर-उधर के ग़ैर-इख़्तियारी ख़्यालात आ रहे हैं। उस वक़्त यह ध्यान भी नहीं रहता कि यह नमाज़ अल्लाह तआ़ला के लिए पढ़ रहा हूँ। लेकिन अल्लाह तआ़ला की रहमत ऐसी है कि वह यह देखते हैं कि जब मेरे बन्दे ने नमाज़ के शुरू में यह नीयत कर ली थी कि मैं यह नमाज़ अल्लाह तआ़ला के लिए पढ़ रहा हूँ तो मैं उसकी पूरी नमाज़ को इबादत में लिखूँगा और उसको अपने लिए ही क़रार दूँगा। यह अल्लाह तआ़ला की रहमत है।

सुबह उठकर यह दुआ़ पढ़ लो

इसलिए जब सुबह उठकर तुमने यह नीयत कर ली कि आज के दिन मैं जितने काम करूँगा वे अल्लाह तआ़ला के लिए करूँगा। फिर दरमियान में अगर कुछ ग़फ़लत भी हो गई जैसे खाना खाते वक़्त इस नीयत का ख़्याल न आया तो अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि इन्शा-अल्लाह शुरू में की हुई नीयत यहाँ आकर लग जाएगी। इसी तरह जब रोज़ी कमाना शुरू की और इस नीयत का ख़्याल न आया तो वह सुबह के वक़्त की हुई नीयत यहाँ भी लग जाएगी। इस तरह दिन भर के जितने जायज़, और मुबाह (दुरुस्त, जो शरीअ़त की तरफ़ से मना किए हुए न हों) काम हैं, अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि इस नीयत के नतीजे में वे सब काम इबादत बन जाएँगे। इसलिए हमारे हज़रते वाला रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि रोज़ाना सुबह उठकर यह पढ़ लिया करोः

इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती
लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।

जो कुछ होगा ऐ अल्लाह! आपके लिए होगा। इस तरह तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी इबादत बन जाएगी। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे और आप सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

मुसीबत के वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ، اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ o (سورة المؤمن آيت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तम्हीद

मोहतरम बुजुर्गो और प्यारे भाईयो! पिछले लगभग एक साल से मस्नून दुआओं की तशरीह (तफ़सीर और व्याख्या) का सिलसिला चल रहा है। अब चन्द दुआएँ बाक़ी हैं, इन्शा-अल्लाह इनकी तशरीह करके इस सिलसिले को मुकम्मल करने का इरादा है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

दुनिया में कोई तकलीफ़ से ख़ाली नहीं

जब आदमी सुबह के वक़्त ज़िन्दगी के कारोबार में दाख़िल होता है तो वहाँ उसको हर तरह के हालात और वाक़िआ़त से वास्ता पेश आता है। कोई इनसान इस धरती पर ऐसा नहीं है जिसको इन हालात और

वाक़िआत से कभी भी तकलीफ़ न पहुँचती हो। बड़े से बड़ा सरमायेदार, बड़े से बड़ा दौलतमन्द, बड़े से बड़ा हाकिम, बड़े से बड़ा ओहदेदार और रुतबे वाला यह दावा नहीं कर सकता कि मुझे कभी कोई तकलीफ़ नहीं पहुँची। अगर इनसान है और वह इस दुनिया में है तो उसको कभी न कभी तकलीफ़ ज़रूर पहुँचेगी, इससे कोई बचा हुआ नहीं।

मोमिन और काफ़िर में फ़र्क़

लेकिन तकलीफ़ पहुँचने पर एक काफ़िर के रवैये में और एक मुसलमान के रवैये में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। जब काफ़िर को तकलीफ़ पहुँचती है तो वह उस तकलीफ़ का ज़बान से इज़हार करता है। कभी रोता-चिल्लाता है। कभी शिकायत करता है। कभी समय और तक़दीर का गिला करने लगता है और "ख़ुदा की पनाह" अल्लाह तआला से गिला व शिकवा करने लगता है।

तकलीफ़ के वक़्त की दुआ

मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मोमिन को यह तालीम फ़रमाई कि जब कभी तुम्हें कोई तकलीफ़ की बात पेश आए तो ये कलिमात पढ़ो:

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

और इसके बाद यह दुआ पढ़ो:

अल्लाहुम्-म इन्नी अह्तसिबु ल-क फ़ी मुसीबती व अजुरनी फ़ीहा व अब्दिल्नी ख़ैरम् मिन्हा

हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि तकलीफ़ पहुँचने का यह मतलब नहीं है कि कोई बड़ी मुसीबत आ जाए बल्कि अगर छोटी-सी तकलीफ़ पहुँचे तो भी यही हुक्म है। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आता है कि जब चिराग़ बुझ गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा।

"इन्ना लिल्लाहि" का मतलब

यह जुमला दर असल बड़ा अजीब जुमला है। अगर इनसान इस जुमले को सोच-समझकर ज़बान से अदा करे तो दुनिया की कोई मुसीबत और कोई तकलीफ़ ऐसी नहीं है जिस पर यह जुमला ठंडक न डाल देता हो। इस जुमले के मायने यह हैं कि "हम सब अल्लाह तआ़ला के हैं" यानी अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं, अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ हैं, अल्लाह तआ़ला ही की ममलूक (यानी उसी की मिल्कियत में) हैं, और हम सब अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं। और जब यह कहा "इन्ना लिल्लाहि" कि हम तो हैं ही अल्लाह के बन्दे, अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत हैं, अल्लाह तआ़ला ही हमारा ख़ालिक़ व मालिक है। इसलिए अगर हमें कोई तकलीफ़ पहुँची है तो यक़ीनन इसमें अल्लाह तआ़ला की हिक्मत है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला का कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं।

देखने में यूँ महसूस हो रहा है कि हमें तकलीफ़ पहुँची है, हमें परेशानी हुई है, लेकिन हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला की हिक्मत इसमें हावी है और यह काम उसकी हिक्मत के बग़ैर नहीं हो सकता। जो तसर्रुफ़ (अमल-दख़ल और कार्रवाई) हमारी ज़ात में चल रहा है, वह सब हिक्मत पर आधारित है और इस पर किसी को गिला-शिकवा करने का कोई मौक़ा नहीं।

"व इन्ना इलैहि राजिऊन" का मतलब

दूसरा जुमला है- **व इन्ना इलैहि राजिऊन**

तर्जुमाः और हम उसी की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं।

यानी यह तकलीफ़ जो पहुँची है, यह हमेशा रहने वाली नहीं। एक वक़्त आएगा कि हम भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ लौटकर जाएँगे। अगर हमने इस मुसीबत पर सब्र किया और इसको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से समझा तो इसके नतीजे में हमें अल्लाह तआ़ला के पास अज्र (बदला) हासिल होगा।

दूसरी दुआ का मतलब और तर्जुमा

इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फ़रमाईः

अल्लाहुम्-म इन्नी अह्तसिबु ल-क फ़ी मुसीबती व अजुरनी फ़ीहा व अब्दिल्नी ख़ैरम् मिन्हा

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इस मुसीबत में आपसे सवाब तलब करता हूँ। यानी यह तकलीफ़ जो मुझे पहुँची है आपकी रहमत से मुझे उम्मीद है कि इस मुसीबत के बदले में आप मुझे आख़िरत में सवाब अ़ता फ़रमाएँगे। इसलिए आप मुझे इस पर अज्र अ़ता फ़रमाइये।

पहले तो अल्लाह तआ़ला से यह दुआ कर ली कि ऐ अल्लाह! जो तकलीफ़ पहुँचनी थी वह पहुँच गई और चूँकि वह तकलीफ़ आपकी तरफ़ से आई है इसलिए मैं उस पर राज़ी हूँ। लेकिन साथ ही आपसे यह इल्तिजा (गुज़ारिश और दरख़्वास्त) है कि इस मुसीबत के बदले मुझे आख़िरत में अज्र अ़ता फ़रमाइये।

मुसीबत का बदला माँगिए

अब इस पर किसी को यह ख़्याल हो सकता था कि जब तुम मुसीबत पर राज़ी हो गये और अल्लाह तआ़ला से इस मुसीबत पर अज्र भी माँग रहे हो तो इसका मतलब यह है कि यह मुसीबत बाक़ी रहे। लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अगला जुमला इरशाद फ़रमाकर इस ख़्याल की तरदीद फ़रमा दी। चुनाँचे फ़रमाया कि यह कहो कि ऐ अल्लाह! मुझे इस मुसीबत के बदले कोई बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमा दीजिए। यानी मैं अगरचे आपके फ़ैसले पर राज़ी हूँ और आपके फ़ैसले पर मुझे कोई गिला-शिकवा नहीं है और न एतिराज़ है। लेकिन ऐ अल्लाह! मैं कमज़ोर हूँ। मैं मुसीबत को सहन नहीं कर सकता। इसलिए आप मेरी कमज़ोरी पर रहम फ़रमाइये और आप मुझसे यह मुसीबत दूर फ़रमा दीजिए और इसके बदले में मुझे अच्छी हालत अ़ता फ़रमा दीजिए।

मुसीबत दूर होने की दुआ कीजिए

इसलिए इस दुआ में एक तरफ़ तो जो मुसीबत और तकलीफ़ पहुँची है उस तकलीफ़ और मुसीबत पर गिला और शिकवा कोई नहीं, बल्कि अल्लाह तआला के फ़ैसले पर राज़ी होने का ऐलान है। दूसरी तरफ़ अपनी कमज़ोरी का एतिराफ़ (इक़रार) है कि ऐ अल्लाह! मेरे अन्दर इस मुसीबत और तकलीफ़ को बरदाश्त करने की ताक़त नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि अगर यह मुसीबत आगे भी जारी रहे तो मैं बेसब्री का शिकार हो जाऊँ। इसलिए ऐ अल्लाह! मैं आपसे दुआ यही करता हूँ कि मुझसे यह मुसीबत और तकलीफ़ दूर फ़रमा दीजिए। इस दुआ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दोनों चीज़ों को जमा फ़रमा दिया।

मेरे वालिद माजिद और बीमारी

मुझे याद है कि एक बार मेरे वालिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि सख़्त तकलीफ़ में मुब्तला थे। एक तरफ़ दिल की तकलीफ़, दूसरी तरफ़ बवासीर का फोड़ा निकल आया, तीसरी तरफ़ जिस्म पर हरपीज़ की फुन्सियाँ निकल आयी थीं जो बहुत ज़्यादा तकलीफ़देह होती हैं। डाक्टरों का कहना यह था कि इन फुन्सियों में ऐसी तकलीफ़ होती है जैसे किसी ने आग का अंगारा जिस्म पर रख दिया हो। इसी हालत में जवान बेटे के इन्तिक़ाल की ख़बर आ गई और बीमारी की वजह से बेटे के जनाज़े में भी शिरकत के लायक़ नहीं थे। इस हालत में ज़बान से यह कलिमा निकला: ऐ अल्लाह! रहम फ़रमा, ऐ अल्लाह! रहम फ़रमा, ऐ अल्लाह! रहम फ़रमा। फिर थोड़ी देर के बाद फ़रमाने लगे कि यह मैंने क्या जुमला ज़बान से निकाल दिया "ऐ अल्लाह! रहम फ़रमा" इस जुमले का कहीं यह मतलब न समझा जाए कि गोया अल्लाह तआ़ला अब तक रहम नहीं फ़रमा रहे थे। अरे! हम तो अल्लाह तआ़ला के रहम में जी रहे हैं। यह थोड़ी-सी तकलीफ़ ज़रूर है लेकिन अल्लाह तआ़ला की रहमत और फ़ज़्ल की हर समय बारिश हो रही है। इसलिए अब मैं यह दुआ करता हूँ कि ऐ अल्लाह! इस तकलीफ़ की नेमत को राहत की नेमत

से तब्दील फ़रमा दीजिए। यानी यह तकलीफ़ भी हक़ीक़त में अल्लाह तआला की नेमत है इसलिए कि इस तकलीफ़ पर अल्लाह तआला ने जो अज्र व सवाब रखा है वह बड़ा अज़ीमुश्शान है। इसलिए यह तकलीफ़ भी नेमत है। लेकिन हम अपनी कमज़ोरी की वजह से और अपने ज़ोअ़फ़ और कम-हिम्मती की वजह से इस नेमत को नेमत नहीं समझते। इसलिए ऐ अल्लाह! इस तकलीफ़ की नेमत को राहत की नेमत से बदल दीजिए।

ये तकलीफ़ें भी नेमत हैं

हक़ीक़त यह है कि इनसान को जितनी भी तकलीफ़ें पेश आती हैं, चाहे वह सदमा हो या रंज हो, कोई फ़िक्र हो, कोई चिन्ता हो, ये सब अल्लाह तआला की तरफ़ से नेमत हैं। इसलिए नेमत हैं कि अल्लाह तआला ने ये सब तकलीफ़ें अपनी हिक्मत से मोमिन के ऊपर डाली हैं और ये सब मोमिन के लिए सवाब और दरजों की तरक़्क़ी का ज़रिया बन रही हैं और गुनाहों की मग़फ़िरत का ज़रिया बन रही हैं। लेकिन हम अपनी कमज़ोरी की वजह से यह दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! इसके बजाए हमें राहत की नेमत अ़ता फ़रमाइये और उस पर शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाइये।

तकलीफ़ में अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में यही दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! इस मुसीबत के बदले इससे बेहतर कोई ऐसी चीज़ अ़ता फ़रमा दीजिए जिसको मैं बरदाश्त कर सकूँ और जो मेरी कमज़ोरी के मुताबिक़ हो। इसलिए जब भी इनसान को कोई सदमा, तकलीफ़, मुसीबत पेश आए तो फ़ौरन अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करे और यह कहे ऐ अल्लाह! यह मुसीबत पेश आ गई है, आप इस पर मुझे सवाब दीजिए और इसके बदले मुझे राहत अ़ता फ़रमा दीजिए। जब ये दो काम कर लिये तो वह मुसीबत भी अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्शा-अल्लाह तआला नेमत बन जाएगी और रहमत का ज़रिया बन जाएगी।

यह नुस्ख़ा देखने में बज़ाहिर छोटा-सा है लेकिन इस पर अ़मल करके

देखें। इसलिए छोटी से छोटी तकलीफ़ भी पहुँचे या छोटे से छोटा सदमा भी पेश आए, बस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करके यह बात कह दो। फिर देखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें कहाँ से कहाँ पहुँचाते हैं और कैसे तुम्हारे दर्जात में तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाते हैं। अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सोते वक़्त की दुआएँ
और वज़ीफ़े

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَ نَبِیَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

وَقَالَ رَبُّکُمُ ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ. (سورۃ المؤمن آیت ٦٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلَانَا الْعَظِیْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُہُ النَّبِیُّ الْکَرِیْمُ، وَنَحْنُ عَلٰی ذٰلِکَ مِنَ الشَّاھِدِیْنَ وَالشَّاکِرِیْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ○

तम्हीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! कुछ अर्से से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बयान फरमाई हुई दुआओं का बयान चल रहा है और उनमें से बहुत-सी दुआओं की तशरीह (तफ़सीर, व्याख्या) और वज़ाहत आप हज़रात के सामने पिछले बायानों में पेश की गई। आज यह इस सिलसिले की शायद आख़िरी कड़ी है और यह आख़िरी कड़ी उन दुआओं पर मुश्तमिल (आधारित) है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सोने से पहले पढ़ना साबित हैं। आज उनका थोड़ा-सा बयान

करना चाहता हूँ। अल्लाह तआला अपनी रिज़ा के मुताबिक़ बयान करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

सोने से पहले "इस्तिग़फ़ार"

यूँ तो सोने से पहले एक मुसलमान के लिए छोट-छोटे बहुत-से काम हैं जिनको अन्जाम देना बहुत मुनासिब और ज़रूरी है। पहली बात यह है कि जब आदमी रात को बिस्तर पर सोने के लिए जाता है तो एक दिन की तमाम कार्रवाईयों का समापन बिस्तर पर होता है। इस वजह से बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि रात को सोने से पहले मुनासिब यह है कि आदमी सारे दिन की कार्रवाईयों पर एक सरसरी नज़र डाल ले कि आज सुबह मैं सोकर उठा था। उस समय से लेकर सोने तक मैंने कितने काम किये। उनमें कितने काम अच्छे थे और कितने काम बुरे थे। और फिर संक्षिप तौर पर इनसान अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार कर ले- ऐ अल्लाह! मैंने आज का जो दिन गुज़ारा है इसमें न जाने मुझसे कितनी ग़लतियाँ हुई होंगी। न जाने कहाँ-कहाँ मेरे क़दम सही रास्ते से फिसले होंगे। कहाँ-कहाँ मेरी निगाह बहकी होगी। कहाँ-कहाँ मुझसे गुनाह हुआ होगा। ऐ अल्लाह! अब मैं दिन ख़त्म कर रहा हूँ। इस वक़्त मैं आपसे सारे दिन की ख़ताओं की माफ़ी माँगता हूँ।

अस्तग़फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिन् कुल्लि ज़बिंव्-व अतूबु इलैहि

अगला दिन मिले या न मिले

इसलिए रात को सोते समय दिन भर के गुनाहों से तौबा इस्तिग़फ़ार कर ले। इसलिए कि रात की नींद भी एक तरह की छोटी मौत है। आदमी दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेख़बर हो जाता है और न जाने कितने वाक़िआत पेश आते हैं कि आदमी रात को सोया और फिर बेदार न हुआ। इसलिए यह मालूम नहीं कि अगला दिन मिलता है या नहीं। अगले दिन के आने से पहले ही अपनी पिछली सारी ज़िन्दगी का हिसाब व किताब अल्लाह तआला की बारगाह में साफ़ कर ले और तौबा इस्तिग़फ़ार कर ले।

तौबा का मतलब

तौबा का मतलब यह है कि जितने गुनाह याद आ रहे हैं, उन पर शर्मिन्दगी का इज़हार करे और उनको आईन्दा न करने का इरादा कर ले और अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत (अपनी बख़्शिश) तलब करे। बस यह काम कर ले तो फिर अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि दिन भर की जितनी ग़लतियाँ और कोताहियाँ और गुनाह होंगे, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से माफ़ फ़रमा देंगे।

सोते वक़्त की दो दुआएँ

सोते वक़्त पहली दुआ जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है वह यह है:

अल्लाहुम्-म बि-इस्मि-क अह्या व बि-क अमूतु

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप ही के नाम से ज़िन्दा हूँ और आप ही के नाम से मरूँगा।

इसके बाद एक दूसरी दुआ सोने से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पढ़ना साबित है, वह बेहतरीन दुआ है, वह यह है:

अल्लाहुम्-म अन्-त ख़लक़्तनी व अन्-त तवफ़्फ़ाहा ल-क ममातुहा व मह्याहा इन् अह्यैतहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिही इबादकस्सालिही-न व इन् अमत्तहा फ़ग़फ़िर् लहा वर्हमूहा

यह लम्बी दुआ है। लेकिन मस्नून दुआओं की किताबों में लिखी हुई है। याद कर लेने से इन्शा-अल्लाह याद हो जाएगी। और जब तक इस दुआ के अ़रबी अलफ़ाज़ याद न हों उस वक़्त तक अपनी भाषा ही में यह दुआ माँग ली जाए इन्शा-अल्लाह इसका भी फ़ायदा होगा।

नेक बन्दों की तरह ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त

इस दुआ का तर्जुमा यह है कि ऐ अल्लाह! आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे मौत देंगे। यानी ज़िन्दगी भी आप ही के ज़रिये हासिल हुई और ज़िन्दगी का ख़ात्मा भी आप ही के ज़रिये होगा। मेरी ज़िन्दगी और मौत सब आपके हाथ में है। ऐ अल्लाह! अगर आप मुझे

दोबारा ज़िन्दा करें यानी सोने के बाद दोबारा उठना नसीब फ़रमाएँ तो फिर मेरी इस तरह हिफ़ाज़त करें जिस तरह आप अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करते हैं। यानी मैं सोने के लिए जा रहा हूँ, यह भी आरज़ी (अस्थाई) मौत है। कुछ पता नहीं कि दोबारा बेदार हूँगा या नहीं। लेकिन अगर आपने मुझे दोबारा ज़िन्दगी अता फ़रमाई तो वह ज़िन्दगी उसी समय फ़ायदेमन्द है, जब आप मुझे इस तरह अपनी हिफ़ाज़त मे ले लें जिस तरह आप अपने नेक बन्दों को हिफ़ाज़त में ले लेते हैं।

गुनाहगारों और बदकारों की हिफ़ाज़त क्यों?

क्योंकि हिफ़ाज़त तो कभी-कभी अल्लाह तआला गुनाहगारों और बदकारों की भी करते हैं। काफ़िरों और ग़ैर-मुस्लिमों की भी करते हैं। चुनाँचे इस हिफ़ाज़त की वजह से कभी-कभी शुब्हा होता है कि जो लोग काफ़िर हैं और गुनाहगार व बदकार हैं, वे दुनिया में ख़ूब फल-फूल रहे हैं। अगर उनको दुनिया में कोई ख़तरा पेश आता भी है तो वे उस ख़तरे से निकल आते हैं। बात दर असल यह है कि दुनिया एक ऐसी ज़ात का कारख़ाना है जो सब से ज़्यादा जानने वाला और हिक्मतों व मस्लेहतों का मालिक है। जिसका कहना यह है कि:

मा परवुरेम दुश्मन व मा मी कुशेम दोस्त
कस रा चरा व चूँ न रसद दर कज़ा-ए-मा

यानी कभी-कभी हम दुश्मन को पालते हैं और उसको परवान चढ़ाया जाता है और उसको ढील दी जाती है और दोस्त को मार दिया जाता है। हम जो करते हैं उसमें किसी को लब हिलाने की गुन्जाईश नहीं।

काफ़िरों को ढील दी जाती है

देखिए! बड़े-बड़े काफ़िर, फ़िरऔन, नमरूद, हामान, क़ारून जिन्होंने "अ-न व ला ग़ैरी" (यानी हम ही सब कुछ हैं हमारे अलावा कोई नहीं) के नारे लगाए लेकिन इसके बावजूद एक लम्बे समय तक अल्लाह तआला ने उनकी रस्सी छोड़े रखी और उनको ढील दी और उनकी हिफ़ाज़त करते रहे। जबकि दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला के पैग़म्बरों को आरों से

चिरवाया गया। लेकिन ये सब काम उन्हीं की हिक्मत से हो रहे हैं। दुश्मनों को एक समय तक ढील दी जाती है। जब वह वक़्त आ जाता है तो फिर अल्लाह तआला पकड़ लेते हैं। फ़िरऔन ने एक वक़्त तक ख़ुदाई के दावे किये, लोगों पर ज़ुल्म व सितम के शिकन्जे कसे, लेकिन आख़िरकार उसका यह अन्जाम हुआ कि समन्दर में ग़र्क़ हुआ।

अचानक उनकी पकड़ होगी

इसलिए हिफ़ाज़त तो इन काफ़िरों की भी हो रही है और दुश्मनों की भी हो रही है। चुनाँचे आज के हालात को देख लें कि किस तरह इस्लामी दुनिया गिरावट का शिकार है और इस्लाम के दुश्मनों ने बज़ाहिर ताक़त हासिल की हुई है और बरतरी हासिल किये हुए हैं, और उनकी हिफ़ाज़त की जा रही है। लेकिन यह हिफ़ाज़त एक समय तक होगी। जब अल्लाह तआला उनको पकड़ने का इरादा फ़रमाएँगे तो अचानक सख़्त गिरफ़्त में पकड़ लेंगे:

इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद (सूरः बुरूज)
तर्जुमाः यानी तेरे परवर्दिगार की गिरफ़्त बड़ी सख़्त है।

सामरी की परवरिश हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के ज़रिये

आपने सुना होगा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक "सामरी" जादूगर था जो काफ़िर था और जिसने एक बछड़ा बनाकर लोगों को कहा कि इसकी पूजा करो। इस "सामरी" की परवरिश का भी अजीब व ग़रीब वाक़िआ है। वह यह कि चूँकि यह भी बनी इस्राईल में से था और फ़िरऔन ने बनी इस्राईल में पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दे दिया था, इसलिए जब यह पैदा हुआ तो इसकी माँ ने भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ की तरह इसको ताबूत में रखकर दरिया में यह सोचकर डाल दिया था कि अगर इसकी ज़िन्दगी होगी तो बच जाएगा वरना कम से कम मेरी आँखों के सामने तो इसे क़त्ल नहीं किया जाएगा।

अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि

दरिया में एक ताबूत के अन्दर एक बच्चा है उसको निकालो और पहाड़ की चोटी पर जो ग़ार (खोह) है, उसके अन्दर रख दो। चुनाँचे हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उसको उठाकर ग़ार के अन्दर रख दिया और फिर उसकी इस तरह परवरिश की, रोज़ाना दूध और शहद लाकर उसको चटाया करते थे। उस "सामरी" का नाम भी मूसा था।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की परवरिश फ़िरऔ़न के ज़रिये

जिस मूसा की परवरिश हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने की वह इतना बड़ा बुतपरस्त निकला कि बनी इस्राईल के अन्दर बुतपरस्ती का बानी (बुनियाद डालने वाला, संस्थापाक) बन गया। जबकि दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की परवरिश अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न के ज़रिये कराई। फ़िरऔ़न के घर में जिस मूसा की परवरिश हुई वह पैग़म्बर बने और जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये जिस मूसा की परवरिश हुई वह काफ़िर और बुतपरस्त हुआ। यह दुनिया अल्लाह तआ़ला की हिक्मत और मर्ज़ी का कारख़ाना है, किसी इनसान की अ़क़्ल व समझ वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। इसी बात को एक अ़रबी शायर ने इस तरह बयान किया है कि:

व मूसल्लज़ी रब्बाहु जिब्राईलु काफ़िरुन्
व मूसल्लज़ी रब्बाहु फ़िरऔ़नु मुर्सलु

यानी वह मूसा जिसकी परवरिश जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने की वह काफ़िर निकला, और वह मूसा जिसकी परवरिश फ़िरऔ़न ने की वह रसूल बना।

यह अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और हिक्मत का कारख़ाना है।

सोते वक़्त हिफ़ाज़त की दुआ़ करना

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला की हिक्मत के मुताबिक़ हिफ़ाज़त तो काफ़िरों, बदकारों और गुनाहगारों की भी होती है। इसलिए सोते वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई कि:

ऐ अल्लाह! जब मैं नींद से जागूँ तो मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाइये। लेकिन

जैसे आप अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करते हैं उसी तरह हिफ़ाज़त फ़रमाइये।

यानी जब मैं सुबह को नींद से जागूँ और ज़िन्दगी के कारख़ाने में दाख़िल हूँ तो फिर मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाइये कि मेरे क़दम गुनाह की तरफ़ न बढ़ें और नाफ़रमानी की तरफ़ न बढ़ें, बल्कि आपकी इताअ़त (फ़रमाँबरदारी और हुक्म के पालन) की तरफ़ बढ़ें।

अगर मौत आ जाए तो बख़्शिश

आगे यह जुमला इरशाद फ़रमाया कि:

व इन् अमत्तहा फ़ग़फ़िर् लहा वर्हम्हा

यानी ऐ अल्लाह! अगर मेरे मुक़द्दर में यह है कि मैं इस नींद के बाद बेदार न हूँ बल्कि मुझे मौत देनी मक़सूद है तो ऐ अल्लाह! मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइये और मुझपर रहम फ़रमाइये। इसलिए रात को सोते समय ज़िन्दगी और मौत दोनों के बारे में यह दुआ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तालीम फ़रमाई। बताइये अगर इनसान की यह दुआ़ क़बूल हो जाए, यानी ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हिफ़ाज़त मिल जाए और मरने के बाद मग़फ़िरत और रहमत मिल जाए, तो उसको और क्या चाहिये।

सोते वक़्त के दूसरे वज़ीफ़े और दुआ़एँ

रिवायतों में आता है कि अगर इनसान रात को सोते वक़्त सूरः ब-क़रह् के आख़िरी रुकूअ़ और सूरः आलि इमरान के आख़िरी रुकूअ़ की तिलावत कर ले तो यह भी बड़ी फ़ज़ीलत की चीज़ है। इसके अ़लावा रात को सोते वक़्त सूरः मुल्क की तिलावत करना ऐसा अ़मल है जो इनसान को क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखता है। इसके अ़लावा तौबा व इस्तिग़फ़ार कर ले। और आख़िरी दुआ़ जिसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस दुआ़ के बाद और कोई बात ज़बान से न निकाले बल्कि दुआ़ के बाद फ़ौरन सो जाए। यह वह दुआ़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक सहाबी को तालीम फ़रमाई थी

कि जब तुम रात को सोते समय बिस्तर पर दाहिनी करवट पर लेटो तो उस समय यह दुआ पढ़ो:

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्लम्तु नफ़्सी इलै-क व वज्जह्तु वज्ही इलै-क व फ़व्वज़्तु अम्री इलै-क व अल्जअ्तु ज़ह्री इलै-क ला मल्ज-अ व ला मन्ज-अ मिन्-क इल्ला इलै-क। अल्लाहुम्-म आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्-त व बि-नबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्-त।

यानी ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान आपके हवाले कर दी और मैंने अपना चेहरा आपकी तरफ़ कर दिया और मैंने अपने सारे मामलात आपके सुपुर्द कर दिये। ऐ अल्लाह! मैंने अपनी पुश्त आपके आगे झुका दी। ऐ अल्लाह! मैं उस किताब पर ईमान लाया हूँ जो आपने नाज़िल की है। यानी कुरआन करीम, और जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आपने दुनिया में भेजे हैं, मैं उन पर ईमान लाता हूँ।

तमाम मामलात अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द

देखिए! इनसान के साथ हज़ारों हाजतें और हज़ारों ज़रूरतें लगी हुई हैं। चुनाँचे सोते वक़्त भी उसके दिमाग़ में यह ख़्यालात आते हैं कि कल को क्या होगा? किस तरह कमाऊँगा? पैसे कहाँ से आएँगे? बच्चों का क्या होगा? इस तरह के बहुत से ख़्यालात इनसान के दिल पर मुसल्लत होते हैं। लेकिन अब रात का समय है, सोने के लिए बिस्तर पर लेटा है, कुछ नहीं कर सकता, इसलिए इस समय यह दुआ कर लो कि ऐ अल्लाह! मैंने अपने सारे मामलात आपके सुपुर्द कर दिये। जो वाक़िआत मुझे कल पेश आने हैं, वे सब आपके सुपुर्द हैं। ऐ अल्लाह! उनमें आप मेरे लिए बेहतरी पैदा फ़रमा दीजिए।

जागने की हालत के आख़िरी अलफ़ाज़

आगे फ़रमाया कि:

ऐ अल्लाह! मैंने अपनी पुश्त आपके आगे झुका दी। ऐ अल्लाह! मैं उस किताब पर ईमान लाया हूँ जो आपने नाज़िल की है। यानी कुरआन करीम, और जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आपने दुनिया में भेजे

हैं, मैं उन पर ईमान लाता हूँ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ये अलफ़ाज़ तुम्हारी बेदारी (जागने की हालत) के आख़िरी अलफ़ाज़ होने चाहियें। इसके बाद सो जाओ और ज़बान से कोई बात न निकालो तो इसके नतीजे में इन्शा-अल्लाह यह सारी नींद भी नूर और इबादत बन जाएगी। और अगर इस हालत में मौत आ गई तो इन्शा-अल्लाह! अल्लाह तआला सीधे जन्नत में ले जाएँगे।

अगर नींद न आए तो यह पढ़े

अगर आदमी सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया और उसको नींद नहीं आ रही है तो उस मौके पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फ़रमाई:

अल्लाहुम्-म ग़ारतिन्नुजूमु व ह-द-अतिल् उयूनु अन्-त हय्युन् कय्यूमुन् ला तअ्खुज़ु-क सि-नतुंव्-व ला नौमुन्। या हय्यु या कय्यूमु इह्दी लैली व अनिम् ऐनी।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! सितारे छुप गए और आँखें पुरसुकून हो गईं। आप हय्यु व क़य्यूम हैं। आपको न ऊँघ आती है न नींद। ऐ हय्यु व क़य्यूम! मेरी रात को पुरसुकून बना दीजिए और मेरी आँख को नींद अता फ़रमा दीजिए।

ये कलिमात पढ़ लोगे तो इन कलिमात की बरकत से अल्लाह तआला शैतानों के शर (बुराई) से महफ़ूज़ फ़रमाएँगे।

बहरहाल! ये चन्द आमाल और चन्द दुआएँ सोते वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल की गयी हैं। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हम सबको इन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

आख़िरी बात

हदीसों में बयान की गयी मस्नून दुआओं का जो बयान काफ़ी अर्से से चल रहा है, अब मैं इसको ख़त्म करता हूँ। अगर अल्लाह तआला ने

ज़िन्दगी दी तो अब दूसरे विषयों पर बयान करूँगा। खुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह से लेकर शाम तक की ज़िन्दगी में क़दम-क़दम पर हमारा रिश्ता अल्लाह तआला के साथ जोड़ने के लिए और अल्लाह तआला से राब्ता मज़बूत करने के लिए ये मस्नून दुआएँ तालीम फ़रमाईं। इनमें से हर-हर दुआ ऐसी है कि अगर वह अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल हो जाए तो दुनिया व आख़िरत में इनसान का बेड़ा पार हो जाए। इसलिए हर मुसलमान को इन दुआओं का एहतिमाम (पाबन्दी) करना चाहिये और इनको याद करने की फ़िक्र करनी चाहिये और सही समय पर इन दुआओं को ध्यान के साथ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिये। इसके नतीजे में अल्लाह तआला से ताल्लुक़ मज़बूत होगा। अल्लाह तआला हम सबको इन दुआओं के पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ